वसुधैव कुटुम्बकम्
पूरा विश्व एक परिवार है

ज्ञान पुष्प

16वाँ अंक

वार्षिक पत्रिका 2024-25

ज्ञान महाविद्यालय
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।।
रघु परिसर
अलीगढ़

ज्ञान महाविद्यालय

अलीगढ़-202002 (उ.प्र.)

सहयोगी संस्थान

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.)

(एन.सी.वी.टी. व श्रम मंत्रालय, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त)

आगरा रोड, अलीगढ़-202002 (उ.प्र.) मो. 9219419446 ई-मेल gyanitc@hotmail.com

ट्रेड : इलैक्ट्रीशियन एवं फिटर

★ ★ ★ ★ **Rated by Care Rating Pvt. Ltd.**

कौशल दीक्षान्त समारोह

टैबलेट वितरण समारोह

टैबलेट वितरण समारोह

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.) के चेयरमैन, निदेशक, प्रधानाचार्य एवं स्टाफ

एक्सपोजर विजिट

सहयोगी संस्थान

ज्ञान दीप निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.)

(एन.सी.वी.टी. व श्रम मंत्रालय, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त)

रुहेरी, अलीगढ़ रोड, हाथरस-204101 (उ.प्र.)

9927091830, 9520513007 gyanitc@hotmail.com

ज्ञान पुष्प

2024-25

अंक-16

संरक्षिका

श्रीमती आशा देवी
अध्यक्षा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री दीपक गोयल
चेयरमैन

मार्गदर्शक

डॉ. वाई.के. गुप्ता
प्राचार्य

श्री मनोज यादव
प्रबन्धक

श्री नरेन्द्र कुमार गौतम
मुख्य अधिशासी अधिकारी

डॉ. ललित उपाध्याय
अधिशासी अधिकारी

मुख्य संपादक

आचार्य जय प्रकाश शर्मा
प्रवक्ता, डी.एल.एड. विभाग

संपादक मंडल

श्री गिर्राज किशोर
डॉ. चेतन सैनी

डॉ. बीना अग्रवाल
डॉ. किरन लता

श्री ललित कुमार
श्री राम बाबू लाल

ज्ञान महाविद्यालय

'NAAC' से मान्यता प्राप्त

आगरा रोड, अलीगढ़-202002 (उ.प्र.)
(राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से सम्बद्ध)

9219419405 gyanmv@gmail.com
www.gyan mahavidhyalaya.com gyanparivar

माँ सरस्वती वन्दना

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

श्रीमती आशा देवी	अध्यक्ष
श्री अवि प्रकाश मित्तल	उपाध्यक्ष
श्री दीपक गोयल	सचिव
श्री असलूब अहमद	कोषाध्यक्ष
डॉ. मधु गर्ग	सदस्य
श्री अनिल खण्डेलवाल	सदस्य
श्री इन्द्रेश कौशिक	सदस्य

सरस्वती भवन

प्रेरणा पुंज

संस्थापक

स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल

11-09-1923 – 11-06-2002

समाज सेविका

स्व. श्रीमती स्वराज्य लता गोयल

22-09-1927 – 20-10-2011

श्रद्धा-सुमन

जन्म लिया मवाना में, माँ-बाप को तार दिया।
माँ के आँचल में पलकर, जग में रोशन नाम किया।
माँ की ममता सर्वोपरि, कर दिया सब कुछ न्यौछावर।
दिखायी नयी राह बच्चों को, दीपक को प्रफुल्लित किया।।
खुद को काँटों में बिछाया, काटा जीवन संघर्ष से।।
अपनी कल्पना की कलम से, हृदय मर्म को उकेर दिया
नींव रखी ज्ञान महाविद्यालय की, पहचान बनायी समाज में,
प्रेरणा देकर पत्नी को, राह दिखायी सशक्तीकरण की।।
पूजनीय हैं आप। शत-शत नमन आपको।
शत-शत नमन आपको।।

रचयिता
डॉ. बीना अग्रवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027

24 दिसम्बर, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा जनवरी, 2025 में वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' का प्रकाशन किया जा रहा है ।

महाविद्यालय की पत्रिका का उद्देश्य छात्र–छात्राओं की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को प्रकाशित कर उनकी प्रतिभा को निखारना है। मैं आशा करती हूँ कि प्रकाश्य पत्रिका में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की ऐसी मौलिक रचनाओं का समावेश किया जायेगा, जो निश्चय ही पाठकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होंगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

PROF. NARENDRA BAHADUR SINGH
Vice Chancellor
Raja Mahendra Pratap Singh University
Aligarh-202140
Mob No- +918707055984

Office:-
Raja Mahendra Pratap Singh University,
Palwal Road, Lodha, Aligarh-202001, U.P.
Email-vc.rmpssu@gmail.com

दिनांक 28 जनवरी 2025

शुभकामना संदेश

हर्ष का विषय है कि पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ अपनी वार्षिक पत्रिका **''ज्ञान पुष्प''** का प्रकाशन कर रहा है। इस महाविद्यालय में विभिन्न कक्षाओं के औपचारिक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ समाज हित में अनेक सामाजिक गतिविधियों का संचालन भी किया जाता है, जो दूसरे महाविद्यालयों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

''वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना से ओत–प्रोत वार्षिक पत्रिका के इस विशेषांक के सफल संपादन के लिए मैं महाविद्यालय की प्रबंध समिति तथा संपादक मण्डल के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ पाठकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

(प्रो० नरेन्द्र बहादुर सिंह)
कुलपति

शुभकामना सन्देश

आशा देवी

अध्यक्षा
ज्ञान महाविद्यालय सोसाइटी

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका का यह विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है। यह वार्षिक पत्रिका न केवल हमारे महाविद्यालय की शैक्षिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का दर्पण है बल्कि हमारे विद्यार्थी और शिक्षकों की रचनात्मकता, ज्ञान और उत्साह का प्रतिबिंब है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है बल्कि यह विकास, चरित्र निर्माण और समाज के प्रति सेवा उत्पन्न करने का माध्यम भी है। मुझे गर्व है कि हमारे महाविद्यालय में इन मूल्यों को आत्मसात् करते हुए उत्कृष्टता की ओर कदम बढ़ाए हैं।

पहल कार्यक्रम में दिसम्बर के माह में विद्यार्थी एवं शिक्षकों के घरों में आवश्यकता से अधिक कपड़ों को महाविद्यालय में सामाजिक सरोकार के सदस्य एकत्र कर जनवरी के प्रारम्भ में उनको ईंटों के भट्टों पर कार्यरत मजदूरों के मध्य जाकर वितरित करते हैं, जिससे उन मजदूरों के चेहरों पर प्रसन्नता झलक जाती है। यह एक सराहनीय कार्य है।

इस पत्रिका के माध्यम से हमारे विद्याथियों को अपने विचार और प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने का जो मंच मिला है, वह उन्हें सृजनात्मकता और आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

मैं सभी विद्यार्थी, संकाय के सदस्य और सम्पादक मण्डल के सदस्यों को इस वार्षिक पत्रिका की सफलता के लिए बधाई देती हूँ। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि आप सभी महाविद्यालय को नयी ऊँचाईयों तक पहुँचाने में अपना योगदान देते रहे।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य और महाविद्यालय की सतत् प्रगति के लिए मेरी अनंत/असीमित शुभकामनाएँ।

श्रीमती आशा देवी

दीपक गोयल

चेयरमैन
ज्ञान महाविद्यालय सोसाइटी

ज्ञान महाविद्यालय के 26 वर्ष के सफर में महाविद्यालय की विख्यात और गुणवत्ता से पूर्ण **'ज्ञान पुष्प'** के 16वें अंक का प्रकाशन होने पर आनंद की अनुभूति हो रही है। इस वर्ष ज्ञान पुष्प पत्रिका का प्रकाशन **''वसुधैव कुटुंबकम्''** पर आधारित है, जिसका अर्थ है "पूरा विश्व एक परिवार है"। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मुख्य संपादक और संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

वर्तमान समय में ज्ञान महाविद्यालय अपनी प्रबंध समिति, शिक्षक–शिक्षिकाओं और शिक्षणेत्तर व्यक्तियों के अथक प्रयासों से शिक्षा जगत में ज्ञान की ज्योति जला रहा है और अपने छात्र व छात्राओं के माध्यम से देश–विदेश में अपना प्रकाश फैला रहा है। महाविद्यालय अपने उद्देश्य "Center for Excellence" के लिए हमेशा उत्साहित रहता है और शिक्षा जगत के हर पहलू पर अग्रणी भूमिका अदा करता है। इस वर्ष महाविद्यालय ने सामाजिक सरोकार के अंतर्गत सैकड़ों छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रथम सेमेस्टर में एडमिशन लेने पर 50 प्रतिशत छात्रवृत्ति प्रदान की, डी.जी. शक्ति योजना के अंतर्गत छात्र व छात्राओं को मोबाइल और टैबलेट वितरित किए गए, निबंध प्रतियोगिता, ज्ञान ज्योति कार्यक्रम, पहल कार्यक्रम, वाद–विवाद प्रतियोगिता, इंडक्शन कार्यक्रम, संस्थापक दिवस, कवि सम्मेलन जैसे अनेक कार्यक्रम आयोजित करके महाविद्यालय छात्र व छात्राओं की दक्षता बढ़ाने का कार्य कर रहा है। महाविद्यालय में समय–समय पर विभिन्न कार्यशाला और सेमिनार आयोजित कराए जाते हैं, जिससे शिक्षा में निरंतर गुणवत्ता बनी रहे। हमारे यहाँ भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित कराए जाते हैं, जिससे छात्र व छात्रा अपनी संस्कृति से जुड़े रहें।

जिस तरह से **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** का अर्थ दुनिया एक परिवार है" उसी तरह से ज्ञान महाविद्यालय का वास्तविक अर्थ **''ज्ञान परिवार''** है। मैं ज्ञान परिवार के सभी सदस्यों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

दीपक गोयल, सचिव

संजीव रंजन

आई.ए.एस.

कलेक्टर/जिला मजिस्ट्रेट

अलीगढ़

अ.शा.पत्र संख्या 1340/एस.टी./

कार्यालय : 2400202 फैक्स: 2407555

आवास : 2400798 2400799

दिनांक : 28-01-2025

शुभकामना संदेश

यह जानकर मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ अपनी वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' के सोलहवें संस्करण को प्रकाशित करने जा रहा है।

ज्ञान महाविद्यालय जहां एक ओर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने में सहयोग कर रहा है। वहीं सामाजिक सरोकार के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से स्वीप के अंतर्गत मतदान जागरूकता आदि सामाजिक कार्य भी संचालित कर रहा है।

मैं वसुधैव कुटुम्बकम् को समाहित किए हुए यह विशेषांक युवा पाठकों के मन में सौहार्द एवं भाईचारे की भावना का विस्तार करेगा ''ज्ञान पुष्प'' पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्य, समस्त प्रधानाध्यापक, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व विद्यार्थियों के साथ प्रबंध समिति, संपादक मंडल को शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

भवनिष्ठ

Sanjiv

(संजीव रंजन)

संजीव सुमन
आई०पी०एस०

अर्द्धशा0 पत्र सं0 एसटी–एसएसपी–92/2024/1896

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,
अलीगढ़।
दिनाँकः दिसम्बर 23, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि **ज्ञान महाविद्यालय,** अलीगढ़ द्वारा गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका **''ज्ञान पुष्प''** प्रकाशित की जा रही है। समाज के निर्माण में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है तथा युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान शिक्षा के माध्यम से प्रदान किये जाने में अहम् भूमिका है।

मुझे आशा है कि शिक्षक वर्ग अपने गुरूत्तर दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों की शिक्षा एवं ज्ञान प्रदान कर समाज एवं देश के विकास की ओर अग्रसर करते रहेंगे। वार्षिक ज्ञान पुष्प पत्रिका में छात्रों द्वारा अपने ज्ञान के आधार पर विभिन्न विषयों पर लेख आदि प्रकाशित करने से अन्य छात्र एवं पाठक लाभान्वित होंगे तथा छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

मैं वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभ–कामनायें प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि ज्ञान महाविद्यालय सभी छात्र–छात्रओं के लिये प्रेरणा श्रोत के रूप में कार्य करता रहेगा।

भवदीय,

(संजीव सुमन)

डा० वाई०के० गुप्ता
प्राचार्य
ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड
अलीगढ़

अनिल पाराशर
विधायक
75 कोल अलीगढ़
सदस्य : सार्वजनिक उपक्रम एवं
निगम संयुक्त समिति
विधानसभा, उ०प्र०

सदस्य विधान सभा
उत्तर प्रदेश

आवास : 1/558 इन्द्रप्रस्थ कालोनी, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़
आवास लखनऊ : 301, नया विधायक आवास
दारूल सफा (दुर्गमा होटल) लखनऊ

क-6 №. 554010

8887150875, 9412275111
Email - anilparashar.bjp@gmail.com

दिनांकः– 21-12-2024

डा० वाई०के०गुप्ता
प्राचार्य,
ज्ञान महाविद्यालय आगरा रोड,
अलीगढ़

संदेश

अति हर्ष का विषय है कि आपका विद्यालय नैक द्वारा ग्रेड प्राप्त महाविद्यालय है, महाविद्यालय परिवार आगामी सत्र में वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' का विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रकाशन कराने जा रहा है। वार्षिक पत्रिका एक दर्पण है, जिसके परावर्तन से विद्यार्थियों का समग्र शैक्षणिक एवं चहुमुखी विकास होता है और विद्यार्थियों के अनोखे विचारों की आकर्षण व बहुमूल्य माला का रूप प्रकट होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने सम्पूर्ण उद्देश्यों को पूर्ण करते हुए महाविद्यालय परिवार को लाभान्वित करेगी।

इसी क्रम में विद्यालय परिवार के प्रबंधन, अध्यापकगण, विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करते हुए, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी के सामूहिक प्रयास से आपके सम्पूर्ण लक्ष्य पूरे होंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

Anil Parash

(अनिल पाराशर)
विधायक
कोल–अलीगढ़

मुक्ता संजीव राजा

विधायक

76-शहर विधानसभा

अलीगढ़

404, नवनिर्मित बहुमंजिला
भवन, दारूल सफा, लखनऊ

07839878476, 9058810035

muktaraja0571@gmail.com

30 दिसम्बर, 2024

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि ज्ञान महाविद्यालय द्वारा विगत् वर्षों की भांति इस शैक्षणिक सत्र में भी वार्षिक पत्रिका **"ज्ञान पुष्प"** का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें महाविद्यालय द्वारा शिक्षा जगत के साथ–साथ सामाजिक क्षेत्रों की गई विभिन्न गतिविधियाँ भी प्रकाशित होने जा रही हैं, जिससे छात्रों में एक नये ज्ञान का उद्‌भव होगा, जो कि समाज उत्थान के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

मैं, आपकी इस अलौकिक अभिव्यक्ति के सफलतम् संपादन हेतु महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों को हृदय से शुभकामनाऐं प्रेषित करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित्!

सेवा में,

डॉ0 वाई0के0 गुप्ता,
प्राचार्य,
ज्ञान महाविद्यालय,
आगरा रोड, अलीगढ़।

(मुक्ता संजीव राजा)

डॉ. वाई.के. गुप्ता
प्राचार्य

शुभकामना सन्देश

वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' का 16वाँ अंक जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विषय पर आधारित है, के प्रकाशन से मेरा अंतर्मन अतिशय रोमांच से प्रफुल्लित है। मैं इसलिये भी हर्षित हूँ क्योंकि सनातन परम्परा के अनुसार प्रत्येक 6 वर्ष बाद अर्द्धकुम्भ, प्रत्येक 12 वर्ष बाद कुम्भ एवं प्रत्येक 144 वर्ष बाद महाकुम्भ का पर्व मनाया जाता है, उत्तर प्रदेश के भक्तों के लिए यह अतिशय गौरव की बात है कि 144 वर्ष बाद पड़ने वाला महाकुम्भ प्रयागराज में मनाया जा रहा है, जो वसुधैव कटुम्बकम् की भावना से पूर्णतया ओतप्रोत है, जिसमें लगभग 40 करोड़ भक्तों द्वारा महास्नान तथा महामण्डलेश्वरों, नागा साधुओं एवं सन्तों द्वारा अमृत स्नान किया जायेगा।

इस महाकुंभ का दैवीय–आध्यात्मिक वातावरण सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इसके भव्य–दिव्य, अनुशासित, चमत्कारिक विराट आयोजन से विश्व अचम्भित है। इस महाविशाल अद्वितीय आयोजन ने विश्व में आयोजित होने वाले ओलम्पिक खेल एवं विश्व फुटबाल प्रतियोगिता को भी फीका कर दिया है। निश्चित ही इस महाविराट आयोजन से देश की अर्थव्यवस्था को भी नया बल मिलेगा।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'ज्ञान–पुष्प' महाविद्यालय की एक नैसर्गिक तस्वीर होने के साथ–साथ, महाविद्यालय द्वारा पूरे वर्ष में आयोजित गतिविधियों की झलकियों को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है, साथ ही यह पत्रिका विद्यार्थियों के मन में प्रस्फुलित होने वाले विचारों का एक दर्पण भी है। महाविद्यालय पत्रिका के माध्यम से ही हमें विद्यार्थियों के सृजनात्मक एवं रचनात्मक प्रतिभाओं के दर्शन होते हैं।

महाविद्यालय पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' का प्रकाशन महाविद्यालय परिवार के सामूहिक उद्यम का सुखद परिणाम होता है। इसके लिये प्रधान सम्पादक के साथ–साथ सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को मैं बधाई देता हूँ, जिनके अथक एवं सतत् प्रयास से यह कार्य सफलतापूर्वक अपनी पूर्णता को प्राप्त कर सका।

ज्ञान महाविद्यालय सोसाइटी की अध्यक्षा माननीया श्रीमती आशा देवी जी, सचिव माननीय श्री दीपक गोयल, निदेशक आई0टी0आई0 डॉ0 गौतम गोयल जी एवं प्रबन्धक श्री मनोज यादव जी द्वारा समय–समय पर दिये गये दिशा–निर्देशों से महाविद्यालय संचालन में सुगमता एवं मुझमें एक नयी ऊर्जा का संचार होता है, उसके लिये हृदयतल से सभी का आभार।

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ मण्डल में नयी ऊँचाईयों की ओर अग्रसर हो और इस संस्थान में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी अपनी खुशबू से देश एवं समाज को सुगन्धित करें, इसी मंगल कामना के साथ जय हिन्द जय भारत।

डॉ. वाई.के गुप्ता, प्राचार्य

आचार्य जय प्रकाश शर्मा
प्रवक्ता

मुख्य संपादक की लेखनी से

मुझे यह जानकर गौरव की अनुभूति हो रही है कि महाविद्यालय प्रबंधन ने मुझे लगातार दूसरी बार महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' के मुख्य संपादक की जिम्मेदारी दी है। मेरे सहयोगी संपादक मण्डल के सदस्यों ने इस महत्त्वपूर्ण कार्य में मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया है। यह सर्वविदित है, कि वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय का दर्पण होती है, इसका मुख्य उद्‌देश्य विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करना है।

ज्ञान ज्योति कार्यक्रम में, महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गाँव के जरूरतमंद लोगों को अपने घरों में दीवाली पर रोशनी करने का अवसर प्राप्त हो जाता है, साथ ही गाँव में स्थित महापुरुषों की मूर्ति स्थल एवं सरकारी भवन, जहाँ दीवाली पर्व पर अँधेरा मिलता है, वहाँ महाविद्यालय के विद्यार्थी दीपक जलाकर उस स्थान को रोशन करने का कार्य करते हैं जो कि सामाजिकता का प्रतीक होता है, वही हमारे वसुधैव कुटुम्बकम् को जोड़ता है।

वार्षिक पत्रिका के इस अंक में, विशेष रूप से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को बढ़ावा दिया गया है, इसलिए अधिकांश लेख तथा रचनाएँ इसी थीम के इर्द–गिर्द घूम रही हैं। बी0कॉम0 के छात्र "अंश" ने विश्वविद्यालय की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय अलीगढ़ के प्रथम दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति तथा कुलपति से स्वर्ण पदक प्राप्त कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है। मैं ज्ञान महाविद्यालय तथा सहयोगी संस्थान ज्ञान निजी आई0टी0आई0, अलीगढ़ और ज्ञान दीप आई0टी0आई0, रुहेरी, हाथरस के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के इस अंक में योगदान के लिए उनका आभारी हूँ, साथ ही उचित मार्गदर्शन के लिए प्रबन्धतंत्र की अध्यक्षा, चेयरमैन श्री दीपक गोयल एवं सभी मार्गदर्शकों का कृतज्ञ हूँ।

आचार्य जयप्रकाश शर्मा

College Toppers in University Exam

2023-24

Faculty of Commerce

Kanak
B.Com (I & II Sem.)

Vandini Tayal
B.Com (III & IV Sem.)

Ansh
B.Com (V & VI Sem.)
(Gold Medalist)

Monika Goswami
M.Com (I & II Sem.)

Yash Sharma
M.Com (III & IV Sem.)

Faculty of Science

Manshi Agrawal
B.Sc. (I & II Sem.) PCM

Vaishnavi Shrivastava
B.Sc. (III & IV Sem.) PCM

Kashish Saxena
B.Sc. (V & VI Sem.) PCM

David Chaudhary
M.Sc. (Final) Chem.

Palak
B.Sc. (I & II Sem.) ZBC

Priya Kant
B.Sc. (III & VI Sem.) ZBC

Aditya Kumar
B.Sc. (V & VI) ZBC

Ishka Saxena
M.Sc. Final (Math.)

Faculty of Arts

Prachi Kumari
B.A. (I & II Sem.)

Bhumika Varshney
B.A. (III & IV Sem.)

Shweta Yadav
B.A. (V & VI Sem.)

Faculty of Management & Computer Science

Vaibhav Vashishth
B.B.A., (I Sem.)

Gourav Pratap Singh
B.C.A., (I Sem.)

Deptt. of B.Ed.

Shubhangi Soni
B.Ed. (2022-24) (IV Sem.)

Abhinav Sahai
B.Ed. (2023-25) (II Sem.)

Deptt. of D.El.Ed.

Jesmeen Khatun
D.El. Ed. (2023) (I Sem.)

Bharti Rajpoot
D.El. Ed. (2022) (III Sem.)

ज्ञान पुष्प 2024-2025

विषय अनुक्रम

क्र.सं.	गद्य शीर्षक	लेखक का नाम	पद/कक्षा	पृष्ठ सं.
1.	भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) में निहित है वसुधैव कुटुंबकम् का भाव	डॉ. हीरेश गोयल	उप-प्राचार्य व असिस्टेंट प्रोफेसर वाणिज्य संकाय	1
2.	वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल विचार	महक	बी.ए., तृतीय वर्ष	2
3.	वसुधैव कुटुम्बकम् : एकता, शांति, सामाजिक समरसता का प्रतीक	डॉ. ललित उपाध्याय	अधिशासी अधिकारी, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र	3
4.	बूढ़े माँ-बाप और वो एक कपूत	ईशा वर्मा	बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर	4
5.	मेरे प्यारे माँ-पापा	भारत कुमार	बी.कॉम. पंचम सेमेस्टर	4
6.	वसुधैव कुटुम्बकम् की जीवन में महत्ता	गिर्राज किशोर	विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग	5
7.	वसुधैव कुटुम्बकम् मानवता	तुषान्त कुमार	बी.सी.ए. प्रथम सेमेस्टर	5
8.	वसुधैव कुटुम्बकम् की महत्ता	डॉ. बीना अग्रवाल	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग	6
9.	वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा	विवेक कुमार	बी.एड, तृतीय सेमेस्टर	6
10.	वसुधैव कुटुम्बकम्	श्रीमती शोभा सारस्वत	प्रवक्ता, डी.एल.एड. विभाग	7
11.	माँ की ममता	चंचल सिसोदिया	बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर	7
12.	एक दोस्त ऐसा भी	प्रियांशी कुमारी	बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर	7
13.	मूल्यों की भारतीय समाज में प्रासंगिकता	आर0 के0 शर्मा	प्रवक्ता, डी0एल0एड0, विभाग	8
14.	निर्णय लेने की शक्ति	रवि कुमार	प्रवक्ता, डी0एल0एड0 विभाग	9
15.	वसुधैव कुटुम्बकम् एवं शैक्षिक नैतिकता (Educational Ethics)	डॉ. दुर्गेश शर्मा	विभागाध्यक्ष, वाणिज्य संकाय	10
16.	वसुधैव कुटुम्बकम् (विश्व एक परिवार है)	चंचल	बी.एड. तृतीय सेमेस्टर	11
17.	धरती एक परिवार है	वर्षा	बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर	11
18.	वसुधैव कुटुम्बकम् (सामाजिक दृष्टिकोण)	डॉ. प्रशान्त कुमार शर्मा	असिस्टेंट प्रोफे., रसायन विज्ञान विभाग	12
19.	धर्म हमारा एकता है	ज्योति कुशवाहा	बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर	12
20.	वसुधैव कुटुम्बकम् (भारतीय दर्शनशास्त्र)	ललित कुमार	प्रवक्ता, डी.एल.एड. विभाग	13
21.	मेरा देश मेरी पहचान	प्रदीप राठौर	बी.एस-सी.. पंचम सेमेस्टर	13
22.	भारत, स्वामी विवेकानन्द एवं विश्व-बन्धुत्त्व	मेघा अरोरा	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग	14
23.	वसुधैव कुटुम्बकम् : एकता और शांति का संदेश	डॉ. चेतन सैनी	असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय	15
24.	वसुधैव कुटुम्बकम् : वैश्विक शान्ति और एकता का संदेश	डॉ. किरन लता	असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग	16
25.	वसुधैव कुटुम्बकम् : भारतीय विरासत	माधुरी सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग	17
26.	वसुधैव कुटुम्बकम् हमारी पहचान	करीना	बी.ए. पंचम सेमेस्टर	17
27	वसुधैव कुटुम्बकम् में भारतीय संस्कृति और परम्परा की भूमिका, सारा विश्व एक परिवार	सोनू कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग	18
28.	भारत : विविधता में एकता	अभिषेक आर्य	बी.सी.ए., प्रथम सेमेस्टर	18
29.	रंग अनेक	डॉ. शिवानी पिप्पल	विभागाध्यक्ष, प्रबन्धन विभाग	19
30.	वसुधैव कुटुम्बकम् की आवश्यकता	सपना	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	19

क्र.सं.	गद्य शीर्षक	लेखक का नाम	पद/कक्षा	पृष्ठ सं.
31.	भारत एक पहचान	प्रवीन कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग	20
32.	तहजीव जैसी वैसी विरासत	दीप्ती वार्ष्णेय	बी.एस-सी. पंचम सेमेस्टर	20
33.	भाईचारा	मुस्कान	बी.सी.ए. प्रथम सेमेस्टर	20
34.	वसुधैव कुटुम्बकम्ः कट्टरता पर प्रहार का शाश्वत संदेश	डॉ. ओबैदर्रहमान	असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग	21
35.	वसुधैव कुटुम्बकम् : एक संसार	दिनेश कुमार	बी.ए. तृतीय सेमेस्टर	21
36.	रिश्तों की मिठास	विवेक सागर	बी.कॉम पंचम सेमेस्टर	22
37.	मानवता	मयंक वार्ष्णेय	बी.एस-सी. पंचम सेमेस्टर	22
38.	वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा	पूजा	बी.ए. पंचम सेमेस्टर	22
39.	वसुधैव कुटुम्बकम् की भूमिका	नितिन कश्यप	बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर	23
40.	वसुधैव कुटुम्बकम् जीने की राह	राधिका कुमारी	बी.ए. पंचम सेमेस्टर	23
41.	वसुधैव कुटुम्बकम् भिन्नता का प्रतीक	कु. दिव्यांशी वार्ष्णेय	बी.एड. तृतीय सेमेस्टर वर्ष	23
42.	विकास का आधार	उदय राज सिंह	बी.बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	24
43.	वसुधैव कुटुम्बकम् चुनौतियाँ	यश सूद	बी.कॉम पंचम सेमेस्टर	24
44.	वसुधैव कुटुम्बकम् : एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य	दीपिका	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	25
45.	बात हम इंसानियत की करते हैं	रेशु कुमारी	बी.ए. तृतीय सेमेस्टर	25
46.	वसुधैव कुटुम्बकम् : पूरी दुनिया एक परिवार	गौरी कुमारी	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	26
47.	वसुधैव कुटुम्बकम्ः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	गोपाल कुमार	बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर	27

S.No.	Name of the Title	Written By	Post / Class	Page No.
1.	Vasudhaiva Kutumbakam and Geography: A Global Perspective	Mohd Wahid	Assistant Professor, Department of Geography	28
2.	"Everyone's First Duty is to Protect our Environment"	Dr. Priyanka Singh	Assistant Professor Zoology	29
3.	India Sprit of Unity	Mr. Parveen Kumar	Asstt. Prof. Management	29
4.	Sanatan Dharma	Mahak	B. Com Vth Sem.	29
5.	Sustainable Development in India	Dr. Amir Khan	Assistant Professor	30

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति	31
2.	महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के प्रगति प्रतिवेदन	33
	❖ वाणिज्य संकाय	33
	❖ विज्ञान संकाय	34
	❖ कला संकाय	35
	❖ Department of Management	35
	❖ Department of Computer Science	35
	❖ शिक्षक-शिक्षा विभाग (बी.एड.)	36
	❖ डी.एल.एड. विभाग (बी.टी.सी.)	37

	❖ पुस्तकालय विभाग	37
	❖ राष्ट्रीय सेवा योजना	38
	❖ प्राथमिक चिकित्सा समिति	39
	❖ छात्र कल्याण समिति	40
	❖ शोध एवं प्रकाशन समिति	40
	❖ अनुशासन समिति	41
	❖ ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति	41
	❖ अनुसूचित जाति अनुसूचित- जनजाति कल्याण समिति	42
	❖ साहित्यिक समिति	43
	❖ सांस्कृतिक समिति	43
	❖ आन्तरिक गुणवत्ता मूल्यांकन समिति	43
	❖ पुरातन छात्र समिति एवं रोजगार सलाहकार समिति	44
3.	सरकार की योजना	44
4.	Visitor Views	45
5.	मीडिया की नजर में	46

ज्ञान निजी आई.टी.आई. - लेख एवं कविताएँ

क्र.सं.	गद्य शीर्षक	लेखक का नाम	पद/कक्षा	पृष्ठ सं.
1.	वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा	राम बाबू लाल	अनुदेशक, ज्ञान आई.टी.आई., अलीगढ़	48
2.	वसुधैव कुटुम्बकम् : एकता और सामाजिक समरसता का संदेश	खगेश सैनी	आई.टी.आई. फिटर	48
3.	माता-पिता	लक्ष्मी	आई.टी.आई. इलैट्रीशियन	49
4.	हमारे पूर्वज	मो0 साहिल	आई.टी.आई. फिटर,	49
5.	माँ	राघव यादव	आई.टी.आई. इलैक्ट्रीशियन	49
6.	शिक्षा का महत्त्व	प्रशान्त	ज्ञानदीप आई.टी.आई. (इलैक्ट्रीशियन)	50
7.	छात्र शक्ति का महत्त्व	जीतू	ज्ञानदीप आई.टी.आई. (फिटर)	50
8.	परीक्षा	देवेश	ज्ञानदीप आई.टी.आई. (इलैक्ट्रीशियन)	50
9.	अतिथि देवो भवः	वर्धन पटसारिया	ज्ञानदीप आई.टी.आई. (इलैक्ट्रीशियन)	51
10.	जीवन संघर्ष	लालू राजपूत	ज्ञान आई.टी.आई. (इलैक्ट्रीशियन)	51
11.	साहस वीरता	शिवम्	आई.टी.आई. ज्ञानदीप (इलैक्ट्रीशियन)	51

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
1.	ज्ञान निजी आई0टी0आई0 ज्ञान महाविद्यालय परिसर, आगरा रोड, अलीगढ़	52
2.	ज्ञान दीप निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I), रूहेरी, हाथरस	53
3.	सत्र : 2024-25, ज्ञान महाविद्यालय एवं ज्ञान निजी आई.टी.आई. द्वारा आयोजित तथा प्रतिभागित (Participated) कार्यक्रम : एक नजर में	54

विविधाएँ

बी.एड.के प्रशिक्षुओं द्वारा आयोजित फेयरवेल पार्टी में अतिथियों का सम्मान करते हुए प्रबन्ध समिति

टैबलेट एवं स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कोल विधायक अनिल पाराशर को सम्मान-पत्र देते चेयरमैन श्री दीपक गोयल

डीजी शक्ति के अन्तर्गत टैबलेट वितरण कार्यक्रम में उपस्थित एडीएम (न्यायिक) श्री अखिलेश यादव, सचिव, प्राचार्य व अन्य

ज्ञान दर्शन अर्द्धवार्षिक पत्रक का विमोचन करती हुई मुख्य अतिथि डॉ. इंदू सिंह, प्रधानाचार्या, टी.आर. इंटर कॉलेज व अन्य

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) में निहित है वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव

डॉ. हीरेश गोयल
उप-प्राचार्य व असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन से बहुत गहराई से जुड़ी हुई है, जो दुनिया को एक परिवार मानने पर जोर देती है। एन.ई.पी. 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाने की परिकल्पना पर जोर देती है जो छात्रों में वैश्विक नागरिकता, स्थिरता और नैतिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़वा देते हुए एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान, अखंड मानव समाज में योगदान दे।

इसके अलावा, एन.ई.पी. 2020 सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच और समावेशिता के महत्त्व पर जोर देती है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् के मूल सिद्धांत के साथ प्रतिबिंबित होती है कि प्रत्येक व्यक्ति वैश्विक परिवार का एक अभिन्न अंग है। यह नीति हाशिए पर पड़े और वंचित समुदायों को समान अवसर प्रदान करके शिक्षा में असमानताओं को कम करने की वकालत करती है, जिससे एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा मिलता है। विविधता को अपनाने और समान शिक्षा को बढ़ावा देने के माध्यम से, एन.ई.पी. 2020 यह सुनिश्चित करना चाहती है कि ज्ञान और सीखने का लाभ समाज के सभी वर्गों में साझा किया जाए, जो वसुधैव कुटुम्बकम् में निहित करुणा और सामूहिक कल्याण के सार्वभौमिक मूल्यों के साथ संरेखित हो। एन.ई.पी. 2020 वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांतों से निम्न प्रकार संबंधित है :

1. वैश्विक नागरिकता और नैतिक शिक्षा
(Global Citzenship and Ethical Education)

एन.ई.पी. (NEP) 2020 वैश्विक संदर्भ में अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक वैश्विक नागरिकों के विकास को बढ़ावा देती है। यह वसुधैव कुटुम्बकम् के परस्पर जुड़ाव और साझा जिम्मेदारी के सिद्धांत के साथ संरेखित करते हुए नैतिकता, मानवाधिकार और कर्तव्यों सहित मूल्य-आधारित शिक्षा पर जोर देती है।

नीति, नैतिक व्यवहार, सहानुभूति और दूसरों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के महत्त्व पर बल देती है, जो कि वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा के अनुसार वैश्विक परिवार की अवधारणा के मूल में हैं।

2. समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा
(Inclusive and Equitable Education)

एन.ई.पी. (NEP) 2020 का उद्देश्य सभी स्तरों पर शिक्षा तक सार्वभौमिकता पहुँच प्रदान करना है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई भी बच्चा पीछे न छूटे।

नीति का फोकस समानता पर है (विशेष रूप से हाशिए पर पड़े और वंचित समुदायों के लिए अवसर प्रदान करने में) जो वसुधैव कुटुम्बकम् द्वारा प्रचारित नैतिक जिम्मेदारी को दर्शाता है।

3. स्थिरता और समग्र विकास
(Sustainability and Holistic Development)

एन.ई.पी. (NEP) 2020 पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा और स्थिरता को एकीकृत करने पर जोर देता है। जिससे छात्रों के जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों को समझने और उनका समाधान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। यह वसुधैव कुटुम्बकम् के विकास के समय दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसमें वैश्विक परिवार के हिस्से के रूप में पर्यावरण की देखभाल करना शामिल है।

यह नीति अकादमिक शिक्षा से परे समग्र शिक्षा को भी बढ़ावा देती है जिसमें शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक विकास शामिल है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा के अनुरूप व्यापक विकास को परिलक्षित करता है।

4. बहुविषयक और अंतः विषयक शिक्षण
(Muldidisciplinary & Interdisciplinary Learning)

एन.ई.पी. (NEP) 2020 शिक्षा के लिए बहुविषयक और अंत: विषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जहाँ छात्र ज्ञान के विविध क्षेत्रों का पता लगा सकते हैं और एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। यह दृष्टिकोण जीवन और ज्ञान विभिन्न पहलुओं के परस्पर संबंध को समझने पर वसुधैव कुटुम्बकम् के अनुरूप है।

नीति में अंतर-सांस्कृतिक समझ को प्रोत्साहित करने तथा विविध परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने से वैश्विक एकता और सांस्कृतिक समावेशिता को समर्थन दिया गया है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् पर आधारित है।

5. नैतिक शासन और नीति कार्यान्वयन

(Ethical Governance and policy implementation)

एन.ई.पी. (NEP) 2020 शैक्षिक संस्थानों में नैतिक शासन का आह्वान करती है, जिसमें प्रशासन में पारदर्शिता, जबाबदेही और अखंडता शामिल है, यह वसुधैव कुटुम्बकम् के नैतिक सिद्धांतों को दर्शाता है, जो शिक्षा सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में निष्पक्षता और न्याय की वकालत करता है।

नीति में शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण पर जोर दिया गया है, जिसमें नैतिकता और मूल्य शिक्षा भी शामिल है। जिससे यह सुनिश्चित होता है कि शिक्षक भावी पीढ़ियों को वसुधैव कुटुम्बकम् के मूल्यों को प्रदान करने में सक्षम हों।

वसुधैव कुटुम्बकम् को शैक्षिक नैतिकता और कानूनों में एकीकृत करना वैश्विक एकता, साझा जिम्मेदारी और स्थिरता में गहराई में निहित शिक्षा के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रदान करता है। इस दर्शन को अपनाकर, शैक्षिक संस्थान ऐसे व्यक्तियों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जो न केवल अकादमिक रूप से कुशल हों, बल्कि नैतिक रूप से आधारित और सामाजिक रूप से जिम्मेदार भी हों। शिक्षा के लिए यह समग्र दृष्टिकोण एक न्यायसंगत, समतावादी और टिकाऊ दुनिया को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।

यह कहा जा सकता है कि भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वसुधैव कुटुम्बकम् के मूल्यों और सिद्धांतों के साथ सामंजस्य स्थापित करती है, जो शैक्षिक वातावरण, वैश्विक नागरिकता, नैतिक जिम्मेदारी, समावेशिता और स्थिरता को बढ़ावा देती है। इन मूल्यों को अपने ढाँचे में एकीकृत करके, NEP-2020 का उद्देश्य भारत में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल विचार

महक
बी.ए., तृतीय वर्ष

"वसुधैव कुटुंबकम्" एक संस्कृत कहावत है, जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है।" यह विचार हमें सिखाता है कि पृथ्वी पर हर कोई एक बड़े वैश्विक परिवार के सदस्य की तरह है। यह एक-दूसरे के साथ दयालुता, सम्मान और समझ के साथ व्यवहार करने को प्रोत्साहित करता है। यह अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि मतभेदों के बावजूद हम सभी जुड़े हुए है और हमें शान्ति और एकता के लिए मिलकर काम करना चाहिए। आज की दुनिया में, जहाँ हम गरीबी और संघर्ष जैसी समस्याओं से जूझ रहे है, वहाँ वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश और भी महत्त्वपूर्ण है। इससे हमें हमारी विविधता की सराहना करने में सहायता होती है तथा यह हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग करने की याद दिलाता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल विचार यह है कि हर कोई एक बड़े परिवार का हिस्सा है, चाहे उनके बीच मतभेद क्यों न हों। भारत का यह प्राचीन दर्शन हमें शांति और सद्भाव का लक्ष्य रखते हुए सभी के साथ दयालुता और सम्मान के साथ व्यवहार करना सिखाता है।

हमारी दुनिया एक बड़े पड़ोस की तरह है, जहाँ राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच की रेखाएँ धुँधली होती जा रही है। इसलिए, हमारे लिए वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांतों का पालन करना और एक ऐसी दुनिया के लिए प्रयास करना महत्त्वपूर्ण है, जहाँ सभी के साथ उचित और सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए।

ये सिद्धांत हमारा बेहतर भविष्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं। टीम वर्क सहयोग को प्रोत्साहित करके और एक-दूसरे के प्रति सम्मान दिखाकर हमें समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलती है। इसकी सहायता से हम दुनिया को अधिक संतुलित और शांतिपूर्ण बनाने पर काम कर सकते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् हमें याद दिलाता है।

मतभेदों को भूलें : लोगों संस्कृति और मान्यताओं में विविधता का सम्मान करें और उन्हें साथ मिलकर मनाएँ।

समझ दिखाएँ : यह महसूस करने और समझने की कोशिश करें कि दूसरे लोग चीजों को कैसे देखते हैं।

दया की भावना फैलाएँ : लोगों में प्यार बाँटे, सकारात्मक रहे और जरूरतमंदों को मदद प्रदान करें।

कल्याण के कार्यों में नेतृत्व करें : अपने व्यवहार के माध्यम से यह प्रदर्शित करके एक उदाहरण बनें कि आप संपूर्ण मानवता की एकता में विश्वास करते हैं।

दूसरों को शिक्षित करें : आप जो जानते हैं उसे बाँटें, हर कोई आपस में जुड़ा हुआ है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

इन विचारों को अपने दैनिक जीवन में शामिल करके आप एक ऐसी दुनिया में योगदान कर सकते है जो आप-पास की विविधता को महत्त्व देती है।

वसुधैव कुटुम्बकम् : एकता, शांति, सामाजिक समरसता का प्रतीक

शैक्षिक प्रणाली में प्रारंभ हो वैश्विक नागरिकता का दृष्टिकोण

डॉ. ललित उपाध्याय
अधिशासी अधिकारी, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र

वसुधैव कुटुम्बकम् से वैश्विक शांति, समृद्धि, सामाजिक समरसता, भाईचारा, भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक कारकों को संतुलित किया जा सकता है। वसुधैव कुटुम्बकम् की आवश्यकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में क्यों प्रासंगिक है? इस ज्वलंत प्रश्न के उत्तर व इसके भावार्थ को समझने के लिए विश्व की वर्तमान परिस्थितियों पर नजर डालना आश्वयक है। विश्व तीसरे युद्ध की ओर बढ़ रहा है, मानवता तार-तार है, हजारों-लाखों बेकसूर लोगों की मौत से अनेक देशों व आस-पास के क्षेत्रों में हा-हा कार मचा हुआ है, आजकल रूस-यूक्रेन संघर्ष फरवरी 2022 से 2024 में इन पंक्तियों तक लिखे जाने तक अभी जारी है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में इसे सबसे बड़ा संघर्ष माना जा रहा है। सात अक्टूबर 2023 ये इजराइल व हमास के मध्य युद्ध का संघर्ष भी हजारों बेगुनाहों के मौत की गवाही दे रहा है। विश्व के इतिहास में कई युद्ध हुए है, जिनमें प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918), द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) प्रमुख रहे।

युद्ध से वैश्विक स्तर पर जन धन व प्रकृति की हानि किसी से छुपी नहीं है।

युद्ध विभीषिका को अंजली श्रीवास्तव ने अपनी कविता में यूं बयान किया है,

"धड़-धड़ कर फट रहे हैं गोले, कड़-कड़ कर चल रही है गोली,
कागा, कोकिल, वानर, मानव, सब भूले अपनी बोली!
धू-धू कर जल रही दिशाएँ, धुएँ में छिपता फिरे गगन,
हाहाकार मच गया चतुर्दिक, सन्सन् रोती फिरे पवन!"

युद्ध की विभीषिका से दुनिया को बचाने के लिए संयुक्त राष्ट्र चार्टर बनाने जैसे कई वैश्विक प्रयासों के बावजूद विश्व विभिन्न देशों में अपनी अस्मिता व संस्कृति को बचाने, आतंकी हमले, वर्चस्व की होड़ के कारण युद्ध जैसे हालातों के साथ संघर्ष जारी है। इसके लिए वसुधैव कुटुम्बकम् वर्तमान में प्रासंगिक है।

वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीय उपनिषदों की देन :

भारत के उपनिषदों ने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा विश्व को दी है। यह उपनिषद से संस्कृत भाषा में जो वैश्विक सद्भावना के संदर्भ में 'हम' की परिकल्पना को परिलक्षित करता है।

स्वामी विवेकानंद के संदेश का मूलभूत आधार :

स्वामी विवेकानंद ने 1893 को शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में जो संदेश दिया था वो राजनीतिक विपथनों के सामंजस्य से परे विश्व की एकता अथवा वैश्विक सांस्कृतिक सिल से संबंधित था जिसमें स्पष्ट रूप से भारत की ओर से शांति और एकता के संदेश को प्रतिबिंबित किया गया था। यह आचार्य विष्णु शर्मा के पंचतंत्र नाम के ग्रंथ से लिया गया है।

मानवता के कल्याण लिए अहम :

वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश मानवता की भलाई, सहानुभूति, करुणा, आपसी विश्वास और सम्मान को बढ़ावा देने, वैश्विक परिवार के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें सांस्कृतिक और भौगोलिक सीमाओं से परे सार्वभौमिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् के विविध आयाम कसौटी पर खरे :

हमारा मानना है कि वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित समाज में, हम सामाजिक संघर्ष में उल्लेखनीय कमी और सांप्रदायिक सद्भाव में वृद्धि देख सकते हैं? जिससे दयालुता के कार्य आदर्श हों और हर को अपनेपन और सुरक्षा की भावना महसूस हो, यही वह दुनिया है जिसकी कल्पना वसुधैव कुटुम्बकम् करता है।

मानवता की सुंदरता इसकी विविधता में निहित है। यह भाव संघर्ष समाधान के लिए दृष्टिकोण सुनने, समझने और आम जमीन खोजने के महत्त्व पर जोर देता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में वसुधैव कुटुम्बकम् से राष्ट्रों का आम भलाई के लिए मिलकर काम करने, कूटनीति के माध्यम से विवादों को सुलझाने और जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् के नैतिक आयाम से हम अपने व्यक्तिगत और सामूहिक अहंकार से ऊपर उठने, सहानुभूति और करुणा के माध्यम से दुनिया को देखने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकते है।

आर्थिक समानता और स्थिरता के लिए इसका भाव हमें निष्पक्ष धन और संसाधन वितरण के लिए प्रयास करने को प्रोत्साहित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि हर कोई मूलभूत आवश्यकताओं तक पहुँच सके।

वर्तमान में हमें ऐसी नीति और प्रणालियों को लागू करना चाहिए जो धन का पुनर्वितरण करें और सभी व्यक्तियों को अपनी जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के अवसर प्रदान करें।

सतत् विकास लक्ष्यों के लिए प्रासंगिक है वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव :

सतत् एवं समावेशी विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जहाँ आर्थिक गतिविधियों को पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें हरित प्रौद्योगिकियों को अपनाना तथा नवीकरणीय ऊर्जा का समर्थन करना शामिल है। यह दर्शन हमें सहिष्णुता, सहानुभूति, परोपकारिता और सहयोग में निहित सामंजस्यपूर्ण व्यवहार को सिखाता है। यह निःस्वार्थ सामाजिक परोपकार के कार्यों को प्रोत्साहित करने व जरूरतमंद लोगों की मदद करने पर बल देता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् को व्यावहारिक शिक्षा से जोड़ना जरूरी :

वसुधैव कुटुम्बकम् को जीवन में लाने के लिए, आज हमें मिलकर व्यक्तियों को एक वैश्विक समुदाय के हिस्से के रूप में देखने कि लिए शिक्षित करना चाहिए, यह हमारी शैक्षिक प्रणालियों में वैश्विक नागरिकता के विचार को शामिल करने से शुरू होना चाहिए, जिससे बच्चों और वयस्कों को सभी लोगों के परस्पर संबंध के बारे में सिखाकर, हम साझा जिम्मेदारी और सहानुभूति की भावना पैदा कर सकें।

सार संक्षेप :

अंत में

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

(इसका अर्थ है कि अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों की तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।) के भाव को सभी आत्मसात करें ताकि भारतीय दर्शन के माध्यम से विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

बूढ़े माँ-बाप और वो एक कपूत

ईशा वर्मा
बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर

सड़क पर छोड़ कर अपने बूढ़े माँ बाप को,
देखो, तुमने ये कितना महान काम किया है।
जिस माँ ने तुम्हें इतना कष्ट सह कर पैदा किया,
उस ही गोद को तुमने तार-तार किया है।
याद करो उस दिन को जब इस माँ ने तुमको
अपने आँचल से लगाया था,
और तुमको अपना प्यारा पूत बताया था।
तुम्हारी आँखों में काजल लगा कर,
तुम को खुद से भी सुंदर बनाया था।
और पिताजी की तो बात ही निराली है,
अपनी खाली जेब होते हुए भी
अपने आप को राजा बताते हैं।
और खुद को बेच कर
तुम को खुश रखने की कोशिश करते हैं
और पिता जी की तो बात ही निराली है।

मेरे प्यारे माँ-पापा

भारत कुमार
बी.कॉम. पंचम सेमेस्टर

प्यारे माँ-पापा आपने मुझे वो हिम्मत दी हैं,
शायद ही बहुत कम माता-पिता अपने बच्चों को देते हैं,
आपने मेरा हर दर्द में हाथ थामे रखा,
मेरी खुशी के लिए न जाने क्या से क्या कर गये,
आप मेरे जीवन में मुझे ईश्वर से पहले जरूरी हो,
कोई क्या जाने आप दोनों मेरे लिए कितने जरूरी हो,
मेरे जीवन की सबसे बड़ी दौलत हो,
आप दोनों के रहते मुझे फिक्र किस बात की है,
आप दोनों सँभाल लेते हो अपने बेटे को हमेशा,
फिर चिन्ता मुझे किस बात की,
आपसे रोशन मेरी दुनिया, मुझे और उजालों की जरूरत
ही क्या है, आप तो मुझे जान से प्यारे हो,
फिर इन साँसों की कीमत ही क्या है, मुझे अपने जीवन
में कुछ नहीं चाहिए, बस मेरे माँ-पापा हमेशा मेरे
साथ ऐसे ही मुस्कराते रहें, आप दोनों माँ-पापा कम,
भगवान ज्यादा लगते हो, ओ मेरे प्यारे माँ-पापा आप
मुझे इस दुनिया में सबसे अच्छे लगते हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् की जीवन में महत्ता

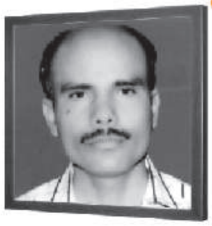

गिर्राज किशोर
विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ एवं भावार्थ-

'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृत भाषा का एक प्रसिद्ध वाक्य है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है– वसुधा अर्थात् पृथ्वी, और 'एव' अर्थात् निश्चित रूप से। 'कुटुंब' का अर्थ है परिवार और 'कम' का अर्थ है 'का विचार'। इसका अभिप्राय है कि पृथ्वी एक परिवार है। इसका आशय है कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीव–जन्तु, मनुष्य और समस्त प्रकृति हमारे परिवार के समान है जिन्हें हमें प्रेम और सहृदयता के साथ संजोय रखना चाहिए।

भारत देश की संस्कृति एवं परम्परा में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका विचार है कि सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार के समान है। इस विचार का प्रमाण हमारे प्राचीन ग्रन्थ उपनिषद् में उल्लेखित हैं। यह विचार हमारे समाज को एक नयी दृष्टि प्रदान करता है। यह विचार एक ऐसा दर्शन है, जिसमें भौगोलिक सीमाओं को भुलाकर समस्त प्राणी जगत को एक ही परिवार के हिस्से के रूप में स्वीकार करता है।

भाईचारे का संदेश– वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धान्त हमें बताता है कि कोई भी राष्ट्र, जाति या धर्म से ऊपर मानवता है। इसको हमारे ग्रन्थों में उल्लेखित यह श्लोक महत्त्व प्रदान करता है–

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि, पश्चन्तु, या किश्चित् दुःख भाग्भवेत्।

इस श्लोक में सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की मंगल कामना की गई है।

प्रासंगिकता और आधुनिक समय में महत्त्व-

वर्तमान समय में जहाँ हिंसा द्वेष, युद्ध और आतंकवाद जैसी समस्याएँ बढ़ रही है, वहाँ वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धान्त अत्यंत प्रासंगिक है। इस विचारधारा से प्रेरित होकर हम विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के बीच सद्भावना और आपसी समझ बढ़ा सकते हैं। इससे एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा सकता है। जहाँ शांति और सहयोग का माहौल हो।

अंत में कहा जा सकता है कि वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा हमें संकीर्णता को छोड़कर अपने विचारों में उदारता लाने का मार्ग प्रसस्त करती है साथ ही यह विचारधारा सभी जीवों के प्रति प्रेम और आदर का भाव रखने के लिए प्रेरित करती है। यदि हम सभी इस विचारधारा को आत्मसात् कर लेंगे तभी सच्चे अर्थ में मानवता का उत्थान होगा और एक शान्तिपूर्ण, सद्भावपूर्ण समाज का निर्माण हो सकेगा।

वसुधैव कुटुम्बकम् मानवता

तुषान्त कुमार
बी.सी.ए. प्रथम सेमेस्टर

इस धरती पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को एक दूसरे से जो जोड़ती है, वह है मानवता क्योंकि इसी भावना से सम्पूर्ण संसार एक परिवार के रूप में दिखाई देता है। इस बात को हम वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में समझ सकते हैं, जहाँ पर हर व्यक्ति जाति–धर्म, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब तथा बुराई को त्याग कर केवल एक दूसरे के साथ मानवता के माध्यम से दुनिया से एक परिवार के हिस्से के रूप में जुड़ा रहता है। वह स्वयं के विकास के साथ–साथ प्रत्येक व्यक्ति के विकास की भी कामना करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् यह एक संस्कृत का वाक्यांश है जिसका अर्थ है– विश्व एक परिवार है। यह एक भावना ही तो है जो हमें सभी के साथ दयालुता, सम्मान और समझ के साथ व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह भावना हमें बेहतर भविष्य की ओर मार्ग प्रदर्शित करती है।

इस वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से ही हम दुनिया को अधिक से अधिक संतुलित और शान्तिपूर्ण बनाने का काम कर सकते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् का विचार हम सभी को यह याद दिलाता है और दिलाता रहेगा कि प्रत्येक व्यक्ति सभी के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने में अपनी पूर्ण भूमिका निभाता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की महत्ता

डॉ. बीना अग्रवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

अंय निजः परो वेति गणनालघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

उपर्युक्त श्लोक वैश्विक परिवार की अवधारणा को इंगित करता है। यह पंक्तियाँ जीवन के सार को दर्शाती हुयी विश्वबंधुत्व की भावना को मजबूत बनाने के लिए प्रेरित करती है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ है– एक परिवार के रूप में सम्पूर्ण विश्व का समाहित होना। यह मनुष्य के अंदर अध्यात्म की भावना को रेखांकित करते हुए विश्व में अपनी पहचान स्थापित करके पारस्परिक सद्‌भाव की प्रेरणा प्रदान करता है। साथ ही यह व्यक्ति की समझ विकसित करने में भी अपना योगदान प्रदान करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् शब्द उपनिषद के छठे अध्याय के 71वें श्लोक में समाहित है। यह शब्द हजारों वर्षों से प्रासंगिक होने के साथ आज भी प्रासंगिक है। वर्तमान समय में इस शब्द की दिनों–दिन महत्ता बढ़ती जा रही है, क्योंकि आज के समय में मनुष्य वाद–विवाद की परिस्थिति का सामना बहुत अधिक कर रहा है। वसुधैव की भावना एकता और सामूहिक कल्याण की ओर प्रेरित करती है। यह शब्द एक समृद्ध समाज की रचना करने में सहयोग प्रदान करता है, साथ ही कमजोर समाज को सशक्त बनाने में अहम् भूमिका का निर्वहन करता है, जिससे व्यक्ति सीमित दायरों से बाहर निकलकर व्यापक स्तर से सोचना शुरू करता है। वर्तमान समय में मनुष्य आधुनिकता में फँसने के कारण वैश्विक शांति को भूल गया है, लेकिन इस श्लोक के माध्यम से पूरी दुनिया को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है, लेकिन यह तभी सम्भव है, जब मनुष्य एक दूसरे की सभ्यता तथा संस्कृति से भी परिचित हों।

11 सितम्बर, 1893 को शिकागो सम्मेलन में एक भाषण के उपरांत स्वामी विवेकानंद ने सभी लोगों को भाई–बंधु कहकर सम्बोधित किया, जो कि सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार की रूपरेखा के रूप में दर्शाता है। इसी दिन से समग्र जगत में विश्वबंधुत्व का सूत्रपात्र हुआ। स्वामी जी ने मानव जाति के सम्मुख धर्मराज्य का नया क्षितिज उद्‌घाटित कर दिया। साथ ही शिव ज्ञान से जीवसेवा का बीजमंत्र देते हुए साम्य, मैत्री, विश्वबंधुत्व की भावना का निर्माण किया।

भक्तिकाल के संतकाव्यधारा ने विश्व को धर्म का मूलाधार माना, जिसके अन्तर्गत मानव को एक विश्वव्यापी धर्म के सूत्रों में निबद्ध करना जहाँ जाति, वर्ग और वर्ण सम्बंधी भेद न हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह सभी मनुष्यों को धर्म,जाति, राष्ट्रीयता की भावना से अलग हटकर एकता पर जोर देकर शांति की स्थापना को बढ़ावा देता है। इसके द्वारा विविधता को कम करके वैश्विक जिम्मेदारी के लिए प्रोत्साहित करता है। यह व्यक्तिगत तथा पारिवारिक हितों पर सामूहिक कल्याण के मार्ग को प्राथमिकता देता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा

विवेक कुमार
बी.एड., तृतीय सेमेस्टर

सूरज अपनी रोशन और चंदा अपनी चाँदनी
बिखेरने में नहीं करता कोई चुनाव
कमजोरों और दीन हीन का बनो सहारा।
क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा।।
हर किसी को इस धरा पर जीने का है अधिकार
लोगों में एकता, प्रेम और भाईचारा ही
इस धरती को स्वीकार।
आओ काम, क्रोध, ईर्ष्या और भेदभाव को करें नकारा
क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा।।

एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य
G-20 के नेतृत्त्व में भारत का है यह दर्शन।
आतंकवाद, पर्यावरण, नैतिक मूल्यों की
समस्याओं को कम करने का बना लिया है मन
विश्व शांति और इंसानियत की रक्षा को
भारत देगा सहारा।।
क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा

वसुधैव कुटुम्बकम्

श्रीमती शोभा सारस्वत
प्रवक्ता, डी.एल.एड. विभाग

भारतीय संस्कृति में एक महत्त्वपूर्ण और भावना ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का संदेश दिया गया है। यह संस्कृत का एक श्लोक है जिसका अर्थ है ''सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है।'' इस विचार में सभी देश, जाति, धर्म और संस्कृतियों को एक परिवार के रूप में देखा गया है।

1. वसुधैव कुटुम्बकम् यह विचार हमें बताता है कि पूरी पृथ्वी एक ही परिवार है, जहाँ हर व्यक्ति और हर जीव एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। **-उपनिषद**

2. सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का निवास है। जो सभी में एक ही आत्मा को देखता है, वही सच्चे अर्थ में वसुधैव कुटुम्बकम् को मानता है। **-महात्मा गांधी**

3. वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत हमें प्रेम, करुणा और सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।"

-स्वामी विवेकानंद

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ :

वसुधैव कुटुम्बकम् दो शब्दों ''वसुधा'' और ''कुटुम्बकम्'' से मिलकर बना है। ''वसुधा'' का अर्थ है पृथ्वी और ''कुटुम्बकम्'' का अर्थ है परिवार। यह विचार कहता है कि इस धरती पर रहने वाला हर व्यक्ति एक ही परिवार का हिस्सा है। इसलिए हमें सबके प्रति प्रेम, सहानुभूति और समान व्यवहार करना चाहिए।

इस विचार का महत्त्व :

आज के समय में जब लोग जाति, धर्म, रंग और राष्ट्रीयता के आधार पर एक-दूसरे से भिन्नता महसूस करते हैं, वसुधैव कुटुम्बकम् का विचार हमें एकजुट रहने का संदेश देता है। यह हमें एकजुट रहने का संदेश देता है। यह हमें सिखाता है कि हमें एक-दूसरे के प्रति दया, प्रेम और सहयोग की भावना रखनी चाहिए। इससे समाज में भाईचारे और शांति का वातावरण बना रहे।

वसुधैव कुटुम्बकम् का उदाहरण :

यह सिद्धांत हमें केवल विचारों तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि अपने व्यवहार में अपनाना चाहिए। महात्मा गांधी और मदर टेरेसा जैसे महान व्यक्तियों ने इस विचार को अपने जीवन में अपनाया और दूसरों की सेवा को प्राथमिकता दी। उनके जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम भी किसी जाति या धर्म से परे जाकर सभी से प्रेम करें और उनकी सहायता करें।

वसुधैन कुटुम्बकम् का सिद्धांत भारतीय संस्कृति की महानता को दर्शाता है। यह केवल अपने देश के लोगों से ही नहीं ,बल्कि पूरी मानव जाति से प्रेम करना सिखाता है। इस विचारधारा को अपनाकर ही हम शांतिपूर्ण और खुशहाल समाज का निर्माण कर सकते हैं, जहाँ सब एक-दूसरे के सुख-दु:ख को अपना समझकर एक परिवार की तरह रहते हैं।

माँ की ममता

चंचल सिसोदिया
बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर

खुशियों की है पिटारी माँ, लगती सबसे न्यारी माँ।
मेरी माँ प्यारी माँ।।
दुनिया की सबसे न्यारी माँ, लोरी गाकर सुलाती है।
दुनिया की सैर कराती है।।
सपने मुझे दिखाती है। जीवन का लक्ष्य बताती है।।
खुशियों की है प्यारी माँ,
लगती सबसे न्यारी माँ। मेरी माँ प्यारी माँ।।
दुनिया की सबसे न्यारी माँ...

एक दोस्त ऐसा भी

प्रियांशी कुमारी
बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर

एक दोस्त ऐसा भी होता है। जो सिर्फ मेरा होकर रहे।।
मैं रोऊ तो वो मुझे हँसाए। मैं रूठू तो वो मुझे मनाए।।
मेरे हर एक दु:ख में मेरा साथ दे। मेरी हर एक खुशी में मेरे साथ हो।।
मेरे बिना बोले और मेरी बात समझे।
मेरे बिना बोले मेरे, दर्द को वो महसूस करे।।
और मेरा दोस्त ऐसा भी हो।
जो मेरी हँसी के पीछे छिपे हुए मेरे दर्द को पहचाने।।
जो मेरे गिरने से पहले मेरा हाथ थाम ले, और मुझे गिरने से सँभाल ले।।

मूल्यों की भारतीय समाज में प्रासंगिकता

आर० के० शर्मा
प्रवक्ता, डी०एल०एड०, विभाग

प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए एक मूल्यपरक प्रणाली रखता है, जिसमें जीवन के मूल्य निर्धारित होते हैं। मूल्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, वफादारी, कर्त्तव्य भावना आदि उत्पन्न करते हैं। हमें व्यक्ति, समाज तथा शिक्षा तीनों की गतिविधियों का अवलोकन करना होगा। मूल्य शिक्षा वह सीढ़ी है, जिस पर व्यक्ति पाँव रखकर अपने संस्कारों को संवारता है और शिक्षा को नई दिशा प्रदान करता है।

आज वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय नहीं है। भाषण, नोट्स तथा बने बनाये उत्तरों को दोहराने का कौशल ही शिक्षार्थी की परीक्षा का मापदण्ड है। शिक्षार्थी अपने अस्तित्त्व को न तो पहचान पाता है, न ही पुस्तकीय ज्ञान उसकी सहायता करता है। ये गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए एक चुनौती हैं, शिक्षा में सुधार द्वारा आज की जरूरतों के अनुरूप उन्हें संवारा जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेमपूर्वक जीवन यापन करना सीखें। हमें बालक को ऐसा मनुष्य बनाना है, जो स्वयं स्वेच्छा से शाश्वत मूल्यों के पालन का प्रयास करे, जिससे व्यक्ति व समाज सभी का कल्याण सम्भव हो।

आज हमने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं, कि यातायात, संचार व चिकित्सा में हम बहुत आगे निकल गये हैं, परन्तु इसके साथ ही दूसरी ओर जब हम अपनी संस्कृति व मूल्यों पर विचार करते हैं तो हमें बहुत ही शर्म का अनुभव होता है। चूंकि मूल्यों की दृष्टि से हमारा दिन-प्रतिदिन पतन होता जा रहा है। हमें भारतीय मूल्यों का ज्ञान तो है, परन्तु हम उनके प्रति आस्था नहीं रखते और मूल्यविहीन व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। आधुनिकता की दौड़ में हम इतनी तीव्र गति से चलना चाहते हैं, कि हमारे मूल्य उस दौड़ में कहीं लुप्त हो जाते हैं। आज हमारे लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि हम सार्थक शिक्षा के द्वारा छात्रों को सही मूल्यों का ज्ञान कराएँ।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं विकास उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है और शिक्षा, अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य मानव जीवन में मूल्यों का निर्माण करना है "Values can be caught and not to be taught" अर्थात् मूल्य ग्रहण किये जा सकते हैं, पढ़ाये नहीं जा सकते। शिक्षक का कार्य तो एक चतुर माली की भाँति बालक रूपी पौधे की जड़ों में आदर्श शिक्षा की खाद रोपित करना है, जिससे राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होता है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फॉबेल ने कहा है कि बालक एक पौधे के समान है और अध्यापक एक माली के सदृश, जो पौधे को आवश्यकतानुसार सींचकर खाद आदि डालकर तथा काट-छाँटकर सुव्यवस्थित रूप से पनपाता है, जिससे वह एक सुन्दर और मनमोहक वृक्ष बन सके। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था "The teacher is nation builder" अर्थात अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है, वर्तमान शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक शिक्षा को बोझ न समझे, बल्कि उससे अभिप्रेरित होकर समायोजित जीवन यापन करना सीखे।

सबसे पहली शिक्षा बालक माता-पिता से लेता है। अत: माता-पिता का व्यवहार मूल्यों से सम्बन्धित होना चाहिये। इसी प्रकार हर छात्र का आदर्श उसका शिक्षक होता है, वह वही कार्य करने की चेष्टा करता है, जैसा वह शिक्षक को करते हुए देखते हैं। शिक्षक जिन मूल्यों को छात्रों में देखना चाहता है, वह स्वयं उसमें भी अभिव्यक्त होने चाहिए।

आज हम 21 वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। हम अपने मूल्यों को भूल चुके हैं, जिन मूल्यों के लिए भारत विश्व में जाना जाता था। हमें इस संकट से उभरने के लिए मूल्य परक शिक्षा विद्यालयों में प्रदान करने मात्र से कार्य नहीं चलेगा, वरन जन जागरण के लिए भी कदम उठाने पड़ेंगे। मूल्यों में गिरावट रोकने के लिए सर्वप्रथम छात्रों में गिरावट को रोकना होगा। छात्रों में गिरावट का मुख्य कारण है शिक्षा में गिरावट। अत: शिक्षा में गिरावट को रोकना होगा।

निर्णय लेने की शक्ति

रवि कुमार
प्रवक्ता, डी0एल0एड0 विभाग

जीवन हमें हर दिन निर्णय लेने की चुनौतियाँ देता है। कुछ निर्णय छोटे होते हैं जैसे क्या खाना है और कुछ बड़े जैसे कैरियर का चुनाव। लेकिन हर निर्णय हमारे भविष्य की नींव रखता है। जब हम काम टालते हैं, तो दरअसल हम निर्णय लेने से भाग रहे होते हैं तो यह प्रकरण आपको सिखायेगा कि कैसे निर्णय लेने की शक्ति को अपनी इच्छा शक्ति के साथ जोड़कर हम अपने जीवन को बदल सकते हैं। सबसे पहले निर्णय की जिम्मेदारी स्वीकार करें। हर निर्णय का परिणाम चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो आपके हाथ में हैं। यह जिम्मेदारी आपको शक्ति देती है, न कि डराने के लिए। मैं सही निर्णय कैसे लूँ? मैं कैसे जान पाऊँ कि मैं सहीं निर्णय ले रहा हूँ और यह निर्णय मुझे सही परिणाम देगा। मैं यह कैसे तय कर पाऊँ कि मेरे विचार मेरे काम को सकारात्मक रूप् से प्रभावित कर सकेंगे। इसके साथ-साथ अन्य हित धारकों को भी अपने काम से कैसे प्रसन्न कर सकूँ? हमें प्रतिदिन अपने-अपने घर एवं कार्य क्षेत्र में कई प्रकार के निर्णय लेने होते हैं। एक प्रबंधक, सुपरवाइजर या फिर एक गृहणी की हैसियत में हमारे द्वारा लिया गया हर निर्णय हमारी योग्यता का मापदंड बन जाता है। यह जानकर आपकी उत्सुकता और भी जागृत हो जायेगी कि ध्यान आपकी निर्णय लेने की क्षमता को निखार सकता है। ध्यान एक ऐसी प्राचीन शक्तिशाली विधि है जिसका अभ्यास आपके मन को ऊर्जा श्रोत में परिवर्तित कर देता है, जिससे कि आपका मन बुद्धिमान निर्णयों को लेने की क्षमता पा लेता है।

आज की सोच : आज की बात करें तो हमारे निर्णय लेने की क्षमता क्षींण होती जा रही है। आज व्यक्ति नकारात्मक एवं भावात्मक रूप से निर्णय लेने में अक्षम है। हर व्यक्ति किसी न किसी भाव से डरा हुआ है। किसी न किसी रिश्वत एवं राजनीतिक दबाव, डर इसके अलावा कई ऐसी समस्याएँ हैं जो कि व्यक्ति सही निर्णय नहीं ले पा रहा है। माना कि जैसे न्यायालय, सरकारी अस्पताल, स्कूल, सरकारी गैर सरकारी कार्यालय, पुलिस-प्रशासन आदि ऐसे विभाग हैं, जिसमें कोई भी अपने फैसले स्वत: तो लेते हैं लेकिन वह किसी न किसी दबाव में या दबाव के कारण सटीक फैसले नहीं हो पाते हैं। जिसकी बजह से आम आदमी आहत होता है व नाकसूर व्यक्ति गरीब व्यक्ति बेगुनाह कहीं न कहीं सजा काट रहा होता है। जिससे आम व्यक्ति समस्याओं से घिरा हुआ है। हमारे निर्णय लेने की शक्ति आये दिन कमजोर होती जा रही। जब तक हम इस पर ध्यान नहीं देंगे तब तक सही निर्णय नहीं ले सकते हैं।

तर्क शक्ति की सोच : आर्ट ऑफ लिविंग की ध्यान प्रशिक्षिका प्रिया राव बताती हैं, नियमित ध्यान से आप अधिक बुद्धिमान हो जाते हैं और मन के जाल में नहीं फँसते हैं। परिस्थितियों को आप एक तर्कपूर्ण तरीके से तोलते हैं एवं ऐसा निर्णय ले पाते हैं जो लाभकारी हो। ध्यान आपके मस्तिष्क के दोनों भागों में संतुलन बनाये रखता है। तब हमारी निर्णय शक्ति का विकास होता है। ''निर्णय के लिए ध्यान करते रहने से हमारी मानसिक क्षमता मालूम हो जाती है। ध्यान से नकारात्मकता दूर हो जाती है।" वर्तमान पर ध्यान, जब मन में पूर्ण रूपसे स्पष्टता हो तो प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता स्वत: ही आ जाती है। अस्पष्ट मन एक भूतकाल भविष्यकाल में ग्रसित रहता है और वर्तमान आकाक्षाओं और विकृतियों में घिर जाता है। ध्यान साधकों को ध्यान के साथ-साथ सुदर्शन क्रिया करने से और भी अधिक जागरूकता और संकेन्द्रीकरण की क्षमता प्रापत हो जाती है। सही निर्णय लेने के लिए एकाग्र व शान्त मन,सही संतुलन, तर्कशील सोच, सशक्त मन, अवलोकन शक्ति, वर्तमान पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

दृढ़ता का अभ्यास : निर्णय लेने के बाद उस पर टिके रहना भी बहुत आवश्यक है। बार-बार निर्णय लेने से बचें क्योंकि बात हमारे आत्मसम्मान व आत्मविश्वास की है।

परिणाम का सामना करना : निर्णय लेने में कभी-कभी परिणाम अपेक्षा के अनुरूप नहीं होते है, लेकिन ध्यान रखें हर निर्णय से सीख मिलती है। अपनी गलतियों से सीखें व आगे बढ़ें।

निर्णय को तोड़िए : बड़े-बड़े फैसलों को छोटे-छोटे निर्णय में बाँटें। अगर आपको एक बड़ा प्रोजेक्ट शुरू करना है तो उसे छोटे-छोटे चरणों में बाँट लें। हर छोटे निर्णय से आत्मविश्वास बढ़ता है और टालने की आदत कम होती है।

समय की सीमा तय करें : हर निर्णय के लिए एक समय सीमा रखें। इससे आपका समय भी बचेगा व आप अपने काम को होने के बाद अच्छा महसूस करेंगे। क्योंकि आप जानते हैं कि निर्णय लेने की एक समय सीमा होती है।

*जब कोई छोटा-मोटा निर्णय लेना होता है,तो मैने हमेशा सभी पक्ष-विपक्ष पर विचार करना लाभदायक पाया है। -**सिगमंड फ्रायड***

*निर्णय एक तेज चाकू है, जो सीधा और साफ काटता है, अनिर्णय एक सुस्त चाकू है, जो काटता है, फाड़ता है और अपने पीछे खुरदुरे किनारे छोड़ जाता है। -**गार्डन ग्राहम***

वसुधैव कुटुम्बकम् एवं शैक्षिक नैतिकता (Educational Ethics)

डॉ. दुर्गेश शर्मा
विभागाध्यक्ष वाणिज्य संकाय

वसुधैव कुटुम्बकम् में परस्पर जुड़ाव की धारणा इस बात पर जोर देती है कि सभी व्यक्ति एक वैश्विक परिवार व अखंड समाज का हिस्सा है। इस अवधारणा से प्रेरित होकर, शैक्षिक नैतिकता छात्रों को खुद को अखंड समाज की अविभाज्यता में वैश्विक नागरिक के रूप में देखने और अपनाने के लिए सिखाने को प्राथमिकता देगी जो पूरी दुनिया की भलाई (सर्व शुभ) के लिए जिम्मेदार है। यह दृष्टिकोण परस्पर सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान तथा वैश्विक शांति और सद्भाव के प्रति प्रतिवद्धता को प्रोत्साहित करता है।

1. साझा जिम्मेदारी और नैतिक शिक्षा

(Shared Responsibility and Ethical Education):
वसुधैव कुटुम्बकम् साझा जिम्मेदारी (Shared Responsibility) की वकालत करता है, जहाँ हर कोई आम भलाई (सर्वशुभ) में योगदान देता है। शैक्षिक नैतिकता (Ethical Education) के संदर्भ में, इसका मतलब व्यक्तिगत सफलता पर सामूहिक कल्याण पर ध्यान केन्द्रित करना है। शैक्षिक संस्थान नैतिक निर्णय लेने, सामाजिक जिम्मेदारी और समाज में सकारात्मक योगदान देने के महत्त्व पर जोर देंगे। पाठ्यक्रम में जलवायु परिवर्तन, गरीबी और असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियों पर प्रकाश डालने वाले नैतिकता पाठ्यक्रम शामिल होंगे,जो इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए कर्तव्य की भावना को बढ़ावा देंगे।

2. समग्र विकास और स्थिरता

(Holistic Development and Sustainability) :
वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन समग्र विकास को बढ़ावा है, जिसमें न केवल बौद्धिक विकास बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास भी शामिल है। इस सिद्धांत पर आधारित शैक्षिक नैतिकता शिक्षा के प्रति संतुलित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करेगी, जिसमें अकादमिक उत्कृष्टता को करुणा, विनम्रता, मानवीय मूल्यों और पर्यावरण संरक्षण जैसे मूल्यों के साथ एकीकृत किया जाएगा। विद्यालय और विश्वविद्यालयों को पाठ्यक्रम और परिसर संचालन में ऐसे अभ्यास अपनाने चाहिए जो संधारणीय जीवन (Sustainable Living) को बढ़ावा दें।

वसुधैव कुटुम्बकम् से व्युत्पन्न नैतिक सिद्धांत

(Ethical Principles Derived from Sasudhaiva Kutumbakam)

1. परस्पर जुड़ाव और एकता

(Interconnectedness and Unity):
वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल सिद्धांत सभी प्राणियों के परस्पर जुड़ाव को बताता है, जो सुझाव देता है कि शिक्षा को एकता और वैश्विक नागरिकताा की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। छात्रों को सभी जीवन रूपों की परस्पर निर्भरता को पहचानना और संस्कृति तथा दृष्टिकोणों की विविधता की सराहना करना सिखाया जाना चाहिए।

2. करुणा और सहानुभूति

(Compassion and Empathy):
एक वैश्विक परिवार (अखंड समाज) का मतलब सभी के लिए करुणा और सहानुभूति की भावना है। शिक्षा को छात्रों में इन गुणों को विकसित करना चाहिए,उन्हें दूसरों की पीड़ा को समझने और दयालुता तथा करुणा के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

3. सामाजिक न्याय और समानता

(Social Justice and Equality) :
वैश्विक परिवार का तात्पर्य सामाजिक न्याय और समानता के प्रति प्रतिबद्धता से भी है। शिक्षा से छात्रों को सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के बारे में सिखाकर और उन्हें अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण दुनिया की वकालत करने के लिए प्रोत्साहित करके इन मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए।

4. पर्यावरण संरक्षण

(Environmental Stewardship):
सभी जीवन रूपों का आपस में जुड़ा होना पर्यावरण के प्रति गहरा सम्मान आवश्यक बनाता है। शिक्षा को पर्यावरण जगरुकता और जिम्मेदारी को बढ़ावा देना चाहिए, छात्रों को टिकाऊ प्रथाओं के महत्त्व और भविष्य की पीढ़ियों के लिए गृह की रक्षा करने की आवश्यकता के बारे में सिखाना चाहिए।

5. पाठ्यक्रम एकीकरण

(Curriculum Integration):

वसुधैव कुटुम्बकम् को इतिहास और भूगोल से लेकर विज्ञान और सामाजिक अध्ययन तक विभिन्न विषयों में एकीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, छात्र भूगोल में वैश्विक अंतरनिर्भरता, विज्ञान में वैज्ञानिक प्रगति के नैतिक निहितार्थ और इतिहास में सामाजिक न्याय के लिए एतिहासिक संघर्ष के बारे में सीख सकते हैं।

6. अनुभात्मक शिक्षा

(Experiential Learning)

सहानुभूति और करुणा को बढ़ावा देने के लिए, शैक्षिक संस्थान अनुभवात्मक शिक्षा के अवसरों को शामिल कर सकते हैं, जैसे सामुदायिक सेवा परियोजनाएँ, स्वयंसेवी कार्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान। ये अनुभव छात्रों को दूसरों की जरूरतों के बारे में गहरी समझ और अपने समुदाय के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

7. वैश्विक नागरिकता शिक्षा

(Global Citizenship Education):

शिक्षा को छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और दृष्टिकोणों के बारे में पढ़ाकर वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देना चाहिए: यह भाषा सीखने, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन कार्यक्रमों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पहलों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

8. पर्यावरण शिक्षा

(Environmental Education) :

पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और संधारणीय प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूल अपने पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल कर सकते हैं। इसमें प्राकृतिक क्षेत्रों की फील्ड यात्राएँ, पर्यावरण से जुड़ी व्यावहारिक परियोजनाएँ और जलवायु परिवर्तन तथा संधारणीयता पर चर्चाएँ शामिल हो सकती हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् विश्व एक परिवार है

चंचल
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

यह एक परिवार है,
ईश्वर से मिला हुआ हम सबको यह उपहार है।
सबका मालिक एक, पर जाति, धर्म आदि के आधार पर बँटा हुआ संसार है,
नफरत, घमंड, हिंसा आदि ने मचा दिया पूरे विश्व में हाहाकार है।
काले हों या गोरे, अमीर हों या गरीब हर किसी को यहाँ जीने का अधिकार है,
लोगों में एकता प्रेम और भाईचारे की भावना ही इस धरती को स्वीकार है।
यहाँ हर धर्म का त्योहार बड़ी धूम-धाम से मानाया जाता है,
सभी धर्मों की भाषा, खाने की आदत,
रीति-रिवाज आदि को सम्मान दिया जाता है।
हमें लड़ाई-झगड़े नहीं करना चाहिये,
बल्कि खुशियाँ और प्रेम बाँटकर उपकार करना चाहिए।
अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे देश से आए तो,
करना चाहिये हमें उनका अतिथि की तरह आदर-सत्कार,
पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों ओर हर तरह के लोग रहते हैं,
एक हैं हम, भारत हैं हम वसुधैव कुटुम्बकम्
परिस्थितियों से कभी डरे नहीं हम।
एक है हम, भारत है हम वसुधैव कुटुम्बकम् ।

धरती एक परिवार है

वर्षा
बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर

सनातनी होने पर गर्व हुआ
जब से वसुधैव कुटुम्बकम् को जाना जाता है
अब मानता नहीं मैं राष्ट्रीय जाति धर्मों को
जब से जीवन के इस आधार को माना जाता है
वसुधैव कुटुम्बकम् एक शब्द नहीं
अर्थ "धरती ही परिवार है"
ये हमारे सनातनी धर्म का मूल संस्कार है
यहाँ नहीं होती जाति धर्म की बातें
जिसने विश्व एकता अपनाई है
यह नहीं होती भेद-भाव की बातें
इसने उदार हृदय और मानवता अपनाई है
यहाँ नहीं होती नारी पर बंदिशों की बातें
मानवता को जीने का सही ढंग सिखाया है
कहते हैं जब ईश्वर एक, तो मत एक, तो बात एक,
तो परिवार एक क्यों न हो यदि सत्य समझाया है
गांधी, बिस्मिल-भगत सिंह सबने यह बात सिखाई
हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख, ईसाई आपस में हैं भाई-भाई
वसुधैव कुटुम्बकम् के जरिए हम सभी को
मानवता और एकता की प्रमुख बात समझायीं।

वसुधैव कुटुम्बकम्
सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ. प्रशान्त कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' एक संस्कृत सूत्र वाक्य है, जिसका अर्थ है ''संपूर्ण विश्व एक परिवार है।'' यह विचार समाज की एक ऐसी परिभाषा प्रस्तुत करता है, जो जाति, धर्म, भाषा और अन्य विभाजनों से ऊपर उठकर समस्त मानवता को एकजुट मानती है।

सामाजिक दृष्टिकोण से वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ है :

1. समानता और भाईचारा :
समाज में सभी को समान मानते हुए आपसी प्रेम और सहयोग का वातावरण बनाना। इसमें किसी भी प्रकार के भेदभाव, जैसे जातिवाद, धर्मवाद या लिंगभेद के लिए स्थान नहीं हैं।

2. सह-अस्तित्व :
विभिन्न संस्कृति, धर्म और विचारधाराओं को सहर्ष स्वीकार कर उनके साथ शांतिपूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा।

3. सामाजिक दायित्व :
समाज के हर वर्ग के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना और हर किसी के विकास में योगदान देना। यह विचार सामाजिक उत्थान ओर समान अवसरों की स्थापना पर बल देता है।

4. परस्पर सहयोग :
व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर दूसरों की भलाई के लिए काम करना। इसमें दूसरों की मदद करना, संसाधनों को साझा करना और समाज के हर सदस्य को सशक्त बनाना शामिल है।

5. अहिंसा और करुणा :
दूसरों के प्रति हिंसा से बचना और दया करुणा तथा सहानुभूति का व्यवहार करना।

वसुधैव कुटुम्बकम् का महत्त्व

यह हमें सिखाता है कि हर व्यक्ति एक दूसरे से जुड़ा हुआ है और किसी की भलाई पूरे समाज की भलाई है। समाज में शांति और सामंजस्य बनाए रखने का मूलमंत्र प्रदान करता है।

यह विचार न केवल मानव समाज तक सीमित है, बल्कि सभी जीव-जंतुओं और प्रकृति के साथ भी प्रेम और सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

समाज में वसुधैव कुटुम्बकम् का व्यावहारिक उपयोग

1. सामुदायिक कार्य समाज के कमजोर और जरूतमंद वर्गों की मदद करना।
2. धर्म और संस्कृति के प्रति सम्मान : हर धर्म संस्कृति की मान्यताओं को समान रूप से आदर देना।
3. समान अवसर : शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सबको समान अवसर उपलब्ध कराना।
4. वैश्विक दृष्टिकोण : समाज को एक सीमित दायरे से निकालकर वैश्विक परिवार के रूप में देखना।

निष्कर्ष

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' सामाजिक जीवन का एक आदर्श है, जो हमें प्रेम, सह-अस्तित्त्व और दायित्व की भावना सिखाता है। यह विचार समाज को शांति, समृद्धि को अपने जीवन में अपनाते हैं, तो हम न केवल व्यक्तिगत रूप से बेहतर बनते हैं, बल्कि एक आदर्श समाज की रचना में भी योगदान करते हैं।

धर्म हमारा एकता है

ज्योति कुशवाहा
बी.एस-सी., प्रथम सेमेस्टर

हिन्दु-मुस्लिम सिक्ख-ईसाई आपस में भाई-भाई,
गांधी-बिस्मिल-भगत सिंह सबने यह बात हमें सिखाई।
सर्वधर्म है एक समान, न बात एक महान की करते हैं।
बात हम मजहब की नहीं, बात हम इंसान की करते हैं।

दुःख दर्द पीड़ा

दुःख दर्द का ना हो साया जिसमें खुशियों के साथ
हो एक शहर हमारा।

वसुधैव कुटुम्बकम्
भारतीय दर्शन शास्त्र

ललित कुमार
प्रवक्ता, डी.एल.एड. विभाग

यह सिद्धान्त भारतीय दर्शन में प्रतिपादित है।

भावनात्मक विचार शैली हमारी संस्कृति का आदर्श रहा है जैसा कि हम पीछे भी पढ़ते, सुनते आये हैं। 'अतिथि देवो भव' अर्थात् आने वाला व्यक्ति किसी धर्म या समुदाय का हो उसका स्वागत और सम्मान करना चाहिये। यह सोच स्वच्छ हृदय के विचार पर निर्भर करती है। जब-जब संस्कृति और सभ्यता का आदान-प्रदान होता है। तब-तब उच्च विचार शैली ही स्थायी रह पाती है। भाषा रीति रिवाज बदलते रहते हैं, किन्तु स्थायी भावशैली पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती है। इसमें प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक की कलाओं का भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तर काल से मानव हृदय में उत्पन्न सुरक्षा की दृष्टि से पत्थरों के औजार या फिर नव पाषाण से पहिए की खोज, अग्नि की खोज मानव समाज के लिए किए गए कार्य हैं। किसी के पास रामायण, भागवत पुराण, महाभारत गीतगोविन्द रागमाला आदि के चित्रों का संकलन कला का भी उद्देश्य मानव कल्याण के लिए ही किए गए कार्यों का ही महत्त्वपूर्ण योगदान है। चित्रकलाओं के इतिहास का पुर्ननिर्माण एक अभूतपूर्व कार्य है। बौद्ध के माध्यम से समाजिक कार्य करना, मुगल शासकों द्वारा किए गए कार्यों, बंगाल स्कूल के माध्यम से कला को पुर्नजीवित करना, कला के माध्यम से लोगों द्वारा किए गये संसार के श्रेष्ठ कार्यों में योगदान के बारे में जानकारी देना आदि परन्तु जब जनसंख्या कम होती है। उस समय ईर्ष्या और द्वेष कम होते हैं। अतः यह विचार शैली का जन्म कबीलों के समय प्रतिपादित हुआ था। उस समय अज्ञान के कारण कबीलों में आपसी युद्ध होते रहते थे। अतः उस समय के विचार को ही भावनात्मक इस विचार को जन्म दिया, ताकि जनसंख्या की क्षति न हो। पन्द्रहवीं शताब्दी से पहले जब कागज नहीं था। उस समय उपनिषद प्रथा का जन्म हुआ था, ताकि गुरु अपने शिष्यों को उन मूलभूत सिद्धान्तों और विचारों को कंठस्थ करा सकें। देश काल परिस्थिति यह तीन पूरक तत्त्व कार्य करते हैं और निश्चित करते हैं। कार्य होने न होने की दशा और दिशा को जब मनुष्य स्वेच्छा या किसी परिस्थिति के कारण नए समाज या समुदाय के सम्पर्क में आता है, तब वह कुछ न कुछ नया सीखता है। प्रकृति स्वयं उन स्थितियों को उन्पन्न करके ऐसे मार्ग प्रशस्त करती है। इस संसार को दिशा-दशा का बोध प्रकृति ही निश्चित करती है। हमारे न चाहते हुए भी प्रकृति अपना स्वरूप बदलती रहती है। जैसे-कहाँ क्या होगा, यह स्वतः सिद्ध है। मानव की महत्त्वाकांक्षा प्रकृति को मजबूर करती हैं, आयदाताओं के लिए। जब मनुष्य आवश्यकता से अधिक किसी भू-सम्पदा का दोहन करता है तो उस समय प्रकृति मार्ग बदलती है। जब मनुष्य मांसाहारी प्रवृत्ति की ओर बढ़ जाता हैं तब-तब गांधी, महावीर, बुद्ध जैसे दार्शनिकों का जन्म होता है, जैसा कि हमारे धर्म ग्रन्थों में वर्णित है कि कितने जलचर जीव व कितने थलचर जीव और कितने नभचर जीव होने चाहिए। उस समय वही सन्तुलन आवश्यक है। जिस तरह परागण (निशेचन) क्रिया को प्रकृति स्वयं निर्धारित करती है। हमारे समाज में मानवता को सर्वोपरि मान कर विचारों का जन्म होता है। अर्थात् सम्पूर्ण वसुन्धरा को अपना मानकर हमारे मनीषियों ने यह विचार समाज को दिये हैं।

हम सभी को मनीषियों एवं महान लोगों के आदर्शों का सम्मान करना चाहिए, साथ ही हृदय में सभी के प्रति प्रेम, सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

मेरा देश
मेरी पहचान

प्रदीप राठौर
बी.एस-सी. पंचम सेमेस्टर

इस देश से ही मेरी पहचान है। यही मेरा दिल यही मेरी जान है।।
यह मेरा भारत जो कि महान है। यहाँ रहती है कौम रहते पठान है।।
हाँ यह मेरा हिंदुस्तान है।
लड़ते हैं सुबह, एक होते हर शाम हैं।।
उगती हर फसल उगते यहाँ धान हैं।
तभी तो मेरा भारत देश महान है।।
हाँ यह मेरा देश महान है।
कोई आँख उठाकर देखे भी तो कैसे
इसकी रक्षा में खड़े नौजवान हैं। हाँ मेरा देश महान है।

भारत, स्वामी विवेकानन्द एवं विश्व-बन्धुत्त्व

मेघा अरोरा
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग

विश्व-बन्धुत्त्व की जब बात होती है, तो पूरे विश्व में भारत को सर्वोपरि माना जाता है, क्योंकि स्वामी विवेकानन्द द्वारा अमेरिका के शिकागों में 11 सितम्बर 1893 को विश्व सर्वधर्म सभा में दिए गए यादगार उद्बोधन की स्मृति में विश्व बन्धुत्त्व दिवस मनाया जाता है। इससे सत्य, अहिंसा, सेवा, त्याग और प्रेम की भावना को पूरे विश्व में जगा सकते हैं। अगर सम्पूर्ण विश्व के मानव में बन्धुत्त्व भाव हो, तो भारत को जगद्गुरू बना सकते हैं। इस भावना के साथ सम्पूर्ण विश्व हेतु मंगलकामना।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कच्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

संसार में सब सुखी रहें, सब निरोग या स्वस्थ रहें, सब भद्र देखे और विश्व में कोई दुःखी न हो। ''वसुधैव कुटुम्बकम्" एक व्यापक मानव मूल्य है। व्यक्ति से लेकर विश्व तक इसकी व्याप्ति है- व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र सभी विश्व परिधि में समाहित हैं। यह वैयक्तिक मूल्य भी है और सामाजिक मूल्य भी, राष्ट्रीय मूल्य भी है और अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य भी, राजनीतिक मूल्य भी है और नैतिक मूल्य भी, धार्मिक और प्रगतिशील मूल्य भी है। यदि इन सबका एक शब्द में कहना चाहें, तो हम कह सकते हैं कि यह मानवीय मूल्य है। इस मूल्य को सच्चे मन से अपनाए बिना मानवता अधूरी है, मनुष्य अधूरा है, धर्म और संस्कृति अधूरे हैं तथा राष्ट्र और विश्व भी अधूरा है। यदि हम विश्व को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो हमें विश्व-बन्धुत्त्व की भावना को आत्मसात् करना होगा। 11 सितम्बर 1893 से 17 दिनों तक चलने वाले विश्व धर्म महासभा का प्रथम दिवस था, जहाँ स्वामी जी ने सबका हृदय जीत लिया था। स्वामी जी ने पहली बार विश्व के सामने पंथ, सम्प्रदाय, जाति, रंग, प्रान्त जैसे संकीर्ण और संकुचित बन्धुत्त्व से भिन्न एक नवीन विश्व-बन्धुत्त्व का सन्देश दिया था, जो सनातन धर्म के ग्रन्थों का सार है।

स्वामी जी अपने भाषण में कहते हैं कि ''मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति दोनों की ही शिक्षा दी है।"

हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, बल्कि हम सभी धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं। जहाँ एक तरफ दुनिया भर से आए हुए यहूदी, इस्लाम, बौद्ध, ताओ, कनफ्यूशियस, शिन्तो, पारसी, कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेट इत्यादि धर्मों के अनेक प्रतिनिधि अपने धर्म को श्रेष्ठ स्थापित करने के लिए आए थे, वहीं दूसरी ओर स्वामी जी के सबको स्वीकार करने वाले सन्देश ने वहाँ उपस्थित सभी मनुष्यों को सोचने पर मजबूर कर दिया था।

स्वामी जी आगे कहते हैं कि ''मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूँ जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के उत्पीड़ित और शरणार्थियों को अपने यहाँ शरण दी। मुझे आपको यह बताते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट अंश को स्थान दिया था, जिन्होंने दक्षिण भारत में आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मन्दिर रोमन हमलावरों ने तहस-नहस कर दिया था। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ, जिसने पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और लगातार अब भी उनकी मदद कर रहे हैं।"

परमपूज्य गुरूदेव ने भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श सामने रखते हुए कहा है कि एक विश्व, एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक आचार और एक संस्कृति के आधार पर समस्त मानव प्राणी एकता के सूत्र में बधेंगे। विश्व बन्धुत्त्व की भावना उभरेगी। वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श सामने रहेगा, तब देश, धर्म, भाषा, वर्ण आदि के नाम पर मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवार खड़ी न की जा सकेगी। अपने वर्ग के लिए नहीं, समस्त विश्व के हित साधन की दृष्टि से समस्याओं पर विचार किया जाएगा।

वसुधैव कुटुम्बकम् की आवधारणा शाश्वत तो है ही, यह व्यापक एवं उदार नैतिक मूल्यों पर आश्रित भी है। इसमें किसी प्रकार की संकीर्णता के लिए कोई जगह नहीं है। सहिष्णुता इसकी अनिवार्य शर्त है। वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप समय और दूरी के कम हो जाने से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के प्रसार की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। फलतः समस्त देश अब यह अनुभव करने लगे हैं कि पारस्परिक सहयोग, स्नेह, सद्भाव, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और भाईचारे के बिना उनका काम न चलेगा। संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना, निर्गुट शिखर सम्मेलन, दक्षेश, जी-15 आदि वसुधैव कुटुम्बकम् के ही नामान्तर-रूपान्तर है।

भारत को (विश्व पटल पर) अपना सुयोग्य स्थान स्थापित करना है और एक सुदृढ़ राष्ट्र बनकर उभरना है। उसकी शक्ति दूसरों के विनाश अथवा प्रभुत्व प्राप्त करने में नहीं परन्तु यह मानवता में शान्ति लाने में है। भारत ने विश्व की सभ्यताओं को अपने कृतित्त्व से सिखाया कि अस्तित्त्व की एकात्मता को केन्द्र में रखते हुए कैसे विविधता का सम्मान किया जाता है। भारत का यह कार्य विश्व-बन्धुत्त्व की स्थापना का सूत्रपात करेगा जिसके लिए हम सब अनवरत कार्य कर रहे हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् : एकता और शांति का संदेश

डॉ. चेतन सैनी
अस्सिटेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय ■ सह-सम्पादक (ज्ञान पुष्प)

वसुधैव कुटुम्बकम् एक प्राचीन भारतीय दर्शन है,जिसका अर्थ है ''पूरा विश्व एक परिवार है''। यह विचार भारतीय संस्कृति और अध्यात्म में बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि पूरे विश्व में एकता और शांति स्थापित करने के लिए हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ जुड़ना चाहिए। वर्तमान समय में पूरा विश्व गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। कुछ देश आपस में युद्धकर रहे है जो कि विश्व शांति के लिए बहुत बड़ा खतरा है और इसके घातक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। इससे हजारों लोगों की मौत हो चुकी है और बेकसूर लोग भी मारे जा रहे हैं। इसमें रूस और यूक्रेन का लम्बे समय तक चलने वाला युद्ध और हाल ही में इजराइल और ईरान जैसे देशों के बीच युद्ध शामिल है। इनके साथ छोटे-छोटे देश भी मिलकर युद्ध कर रहे है। अगर इसको जल्द शांत नहीं कराया गया तो हम तृतीय विश्व युद्ध की ओर धीरे-धीरे बढ़ जायेंगे,जो कि विश्व की संपूर्ण मानवता के लिए खतरा है। अफगानिस्तान में भी आंतरिक समस्या उत्पन्न हुई और जिसका परिणाम असंवैधानिक तरीके से सरकार बनाना हुआ, जिससे सैकड़ों लोगों की मौत हुई और सरकारी सम्पत्तियों का नुकसान हुआ। ऐसा ही कुछ बांग्लादेश में हुआ, वहाँ भी इसी तरीके से कृत्य किया गया, इसी प्रकार से अधिकतर देशों में आंतरिक और बाहरी संघर्ष चल रहे हैं। विश्व पटल पर भारत शांति के लिए अग्रणी भूमिका निभा रहा है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्त्व में सभी देशों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के साथ एकता, समरसता, अखंडता और शांति के लिए प्रयास कर रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा उपनिषद और पुराणों में पाई जाती है। यह दर्शन भगवान कृष्ण द्वारा भी प्रतिपादित किया गया था, जिन्होंने गीता में कहा, ''सर्वभूतस्थितं यो मां भजति त्वम्'' यानि जो मुझे सब जगह व्याप्त देखता है, वही मेरा सच्चा भक्त है। भारत ने अपनी समृद्धि और प्राचीन सभ्यता के साथ संपूर्ण देश के सामने जी 20 की मेजबानी करते हुए एक शक्तिशाली उपाय प्रस्तुत किया ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' जो कि जी 20 का मुख्य विषय भी था, जिसका अर्थ होता है एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य अर्थात् ''दुनिया एक परिवार है''।

आध्यात्मिक महत्त्व : वसुधैव कुटुम्बकम् का आध्यात्मिक महत्त्व बहुत गहरा है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि हम सभी एक ही परमात्मा की संतान है, और हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ जुड़ना चाहिए। यह दर्शन हमें एकता, प्रेम और करुणा की ओर ले जाता है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व को मानवता का पाठ सिखाती है और सभी की मदद करना और प्यार से रहना सिखाती है। इससे प्रभावित होकर वर्तमान समय में अन्य देशों के लोग भी भारतीय संस्कृति अपना रहे हैं और उसके साथ ही अपना जीवन शांति से व्यतीत कर रहे हैं।

सामाजिक महत्त्व : वसुधैव कुटुम्बकम् का सामाजिक महत्त्व भी बहुत है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि हमें अपने समाज में एकता और शांति स्थापित करने के लिए काम करना चाहिए। यह दर्शन हमें सिखाता है कि हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना चाहिए। भारत में सामाजिक पृष्ठभूमि पर बहुत कार्य करने की जरूरत है क्योंकि यहाँ जातिगत आधार पर वर्तमान समय में भी शोषण किया जाता है जिसको खत्म करने की जरूरत है। भारत के लोग सैकड़ों जातियों में बँटे हुए हैं, जिससे भेदभाव की स्थिति पैदा होती है। इसलिए हम सबको मिलकर ये भेदभाव समाप्त कर सबको एक माला में पिरोने का काम करना होगा और भारत को एकता के सूत्र में पिरोना होगा। वास्तव में तभी वसुधैव कुटुम्बकम् का सपना साकार होगा।

वैश्विक महत्त्व : वसुधैव कुटुम्बकम् का वैश्विक महत्त्व भी बहुत है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि हमें वैश्विक एकता और शांति स्थापित करने के लिए काम करना चाहिए। यह दर्शन हमें सिखाता है कि हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना चाहिए। वर्तमान समय में सभी देशों को विश्व शांति के लिए संकल्प लेना चाहिए और आपात्काल की स्थिति में एक दूसरे की मदद भी करनी होगी। हमारा प्यारा भारत देश इस भूमिका में सबसे आगे खड़ा रहता है और जब भी किसी देश में समस्या उत्पन्न होती है तो सबसे पहले उसकी मदद करने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष : वसुधैव कुटुम्बकम् एक प्राचीन भारतीय दर्शन है, जो हमें एकता, प्रेम और करुणा की ओर ले जाता है। यह दर्शन हमें सिखाता है कि हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ जुड़ना चाहिए। यह दर्शन हमें वैश्विक एकता और शांति स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। भारतीय संस्कृति हमको परिवार में एक साथ मिलकर प्यार से रहना सिखाती है और एक दूसरे की मदद करना सिखाती है। अपनी संस्कृति के माध्यम से वर्तमान परिवेश में भारत विश्व का नेतृत्त्व करने की श्रेणी में खड़ा है। भारत पूरे विश्व को शांति का संदेश देने के साथ एकता और सद्भावना का पाठ पढ़ा रहा है और संगठित रहने का संदेश दे रहा है।

वसुधैव कुटुम्बकम् : वैश्विक शान्ति और एकता का संदेश

डॉ. किरन लता
असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग

वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीय जीवन दर्शन का सार वाक्य है। प्रत्येक भारतीय इस पर गर्व करता है। इसका अर्थ ''सम्पूर्ण'' विश्व एक परिवार है'' इस विचार की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, वसुधैव कुटुम्बकम् पंचतंत्र नामक ग्रंथ से लिया गया है, इसके रचियता **आचार्य विष्णु शर्मा** हैं। ''सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है'' यह सिद्धान्त प्राचीन भारतीय दर्शन का अभिन्न हिस्सा है और आज भी दुनिया के लिए प्रासंगिक है, इस दर्शन का मूल स्रोत महाउपनिषद् में पाया जाता है, जो वैदिक साहित्य का हिस्सा है, इस विचारधारा का संदेश है कि सम्पूर्ण मानवता चाहे वह जाति, संस्कृति, धर्म, भाषा या भौगोलिक सीमाओं में विभाजित हो अन्ततः एक ही परिवार का हिस्सा है। यह अवधारणा न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक एकता की बात करती है, बल्कि आपसी प्रेम, करूणा और सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को भी प्रोत्साहित करती है। विश्व बन्धुत्व की भावना को मजबूत करने वाले इस सूत्र वाक्य के मूल तथा भारतीय दर्शन की गहराई को दुनिया ने समझ लिया है और इसे बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं। इन प्रयासों ने वसुधैव कुटुम्बकम् को विश्व भर में तेजी से लोकप्रिय बनाने का काम किया है इसका प्रभाव हाल ही में आयोजित हुए **G-20 (Group of Twenty)** (जो कि दुनिया के 20 बड़े देशों का समूह है) सम्मेलन में देखने को मिला जिसमें दुनिया भर के देशों के प्रतिनिधि भारत में आये और यह विश्व बन्धुत्व की भावना को एक परिवार की तरह देखने की बात करता है। **G-20** शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संबोधन में कहे गये वक्तव्य की वैश्विक स्तर पर चर्चा हुई जब उन्होंने कहा कि हमारा देश भारत परम्परा, आध्यात्म ओर आस्था की भूमि है, यहाँ दुनिया के प्रत्येक धर्म ने सम्मान पाया है, प्रधानमंत्री ने वैश्विक स्तर पर ग्लोवल वार्मिंग की समस्या और उसके समाधान के प्रयास की चर्चा करके भारत के वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को रेखांकित किया हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् में दर्शन को विकसित करना :

■ दुनिया एक परिवार है, जहाँ यह बताया गया है कि हम दर्शन का अनुसरण कैसे कर सकते हैं। मत भेदों को भूलें, लोग, संस्कृति और मान्यताओं में विविधता का सम्मान करें।

■ दया की भावना फैलाएँ, लोगों के साथ मिल-जुलकर प्रेम से रहें, सकारात्मक बने और जरूरतमंदों की सहायता करें।

■ कल्याण कार्य में नेतृत्त्व करें, अपने व्यवहार के माध्यम से यह एक उदाहरण बने कि आप सम्पूर्ण मानवता की एकता में विश्वास करते हैं।

■ दूसरों को शिक्षित करें व आपके पास जो भी ज्ञान है उसे दूसरों में बाँटे, हर कोई आपसे जुड़ा हुआ है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें।

■ वसुधैव कुटुम्बकम् हमें न केवल अपने लिए बल्कि पूरे विश्व की भलाई के लिए जिम्मेदारी लेना सिखाता है, यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति जो करता है उसका प्रभाव सभी पर पड़ सकता है, इसलिए हम सभी को ऐसे तरीके से कार्य करने चाहिए जिससे सभी को लाभा पहुँचे।

■ वसुधैव कुटुम्बकम् का विचार आज बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह इस बारे में बात करता है कि दुनिया में हर कोई एक दूसरे से कैसे जुड़ा हुआ है, चाहे वह कहीं से भी आये हों या किसी भी चीज में विश्वास करते हों।

■ वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना में लोग एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और करुणा का एहसास करके शान्ति को बढ़ावा देते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश : इसका मुख्य संदेश दुनिया को भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय सीमाओं से परे एक वैश्विक परिवार के रूप में देखना है, यह व्यक्तियों के बीच एकता, प्रेम, करुणा और सम्मान को प्रोत्साहित करता है। यह अवधारणा मानवता पर जोर देकर विविधता को महत्त्व देती है। व्यक्तियों में सद्भाव और मिलजुल कर रहने की भावना को बढ़ावा देती है। यह सेवा भाव को भी बढ़ावा देती है जो कि न केवल समाज के लिए लाभकारी है, बल्कि हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जब हम दूसरों की सेवा करते हैं तो हमारे भीतर करुणा सहानुभूति और संतोष का भाव उत्पन्न होता है जिससे हमारा मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।

अध्ययनों से पता चलता है कि सेवा के कार्यों में सम्मिलित लोग तनाव, अवसाद और चिन्ता जैसी मानसिक समस्याओं से कम प्रभावित होते हैं। सेवा का कार्य हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और हमें संतुलन और शान्ति प्रदान करता है।

निष्कर्ष : वसुधैव कुटुम्बकम् हमें यह सिखाता है कि सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है और हम सभी इसके सदस्य हैं। यह विचार न केवल भारतीय संस्कृति की गहराई को दर्शाता है बल्कि यह आज के वैश्विक संदर्भ में भी अत्यन्त प्रासंगिक है। विश्वव्यापी भाई-चारा न केवल व्यक्ति और सामाजिक सम्बन्धों में महत्त्वपूर्ण है बल्कि यह आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय चुनौनियों के समाधान में भी सहायक है।

आज दुनिया में जहाँ भिन्नताओं के कारण विभाजन और संघर्ष होते हैं, वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धान्त एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकता है यह हमें एक दूसरे का सम्मान, सहायता करने और बेहतर समाज का निर्माण करने की प्रेरणा देता है। वसुधैव कुटुम्बकम् न केवल एक दर्शन है बल्कि यह एक ऐसा विचार है जो हमें मानवता, एकता और सामूहिकता की ओर ले जाता है, जिससे हम सभी का भविष्य सुरक्षित, शांतिपूर्ण और समृद्ध हो सके।

वसुधैव कुटुम्बकम् एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य।

वसुधैव कुटुम्बकम् : भारतीय विरासत

माधुरी सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

भारत का परिचय हमारे वेदों से मिलता है। इसका संक्षिप्त और सरल जान हमें उपनिषदों से मिलता है। भारतीय परम्परा के अनुसार 'धरती एक परिवार है' की भावना समस्त प्राणी जगत की रक्षा, सहायता एवं पोषण की भावना को दर्शाती है। यही भाव हमारे विभिन्न उपनिषदों एवं सनातन ग्रन्थों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सूत्र के रूप में लिपिबद्ध किया गया।

इस सूत्र को हम विभिन्न आयामों के साथ जोड़ सकते है- जैसे संसार की सांस्कृतिक विरासत हो या सामाजिक जीवन का अनुनय विनय या फिर राजनीतिक एवं वैज्ञानिक सम्बन्ध हों। जब धरती पर किसी भी देश या द्वीप से मानव दूसरे देश या द्वीप में पहुँचा तो उसने वहाँ से कुछ विचार, सम्पदा एवं ज्ञान लिया और अपना दिया, यहीं से इस परम्परा का विस्तार होता है।

सांस्कृतिक जीवन में वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव पूर्ण रूप से संसार के सभी देशों में देखने को मिलता है। भारत में विभिन्न देशों के यात्री प्राचीनकाल से आते रहे हैं कुछ व्यापार के लिए तो कुछ यहाँ की संस्कृति को जानने के लिए, सभी ने भारत के विचार एवं संस्कृति को जाना और अपनाया भी तथा अपनी संस्कृति के बारे में भी भारत को अवगत कराया। 1883 में विश्व पटल पर हमारी धर्म व्यवस्था एवं संस्कृति को प्रभाव पूर्ण ढंग से स्वामी विवेकानन्द ने विश्व धर्म सम्मेलन में रखा। सभी को जब स्वामी जी ने जब माई सिस्टर एण्ड ब्रादर के नाम से संबोधित किया तो यही भाव सूत्र है।

राजनीतिक व्यवस्था में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव अन्तर्राष्ट्रीय भारत ने हमेशा दूसरे देशों के साथ मित्रता एवं भाईचारे का भाव ही रखा और दूसरे देशों ने भी सभी देशों के साथ ऐसा ही भाव रखने का समर्थन किया, इसका जीवन्त उदाहरण रूस, यूक्रेन युद्ध में भारत का पक्ष है। भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सीमा विस्तार का पुरजोर विरोध करता है। हमारे देश ने कोरोना काल मे भी पूरे संसार के देशों को अपना मानकर सभी देशों की यथा सम्भव सहायता की थी और इसको बार-बार प्रधानमंत्री जी द्वारा कहा जाना कि विभिन्न विश्व विकासोन्मुख संगठन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को मजबूती प्रदान करता है। वह चाहे जी-20 हो, वृैक्ट सम्मेलन या यूनेस्को हो, यूनीसेफ हो, विश्व शान्ति संगठन हो, विश्व बैंक हो, सभी का भाव यही है।

वैज्ञानिक अनुसंधान में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विचारधारा पूरी पारदर्शिता के साथ दिखाई देती है क्योंकि जब भी कोई देश किसी भी वस्तु का आविष्कार करता है तो उसका लाभ सभी देशों को मिलता है। विभिन्न देश आपस में मिलकर कुछ अनुसंधानों को पूरा करते हैं जैसे धरती से चाँद पर जाना, मंगल पर जाना, अन्तरिक्ष में सैटेलाइट लगाना, सभी हमारी 'धरती एक परिवार है' के भाव को दर्शाते हैं, फिर वह चाहे चिकित्सा हो, भौतिकी हो, कम्प्यूटर टैक्नोलॉजी हो, इंजीनियरिंग हो या अन्य वैज्ञानिक तकनीकियाँ हो, सभी को इसका फायदा मिलता है।

इस भाव को पिछले डेढ़ दशक से भारत ने हर क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व को सहयोग एवं अपने ज्ञान को प्रभावी ढंग से रखा है। यही कारण है कि वर्तमान में भारत विश्व में अपनी पहचान शान्ति सम्पन्न देश के रूप में करा रहा है, जो विश्व को वैश्विक समस्या के लिए एक मंच पर लाकर उनका हल मिलकर खोजने एवं समस्याओं को न बढ़ने देने के कारगर कदम उठाने के लिए आवाज दे रहा है, वह चाहे ग्लोबिंग वार्मिंग हो या जल संकट या आंतकवाद।

हमारी संस्कृति का यही संदेश है कि-

सर्वेशम स्वास्तिभवतु, सर्वेशम शांति भवतु।
सर्वेश पुरनाम भवतु, सर्वेशय मंगल भवन्तु।।

वसुधैव कुटुम्बकम् हमारी पहचान

करीना
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा
हमको विश्व में अलग पहचान दिलाती है।
ये संस्कृति भारत की सदियों से
पीढ़ी दर पीढ़ी चलती जाती है।
हम न माने किसी को यहाँ गैर
सबको अपने दिल में बसाते हैं।

कोई धर्म हो या कोई जाति
यहाँ सब प्रेम भाव से रहते हैं।
प्रीत की रीत भारतवासी एक होकर,
सभी धर्मों के उत्सव हम प्रेम से मनाते हैं।
यह वसुधैव एक कुटुम्बकम् हमारा है।
सबको मिल-जुलकर सबको रहना सिखाया है।

वसुधैव कुटुम्बकम् में भारतीय संस्कृति और परम्परा की भूमिका, सारा विश्व एक परिवार

सोनू कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

वसुधैव कुटुम्बकम् के दार्शनिक आधार हमें इस विचार को अपनाने के लिए आमंत्रित करते हैं कि विविधता मानव अनुभव को समृद्ध करती है और एकता को बढ़ावा देती है। हर संस्कृति, परम्परा और विश्वास प्रणाली अद्वितीय अन्तर्दृष्टि और मूल्य प्रदान करती है, जो मानव सभ्यता की समृद्धि में योगदान देती है।

वसुधैव कुटुम्बकम् विश्व को क्या संदेश देती है, इसका भारतीय समाज में क्या महत्त्व है? वसुधैव कुटुम्बकम् का नैतिक आयाम उन सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर देता है, जो सांस्कृतिक और भौगोलिक सीमाओं से परे है। सहानुभूति, करुणा और आपसी विश्वास तथा सम्मान को बढ़ावा देकर हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं, जहाँ दया और करुणा हमारे आपसी सम्बंधों के मार्गदर्शक सिद्धान्त बन जाएँ, जिससे गहरी समझ और विकसित हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् का श्लोक है।
अयं निज: परोवेति ग्णना लघुचेतसाम्,
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्।

इस श्लोक का अर्थ है कि छोटे चित्त वाले लोग यह सोचते हैं कि यह मेरा है और वह पराया है, लेकिन उदार हृदय वाले लोगों के लिए पूरी धरती ही एक परिवार है।

वसुधैव कुटुंबकम के बारे में कुछ बातें:

यह एक संस्कृत वाक्यांश है, जिसका अर्थ है, पूरा विश्व एक परिवार है।

- यह सनातन धर्म का मूल संस्कार और विचारधारा है।
- यह महाउपनिषद् समेत कई ग्रन्थों में लिपिबद्ध है।
- यह भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है।
- यह भारतीय संस्कृति और दार्शनिक धार्मिक पाठ्यक्रमों में अहम भूमिका निभाता है।
- यह मानव एकता और सद्भावना को बढ़ावा देने का संदेश देता है।
- यह सभी देशों के परस्पर जुड़ाव और एक साथ मिलकर काम करने की जरूरत पर जोर देता है।
- यह वैश्विक एकता और सहयोग के महत्त्व को रेखांकित करता है।
- साल 2023 में जी-20 शिखर सम्मेलन का विषय था।
- यह व्यावहारिक रूप से पंचतंत्र की तरह है।
- वसुधैव कुटुम्बकम् का सम्पूर्ण चिंतन हिन्दू दर्शन का एक अभिन्न अंश है।

भारत : विविधता में एकता

अभिषेक आर्य
बी.सी.ए., प्रथम सेमेस्टर

साहित्यिक रूप से संस्कृत एक समृद्ध भाषा है। इसी भाषा से एक महान विचार को उत्पत्ति हुई है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' जिसमें वसुध का अर्थ है पृथ्वी, और कुटुंब का अर्थ है, ''परिवार'' अर्थात् पूरी पृथ्वी ही परिवार है, इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणी पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, मनुष्य एक ही परिवार का हिस्सा है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ है कि पूरी दुनिया आपस में जुड़ी हुई है और सभी लोग एक वैश्विक परिवार का हिस्सा हैं। यह कई मूल्यों को बढ़ावा देता है, जिसमें एकता, सहयोग और यह विचार कि हमें सभी से दया और सहानुभूति से पेश आना चाहिए, उनकी राष्ट्रीयता जाति या धार्मिक विभिन्नता को सम्मान और बढावा देकर एक ऐसा समाज बना सकते है, जहाँ दया और करुणा हमारे आपसी संबंधों में मार्गदर्शक सिद्धांत बन जाए, जिससे हमारा समाज और समझ विकसित हो।भारत की एकता का पहला सूत्र इसकी भू-राजनीतिक एकता है। भारत अपनी भौगोलिक एकता के लिए जाना जाता है जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी और दूसरी ओर महासागरों तक फैली हुई है, राजनीतिक रूप में भारत एक संप्रभु राज्य है। लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के मानदंडों द्वारा एक ही राजनीतिक संस्कृति साझा की जाती है।

इस प्रकार भारत एक एकीकृत सांस्कृतिक भौगोलिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समानता के ढाँचे के भीतर बहु सांस्कृतिक स्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है।

रंग अनेक

डॉ. शिवानी पिप्पल
विभागध्यक्ष, प्रबन्धन विभाग

अनेक हैं वाणी, अनेक है रंग।
है अनेक अपने ही ढंग।।
कोई बैठा कुर्सी पर।
तो कोई सोये धरती पर।।
किसी के घर हैं महल समान।
तो किसी के सिर ना छत भर।।
किसी की थाली में है पकवान।
तो कोई सोये भूखी जबान।।
इस अनेकता में भी जो ढूँढ़े प्यार,
ऐसा है अपना देश महान।।

एक ही माटी से हैं जन्मे।
सबका ही है खून लाल।।
मिलजुल कर रहने से।
बन जायेंगे सब एक ढोल।।
सरहदें तो इंसानों की खींची लखीरें हैं।
पंक्षियों से सीखो एक होने का ज्ञान।।
न होगी कोई मजबूरी।
न होगी बंदिशें कोई ।।
एक होगा जब ये जग अपना।
खुल जायेंगे द्वार स्वर्ग समान।।

वसुधैव कुटुम्बकम् की आवश्यकता

सपना
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

प्रस्तावना- वसुधैव कुटुम्बकम् एक संस्कृत शब्द है। जिसमें वसुधा का मतलब पृथ्वी और कुटुम्बकम् का मतलब परिवार होता है अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ सम्पूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है।

यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है तथा इसे G20 लोगो में भी दर्शाया गया है।

उद्देश्य- वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन धर्म का मूल संस्कार है। जो महाउपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिपिवद्ध है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को जीवन के दर्शन के आसान तरीके से समझाना है, जिससे कि बच्चे व युवा आगे चलकर एक अच्छे और समझदार व्यक्ति बन सकें और एक दूसरे के विकास में सहायक बनें, जिससे मानवता फलती-फूलती रहे।

महत्त्व- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की प्रथम इकाई परिवार होता है, परिवार के सभी सदस्य भावात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। कभी-कभी परिवार के सदस्यों के बीच आपसी मतभेद भी होते हैं, परन्तु इन सब के बावजूद वह एक-दूसरे के सुख-दु:ख को समझते हैं तथा हमेशा एकजुट रहते हैं।

आवश्यकता- पृथ्वी महाद्वीपों में, महाद्वीप देशों में और देश राज्यों में विभक्त हैं। भौगोलिक दृष्टि से पृथ्वी का यह विभाजन विकास के लिए आवश्यक होता है परन्तु प्रत्येक स्तर के विभाजन के साथ ही मनुष्य की संवेदनाएँ भी बँट जाती हैं। आज एक सामान्य व्यक्ति की प्राथमिकता का क्रम परिवार, मोहल्ला से शुरू होकर देश पर खत्म हो जाता है।

आज की दुनिया में राष्ट्रवाद हावी हैं, इससे व्यक्ति केवल अपने राष्ट्र के बारे में ही सोचता है, सम्पूर्ण मानवता के बारे में नहीं। यही कारण है कि दुनिया को दो विश्वयुद्धों का सामना करना पड़ा है और रूस तथा यूक्रेन का युद्ध इसके नवीन उदाहरण है।

उपसंहार- आज पूरा विश्व अलग-अलग समूहों में बँटा हुआ है, जो अपने-अपने अधिकारों के प्रति सजग है, परन्तु देखा जाए तो सब का उद्देश्य अपने देश का विकास करना ही है। अत: विश्व में शक्ति और सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने के लिए "वसुधैव कुटुम्बकम्" की आवश्यकता है। आज भी वसुधैव कुटुम्बकम् भारत की विदेश नीति की नींव है। G20 सम्मेलन में भारत यही सन्देश देना चाहता है कि विश्व की उन्नति तभी सम्भव है, जब सभी देश यह मान ले कि ***वसुधैव कुटुम्बकम्।***

भारत एक पहचान

प्रवीन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रबंधन विभाग

सारे जग में जो अनूठा, वो भारत देश हमारा है।
सभ्यता की एक विशाल, सांस्कृतिक धरोहर प्यारा है।

योग ध्यान और ज्ञान की भूमि, ऋषियों की ये वाणी है।
संस्कृत का अमृत बहता, जो अनादि, जो पुरानी है।

सात रंगों का संगम देखो, हर भाषा का सम्मान है।
धर्म, जाति, रंग से ऊपर,अनेकता में एकता महान है।

ताजमहल की शान निराली, ज्ञान के दीप जलाने वाला।
विश्वगुरु का गौरव पाया, सच, भारत अद्वितीय निराला।

खेतों में उगता सोना, नदियों का अमृत जल है।
विज्ञान, कला, व्यापार में आगे हर दिशा में भारत सफल है।

वसुधैव कुटुंबकम् सिखाया, सद्भावना का संदेश दिया।
शाति, प्रेम और भाईचारा, भारत ने जग को ये दिखाया।

नमन उस भूमि को करते जिसकी माटी में खुशबू है।
भारत, तू है सदा महान पूरा विश्व करता तेरा गुणगान।

तहजीव जैसी वैसी विरासत

दीप्ती वार्ष्णेय
बी.एस-सी. पंचम सेमेस्टर

वसुधैव कुटुम्बकम् सी कही इबादत न मिली,
गंगा–जमुना तहजीब जैसी विरासत न मिली।

यूँ तो वक्त बदला हालातों ने रुसवाई भी की,
मगर ईमान सच्चाई में बनावट न मिली।

तुम्हारी श्रद्धा की जमीन के बहुत नीचे से,
पत्थर पर लिखे मिले मगर काई इबारत ना मिली।

तेरे एहसासों के जंगल में घूम कर देखा,
वीरानियाँ सन्नाटे में बसाहट न मिली।

मेरे मखमली धागों से बनावट न मिली,
हिन्दुस्तानी दिलों सी कही सजावट न मिली।

काशी हो, वृन्दावन हो या फिर रामेश्वरम्,
संवेदनाओं की ऐसी कहीं इमारत न मिली।

मुझे इन्सानियत का हर सबक सिखाने वाली,
दादी की जिन्दगी सी कही कहावत न मिली।

अनेक सभ्यताएँ मिली मगर मेरे जैसी,
संवेदना पर उकेरी हुई लिखावट न मिली।

भाईचारा

मुस्कान
बी.सी.ए. प्रथम सेमेस्टर

भाईचारा एक ऐसी अवधारणा है जो रक्त संबंधों की सीमाओं से परे है। यह वह बंधन है जो व्यक्तियों को जोड़ता है। अपनेपन और समर्थन की भावना पैदा करता है। भाईचारा एक शक्तिशाली शक्ति है जो लोगों को एक साथ ला सकती है, उन्हें चुनौतियों से उबरने और सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है। भाईचारे के माध्यम से, व्यक्ति एक दूसरे से शक्ति, आराम और समझ पाते है, जिससे विश्वास और सौहार्द का माहौल बनता है।

भाईचारे के मूलभूत पहलुओं में से एक दूसरे का ख्याल रखना है। मुश्किल समय में भाई एक साथ खड़े होते हैं। मदद के लिए हाथ बढ़ाते हैं और सांत्वना प्रदान करते हैं। यह पारस्परिक सहायता प्रणाली विकास और व्यक्तिगत विकास की नींव बनाती है। उदाहरण के लिए कहते हैं, यह जानते हुए कि वे युद्ध के मैदान में खतरों का सामना करते समय एक दूसरे पर भरोसा करसकते हैं। यह बंधन न केवल उन्हें सुरक्षित रखता है बल्कि बफादारी की गहरी भावना भी पैदा करता है। भाईचारा व्यक्तियों को उनकी सीमाओं से ऊपर उठने की चुनौती देकर व्यक्तिगत विकास को भी बढ़ावा देता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्: कट्टरता पर प्रहार का शाश्वत संदेश

डॉ. ओबैदर्रहमान
असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग

"वसुधैव कुटुम्बकम्" का अर्थ है, "संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है।" यह विचार भारतीय उपनिषदों से लिया गया है और मानवता, प्रेम और सह-अस्तित्व का संदेश देता है। यह सिद्धांत जाति, धर्म, राष्ट्रीयता और सीमाओं से परे जाकर एकता और समरसता की वकालत करता है।

इसका उद्देश्य यह सिखाना है कि हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि का हो, एक परिवार के सदस्य की तरह है। यह संदेश आज की दुनिया में अत्यधिक प्रासंगिक है, जहाँ कट्टरता और विभाजन ने समाज को प्रभावित किया है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" ऐसा मार्ग दिखाता है जो शांति, सद्भाव और मानवता की ओर ले जाता है।

कट्टरता मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा :

कट्टरता किसी भी रूप में हो-धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक या जातीय, यह समाज को खंडित करती है। यह तर्क और संवाद को दरकिनार कर हिंसा और द्वेष को बढ़ावा देती है। हाल के वर्षों में हमने देखा है कि कट्टरपंथ के कारण देशों के भीतर संघर्ष बढ़े हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी शांति और सद्भाव खतरे में पड़ा है।

कट्टरता का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह व्यक्ति को दूसरों के प्रति सहिष्णु होने से रोकती है। लोग अपने धर्म, विचारधारा या सांस्कृतिक परंपराओं को ही सही मानते हुए दूसरे की मान्यताओं को नकार देते हैं। इस मानसिकता के कारण संवाद की जगह टकराव और हिंसा ने ले ली है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" हमें यह सिखाता है कि हर व्यक्ति, चाहे उसका धर्म, जाति या राष्ट्रीयता कुछ भी हो, एक ही परिवार का हिस्सा है। यह दृष्टिकोण न केवल सहिष्णुता को बढ़ावा देता है, बल्कि अपसी समझ और सहयोग का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

भारतीय परंपरा में यह विचार इस बात पर बल देता है कि "अनेकता में एकता" ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। एक परिवार के सदस्यों की तरह, हमारे मतभेद भी हमें मजबूत बनाते हैं, बशर्ते हम उन्हें सम्मान और करुणा के साथ समझें।

आज जब डिजिटल युग ने दुनिया को और करीब ला दिया है,यह आवश्यक हो गया है कि हम "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को अपनाएँ। सोशल मीडिया और इंटरनेट ने विचारों के आदान-प्रदान को आसान बना दिया है, लेकिन इसके साथ फेक न्यूज और कट्टरपंथी विचारधाराओं का प्रसार भी बढ़ा है।

ऐसे समय में हमें इस मंत्र को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाना होगा।

1. सहिष्णुता को बढ़ावा देना होगा।
2. संवाद और समझ को प्राथमिकता देनी होगी।
3. अहिंसा और प्रेम को अपने कार्य और विचारों में अपनाना होगा।

निष्कर्ष :

"वसुधैव कुटुम्बकम्" न केवल एक आदर्श है, बल्कि एक ऐसी जीवनशैली है जो हर प्रकार की कट्टरता और विभाजन का उत्तर हो सकती है। यदि हम इसे अपने जीवन में अपनाते हैं, तो यह न केवल हमारे समाज में शांति और सद्भाव स्थापित करेगा, बल्कि दुनिया को एक बेहतर और सुरक्षित स्थान बना देगा।

यह मंत्र हमें याद दिलाता है कि सीमाएँ केवल भौतिक होती है। हमारी आत्मा, हमारे विचार और हमारी मानवता किसी भी सीमा से परे है। हमें इसे समझने और दूसरों को इसका महत्त्व समझाने की जरूरत है, ताकि "कट्टरता" का अंत हो और "मानवता" का जीत हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् एक संसार

दिनेश कुमार
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

वसुधैव कुटुम्बकम्, संसार एक है
जहाँ सब एक, प्रेम और स्नेह एक है,
कोई पराया नहीं, कोई गैर नहीं
सब एक ही परमात्मा की संतान हैं
जैसे एक पेड़ की शाखाएँ एक हैं
वैसे भी हम सब एक ही कुल से हैं

जैसे एक नदी की धारा एक है
वैसे ही हम सब एक ही संसार से हैं
तो फिर क्यों भेद, क्यों कलह, क्यों वैर ?
सब एक ही कुटुम्ब के हैं, एक ही घैर
वसुधैव कुटुम्बकम्, यह संसार एक है,
जहाँ प्रेम, करुणा और सदभाव एक है।

रिश्तों की मिठास

विवेक सागर
बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

दुनिया एक घर है, युद्ध का मैदान नहीं,
हर दिल में, एक परिवार सीलबंद है।
ऊँचे पहाड़ों और चौड़े समुद्रों के बीच,
हमारी नसों में, वही नदियाँ बहती हैं।
एक माँ की लोरी, एक पिता का प्यार
दूर और पास दोनों जगहों पर गूँजता है।
जो हाथ कटाई करते हैं, जो बोते हैं,
शांति के लिए काम करते हैं, दुख के बीज नहीं।
सीमाएँ खींची हुई हैं, फिर दिल जुड़े हुए हैं,
एक प्राचीन सत्य जिसे हमें खोजना चाहिए-
कि हर चेहरा, खुशी या संघर्ष में,
हमारे साथ जीवन के जाल में बँधा हुआ है।
हर अजनबी से मुलाकात, एक अनदेखा रिश्तेदार,
लाल और हरे रंग के बुने हुए धागों में।
फुसफसाहटें साझा की गईं, कहानियाँ सुनाई गईं,
गर्मजोशी भरे दिलों में, सोने जैसी आँखों में।
आइए हम डर और अभिमान को त्याग दें,
हाथ में हाथ डालकर, कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों।
नीचे धरती के लिए, ऊपर के सितारे
हमारी एकता के बारे में बताएँ,प्यार के बारे में बताएँ।
और अंत में जो बचेगा
वह है आशा की आग, ध्वनि और लाभ के माध्यम से।
मानवता परिवार के लिए-इसे बजने दें,
एक दुनिया, एक आत्मा, एक गीत गाने के लिए।

मानवता

मयंक वार्ष्णेय
बी.एस-सी. पंचम सेमेस्टर

ना गोरे से ज्यादा प्रेम होना चाहिए
ना काले से घृणा होनी चाहिये
रंग से अन्तर न करके मन जिसका साफ है,
उसको पसंद करना चाहिये
और भावना ऐसी रखो मन में
एक-दूसरे को अपनाने की भावना होनी चाहिए।
ना कोई जाति छोटी-बड़ी होनी चाहिये
ना कोई धर्म किसी से बढ़कर होना चाहिये
मानवता ऐसी रखो दिल में
मानवता को अपनाने की श्रेष्ठता होनी चाहिये।
ना ज्यादा किसी से लगाव होना चाहिये
ना अंजान कोई होना चाहिये।
जो मुसीबत में आपका साथ निभाए
जीवनभर साथ उसका निभाना चाहिए
न सुख में किसी के सुखी होना चाहिए
जिससे दूसरों को सम्मान मिले
उतना सम्मान देना चाहिए
न कुचले गरीब होने चाहिए
न अहंकारी अमीर होने चाहिए
जिसमें समता की भावना हो
इंसानियत में समानता होनी चाहिए
मिट्टी के हर तिनके से जुड़ाव होना चाहिए
धरती के हर कोने से प्यार होना चाहिए
दुनिया में सभी लोग नहीं
सभी लोग एक परिवार होना चाहिए।।

वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा

पूजा
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

एक ही ईश्वर, एक ही धरती, एक ही आसमाँ और खून का रंग भी एक है। प्रकृति ने साँस लेने के लिए वायु और पीने के लिए जल देने में नहीं किया कोई भेद है। एक ही परिवार है संसार यह, सारा क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा। काले हों या गोरे, अमीर हों या गरीब, हर किसी को इस धरा पर जीने का है अधिकार। लोगों ने एकता, प्रेम और भाईचारा इस धरती पर है स्वीकारा, क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा।

सबका मालिक एक है पर जाति धर्म के आधार पर बँटा हुआ है संसार नफरत, घमंड, हिंसा इत्यादि ने मचा दिया पूरे विश्व में हाहाकार, प्रेम भाईचारा और मदद का लगाएँ जयकारा क्योंकि वासुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा विश्व शांति और इंसानियत की रक्षा को भारत देगा सहारा, क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् है हमारा नारा।

वसुधैव कुटुम्बकम्
एक भूमिका

नितिन कश्यप
बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर

वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल विचार यह है कि हर कोई एक बड़े वैश्विक परिवार का हिस्सा है, चाहे उनके बीच मतभेद क्यों न हों। भारत का यह प्राचीन दर्शन हमें शांति और सद्भाव का लक्ष्य रखते हुए सभी के साथ दयालुता और सम्मान के साथ व्यवहार करना सिखाता है।आज की दुनिया में जहाँ सब कुछ इतना जुड़ा हुआ है, यह फिलोसॉफी और भी महत्त्वपूर्ण है। हमारी दुनिया एक बड़े पड़ोस की तरह है। जहाँ राष्ट्र और संस्कृतियों के बीच की रेखाएँ धुँधली होती जा रही है। इसलिए, हमारे लिए वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांतों का पालन करना और एक ऐसी दुनिया के लिए तैयार करना महत्त्वपूर्ण है, जहाँ सभी के साथ उचित और सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए। ये सिद्धांत हमें बेहतर भविष्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं। टीम वर्क, सहयोग को प्रोत्साहित करके और एक-दूसरे के प्रति सम्मान दिखाकर हमको समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलती हैं।

इसकी सहायता से हम दुनिया को अधिक संतुलित और शांतिपूर्ण बनाने पर काम कर सकते हैं। बसुधैव कुटुम्बकम् हमें याद दिलाता है कि प्रत्येक व्यक्ति सभी के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने में भूमिका निभाता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्
जीने की राह

राधिका कुमारी
बी.ए., पंचम सेमेस्टर

न मस्जिद में, न शिवालों में
न गिरजाधर, न गुरुद्वारों में
जिसे ढूँढ़ रहा था मन काफिर
वो मिला मुझे नेक दिल इंसानों में
गुरु ग्रंथ और बाइबिल में,
गीता और कुरानों में
है मानवता ही एक धर्म
ये लिखा है सभी पुराणों में

ना रहे कोई भूखा
ऐसा कोई हल ढूँढ़ते हैं
जो रास्तों पर करते हैं बसर
उन सबके लिए घर ढूँढ़ते हैं
ना रहे कोई गैर यहाँ
ना रहे कोई बैर किसी से
मिलकर चलें सब एक साथ
ऐसी कोई राह ढूँढ़ते हैं।
वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को
चलो सब मिलकर जीवन में उतार लेते हैं
एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य
यही जीवन की राह इसे हम सब मान लेते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम्
भिन्नता का प्रतीक

कु. दिव्यांशी वार्ष्णेय
बी.एड. तृतीय सेमेस्टर

मुल्क हमारा भारत प्यारा
वसुधैव कुटुम्बकम् जिसका नारा
भिन्नताएँ और भाई चारा
मुल्क हमारा भारत प्यारा
जंग ए आजादी की आँधी
बोस, भगत सिंह, नेहरू, गांधी
आजाद, पटेल और अनगिनतों के
संघर्षों से जीती बाजी
आजादी कोई लफ्ज नहीं है।
जज्बा है जीने का
उम्मीदों की जंग में जीत है।
शरम् है खून पसीने का
वक्त के साये संग
बढ़-चढ़े यूँ हीं हम
बात तो है अब भी कुछ
आँखों को जो कर दे नम
मुल्क हमारा भारत प्यारा
वसुधैव कुटुम्बकम् जिसका नारा
भिन्नताएँ और भाई चारा
मुल्क हमारा भारत प्यारा
मुल्क हमारा भारत प्यारा।

विकास का आधार

उदय राज सिंह
बी.बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

वसुधैव कुटुम्बकम् का उल्लेख सबसे पहले उपनिषद में हुआ था। यह संस्कृत वाक्य 'वसुधा' (पृथ्वी) और 'कुटुम्बकम्' (परिवार) शब्दों से मिलकर बना है। इसका मतलब यह है कि सभी मानव एक ही परिवार के सदस्य हैं, चाहे उनका भौगोलिक, सांस्कृतिक या धार्मिक नजरिया अलग हो, उस नजरिये से दुनिया को एक संयुक्त परिवार के रूप में देखना और सभी को समान दृष्टि से देखना भारतीय दर्शन की मूल भावना है।

भारत की विदेशी नीतियों में भी वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन स्पष्ट रूप से झलकता है। भारत ने हमेशा अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग और शांति की नीति अपनाई है।

SAARC BRICS, G-20 जैसी क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से भारत ने अपने पड़ोसी और विश्व के कई विकसित, विकाशील देशों के साथ रिश्ते सुधारने और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। भारत के फ्रांस से राफेल और रूस से ईंधन और खाद्य पदार्थों की खरीद से इसे समझा जा सकता है। अंतर्राट्रीय स्तर पर देश आपस में एक परिवार की तरह एक दूसरे पर निर्भर होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के मधुर होने पर कई देशों में पर्यटकों के लिए आज्ञा पत्र की आवश्यकता नहीं होती और यदि कोई विदेशी व्यक्ति किसी देश में घूमने जाता है तो उसके साथ उस देश के निवासी दोस्ताना और पारिवारिक व्यवहार करते हैं। यह दर्शाता है कि सिर्फ कहने के लिए ही नहीं अपितु वास्तविक तौर पर भी वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारण प्रमाणित होती है, बल्कि यह आज के वैश्विक युग में भी अत्यधिक प्रायौगिक है।

अगर हम इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो हम एक सशक्त शांति-प्रिय और समृद्ध वैश्विक समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं और इसे देश के विकास का आधार बनाकर सफलता की ओर बढ़ सकते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् चुनौतियाँ

यश सूद
बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

"वसुधैव कुटुम्बकम्" संस्कृत का एक प्राचीन वाक्य है, जिसका अर्थ है "सारी पृथ्वी एक परिवार है।" यह विचार भारतीय दर्शन का एक मुख्य मूल्य है, जो सभी लोगों के बीच एकता सामंजस्य और परस्पर पड़ाव को बढ़ावा देता है, चाहे, उनकी राष्ट्रीयता, संस्कृति या धर्म कुछ भी हो। यह वाक्यांश पीढ़ियों से प्रेरणादायक रहा है, और यह इस बात का संदेश देता है कि मनुष्य जाति, धर्म या राष्ट्रीयता का संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण अपनाएँ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् इसका अर्थ है, "केवल संकीर्ण सोच वाले लोग दूसरों को मित्र और शत्रु के रूप में देखते हैं। उदार चरित्र वाले लोगों के लिए, पूरी दुनिया एक परिवार है।" यह विचार भारतीय संस्कृति, दर्शन और आध्यात्मिकता में मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्ति को अपनी सीमाओं से परे सहानुभूति और समझ को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

वैश्विक पहलों में वसुधैव कुटुम्बकम्- संयुक्त राष्ट्र के "वन वर्ल्ड, वन फेमिली" जैसी पहलों में भी यह विचार देखा जा सकता है, जो महामारी और पर्यावरण संकट जैसी समस्याओं का वैश्विक समाधान तलाशने में एकजुटता को बढ़ावा देता है। हाल के जी-20 सम्मेलन में अपनाया गया है, ताकि महत्त्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों को हल करने के लिए सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके।

निष्कर्ष- वसुधैव कुटुम्बकम् आज भी वैश्विक सामंजस्य के लिए एक गहन अध्ययन है, जो एक ऐसी दुनिया की कल्पना को प्रेरित करता है जहाँ करुणा, सहयोग और एकता का वर्चस्व हो। यद्यपि इसे व्यावहारिक स्तर पर लागू करने में चुनौतियाँ है, फिर भी यह दर्शन नैतिक मार्गदर्शन का कार्य करता है, जिससे व्यक्ति और राष्ट्र सीमाओं से ऊपर उठकर सामूहिक कल्याण की खोज में एकजुट हो सकें।

आलोचना और चुनौतियाँ- वसुधैव कुटुम्बकम् एक आदर्श दृष्टि प्रदान करता है, परन्तु इसे वास्तविकता में लागू करने में व्यावहारिक सीमाएँ होती हैं, जैसे कि राष्ट्रीय हित, आर्थिक असमानता और राजनीतिक संघर्ष। कुछ आलोचकों का मानना है कि शक्ति संतुलन और आत्महित की वजह से यह वैश्विक एकता में बाधा डाल सकता है। इसके अलावा, सांस्कृतिक गौरव और वैश्विक पहचान के बीच संतुलन बनाना कभी-कभी टकराव पैदा कर सकता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् : एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य

दीपिका
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' ये दो शब्द ही नहीं बल्कि ऐसे शब्द है जिनमें सारा संसार समाहित है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' आचार्य विष्णु शर्मा की ओर से रचित पंचतंत्र नामक ग्रन्थ से लिया गया है। जिसका अर्थ है : हमारी धरती एक परिवार है। इसका अंदाजा हम इस बात से भी लगा सकते हैं कि मोदी जी द्वारा आयोजित जी-20 सम्मेलन में विषय भी ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' रहा। यह वाक्य पूरे विश्व में से सिर्फ भारत ने ही सबसे पहले दिया था। जिसका अर्थ है कि हम एक साथ हैं हर परिस्थिति में, हर स्थिति में हम साथ-साथ रहेंगे। प्राचीन काल में इस शब्द का प्रयोग घर (गृहस्थी) में रहने वाले व्यक्तियों के लिए किया जाता था और प्राचीन काल में लोग इस वाक्य का महत्त्व समझते थे और इस वाक्य का मान-सम्मान और पालन भी करते थे, पर बढ़ती हुई पीढ़ी के साथ इस वाक्य (वसुधैव कुटुम्बकम्) का भी महत्त्व कम होता जा रहा है। आजकल भाई-भाई तो छोड़ो बच्चे माँ-बाप को साथ रखने के लिए भी राजी नहीं है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का मतलब एक छत से नहीं है, अपितु इस वाक्य का अर्थ इस बात से है कि एक ही परिवार के कई सदस्य जो एक ही साथ रहते हों और साथ-ही-साथ पूरे परिवार का भोजन एक ही चूल्हे पर बनता हो, और घर के बाकी लोग एक साथ खाना खाते हों। असल जिंदगी में यह है ''वसुधैव कुटुम्बकम्''। जितना हमारे लिए खाना जरूरी है, उससे कहीं अधिक है परिवार का होना।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का शाब्दिक अर्थ है-एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य।

इसका अंदाजा आप सलमान खान की फिल्म 'हम साथ-साथ हैं' से भी लगा सकते हैं कि परिवार हमारे जीवन में कितना महत्त्व रखता है। मैं आपको इस वाक्य (वसुधैव-कुटुम्बकम्) को अपनी कहानी से समझाने का प्रयास करती हूँ। एक बार की बात है एक पिता था, उसके पाँच बेटे थे। जब बेटे बड़े हुए तो उनकी शादी हो गई। सारे भाइयों ने शादी होने के बाद फैसला लिया कि हम अलग-अलग (न्यारे) रहेंगे। फिर वह पाँचों भाई अपने पिता जी के पास जाते हैं और अपने पिता जी को सारी बातें बताते हैं और कहते हैं कि पिताजी अब हमें अलग-अलग रहना है। पिता जी कुछ देर शांत रहे फिर उन्होंने देखा कि उनके ही पास में एक लकड़ी का गठ्ठर पड़ा हुआ है, तो पिताजी ने कहा जाओ एक-एक करके सारे भाई इस लकड़ी के गठ्ठर को तोड़ दो। सारे भाई एक-एक करके गए और लकड़ी के गठ्ठर को तोड़ने लगे,लेकिन वह सारे भाई एक-एक करके उस लकड़ी के गठ्ठर के नहीं तोड़ पाए। फिर पिताजी ने दोबारा कहा कि अब आप पाँचों भाई एक साथ लकड़ी के गठ्ठर को उठाकर लकड़ियाँ तोड़ दो, तो पिता की बात सुनकर बच्चों ने भी ऐसा किया तो पाया कि लकड़ियों का गठ्ठर टूट गया। फिर पिताजी ने अपने बच्चों को समझाया कि जिस प्रकार आप एक-एक करके इस लकड़ी के गठ्ठर को तोड़ नहीं पाए परंतु साथ रहकर यह काम संभव हो गया, ठीक उसी प्रकार आप सब अलग-अलग रहोगे तो टूट जाओगे और बिखर जाओगे लेकिन एक साथ रहोगे तो आपका कोई भी बाल भी बाँका नहीं कर सकता है। बच्चों को यह बात समझ आ गई और वह फिर से खुशी के साथ रहने लगे।

शीर्षक : हमारे परिवार में कितनी भी विपरीत परिस्थितियाँ क्यों ना आ जाएँ लेकिन हमें एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

बात हम इंसानियत की करते हैं

रेशु कुमारी
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

बात सुनो ए भारतवासी, आज ये दुनिया से कहते हैं
बात हम किसी धर्म की नहीं, बात हम इन्सानियत की करते हैं।
हम, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, सारे हैं हम भाई-भाई
गांधी, बिस्मिल, भगत सिंह, सबने बात है समझाई
सभी धर्म है एक जैसे, ना बात एक धर्म की करते हैं
बात हम किसी धर्म की नहीं, बात हम इन्सानियत की करते हैं
यहाँ से आये वहाँ से आये, आकर यहीं रहने लगे
सबको अपनापन और प्यार दिया, सबको हम अपना कहने लगे
पूछो आया कहाँ से, जो बात हम विज्ञान की करते हैं
बात हम किसी धर्म की नहीं, बात हम इन्सानियत की करते हैं।
वसुधैव कुटुम्बकम्, इनके जैसी सोच है हमारी
प्रीत रखे तो प्रीत रखें, दुश्मन पर है भारी,
अतिथि देवो भव: हम बात सम्मान की कहते हैं,
बात हम किसी धर्म की नहीं, बात हम इन्सानियत की करते है।

वसुधैव कुटुम्बकम् : पूरी दुनिया एक परिवार

गौरी कुमारी
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

"वसुधैव कुटुम्बकम्" एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ पूरी दुनिया एक परिवार है। सभी लोग एक ही वैश्विक परिवार का हिस्सा है। यह एकता, सहयोग के मूल्यों और इस विचार को बढ़ावा देता है कि हमें हर किसी के साथ दयालुता, सहानुभूति और प्यार का व्यवहार करना चाहिए, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, गोत्र एवं वर्ग का हो।

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत में इस विचार की उत्पत्ति हुई, जिसका दर्शन सद्भाव और गरिमा को आगे करता है तथा स्थिरता, समझ और शांति को आगे बढ़ाकर दुनिया को बेहतर बनाने की क्षमता रखता है। इस अवधारणा को अपनाकर हम सभी के लिए एक बेहतर और सामंजस्यपूर्ण दुनिया बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् की दार्शनिक अवधारणा है, जो सार्वभौमिक भाईचारे और प्राणियों के परस्पर संबंध के विचारों का प्रतीक है। वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश यह है कि प्रत्येक व्यक्ति वैश्विक समुदाय का सदस्य है और सभी को एक दूसरे के साथ सम्मान और करुणा का व्यवहार करना चाहिए।

आज विश्व में इस शब्द का महत्त्व तेजी से बढ़ रहा है भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अक्सर विश्व स्तरीय मंचों से चाहे वह यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका या अन्य पहलुओं पर वसुधैव कुटुम्बकम् की थीम पर बोलते हुए नजर आते हैं। भारत इस थीम पर ही अपनी करोड़ों की आबादी के साथ एकजुटता के साथ विश्व स्तर पर एक आदर्श के रूप में खड़ा है। अभी G-20 के सम्मेलन में वसुधैव कुटुम्बकम् इसकी मुख्य थीम थी। जिसकी अगुवाई भारत ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्त्व में की गई थी।

भारतीय प्रधानमंत्री ने इस थीम का सहारा लेकर रूस-यूक्रेन युद्ध व अन्य विश्व स्तरीय समस्या को लेकर विश्व पटल पर भारत का विचार प्रकट किया जिससे प्रधानमंत्री व भारत का स्तर विश्व की नजर में बढ़ा है।

वसुधैव कुटुम्बकम् :

1. यह वाक्यांश आचार्य विष्णु शर्मा के रचित पंचतंत्र ग्रंथ से लिया गया है।
2. इस वाक्यांश का मतलब है कि पूरी दुनिया एक परिवार है और सभी लोग और सभी देश एक-दूसरे से जुड़े हुए है।
3. इस वाक्यांश मतलब है कि हमें सभी प्राणियों के दु:ख को अपना दु:ख समझना चाहिए और अपनी खुशी को सभी के साथ साझा करना चाहिए।
4. इस वाक्यांश में दो शब्द है "वसुधा और कुटुम्बकम्" वसुधा का मतलब है पृथ्वी या संसार और कुटुम्बकम् का मतलब है परिवार या लोगों का समूह।

G-20 शिखर सम्मेलन :

2023 में G-20 शिखर सम्मेल का विषय "वसुधैव कुटुम्बकम्" था। यह संस्कृत वाक्यांश है। जिसका अर्थ "पूरा विश्व एक परिवार है।"

यह वैश्विक एकता और सहयोग के महत्त्व को रेखांकित करता है। पर सभी देशों के परस्पर जुड़ाव और जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानताओं और वैश्विक स्वास्थ्य संकट जैसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह विषय एक अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण दुनिया की दृष्टि को बढ़ावा देता है। जैसे राष्ट्र मानवता को सामूहिक भलाई के लिए सहयोग करते है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" वाक्यांश का महत्त्व :

1. सर्वभौमिक भाईचारा
2. शांति और सद्भाव:
3. सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत
4. वैश्विक जिम्मेदारी
5. अंतर्राष्ट्रीय संबंध
6. आधुनिक प्रासंगिकता
7. नैतिक मूल्य
8. मानवाधिकार और सामाजिक न्याय
9. पर्यावरण चेतना

वसुधैव कुटुम्बकम्: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गोपाल कुमार
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

वसुधैव कुटुम्बकम् एक संस्कृत कहावत है जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है।" यह विचार हमें सिखाता है कि पृथ्वी पर हर कोई एक परिवार एक सदस्य की तरह है, यह एक दूसरे के साथ दयालुता, सम्मान और समझ के साथ व्यवहार करने को प्रोत्साहित करता है। यह अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि मतभेदों के बावजूद हम सभी जुड़े हुए हैं और हमें शांति और एकता के लिए मिलकर काम करना चाहिए। आज की दुनिया में जहाँ लोग गरीबी और संघर्ष जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश और भी महत्त्वपूर्ण है। वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा सिर्फ हमारे सनातन धर्म में देखने और सुनने को मिलेगी। हमारा सनातन धर्म कितना श्रेष्ठ है जिसमें पूरे विश्व को अपना परिवार मानने की विचारधारा है और आप देख लीजिए, आपको ऐसी विचारधारा कहीं नहीं मिलेगी जिसमें पूरे विश्व को अपना परिवार मानने वाली बात कही गई हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

"वसुधैव कुटुम्बकम्" का उल्लेख पहली बार महाउपनिषद में मिलता है, जहाँ यह बताया गया है कि संसार का हर व्यक्ति एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। यह विचार उस समय की भारतीय सोच का प्रतीक था, जिसमें विश्व एकता और सार्वभौमिकता का महत्त्व दिया जाता था। वैदिक युग में समाज धार्मिक दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित था, और इस सिद्धान्त ने धार्मिक और भौतिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने में महत्त्पूर्ण भूमिका निभाई।

समाज और संस्कृति पर प्रभाव :

"वसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धांत ने भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने बाने को प्रभावित किया है। इस विचार ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया, जो विविधता का सम्मान करती है और विभिन्नता में एकता के महत्त्व को समझती है। भारतीय समाज में सदियों से विभिन्न धर्म, भाषाएँ और परम्पराएँ सह-अस्तित्व में रही है और इस सहिष्णुता और समर्पण का आधार "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसी विचारधाराएँ रही हैं।

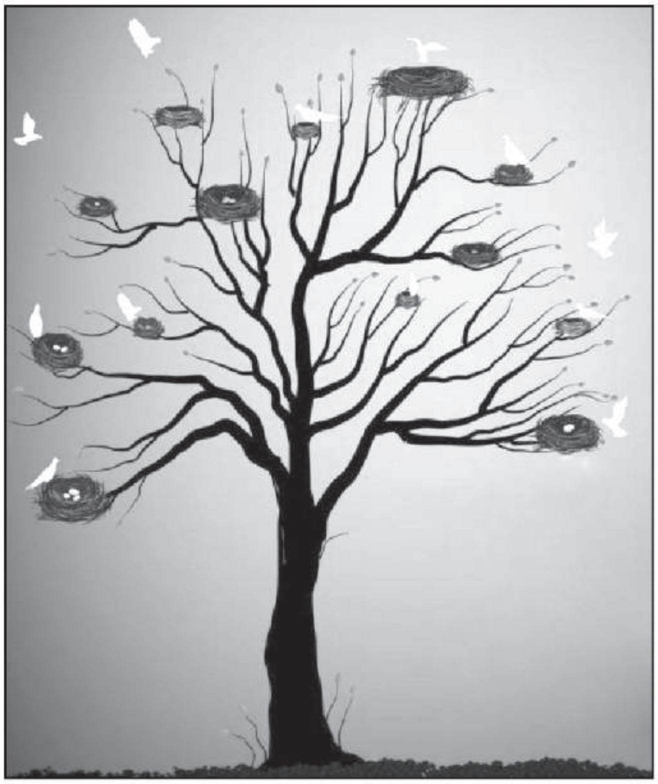

विश्वव्यापी विचारधारा :

वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल सिद्धांत है कि सम्पूर्ण मानवता एक परिवार है। इस विचारधारा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी राष्ट्र जाति या धर्म से हो, एक ही व्यापक परिवार का हिस्सा है। इस सिद्धांत के अनुसार विश्व में सभी का समान महत्त्व है और हर किसी को समान सम्मान मिलना चाहिए। यह विचारधारा न केवल मानव जाति के लिए प्रेम और सहानुभूति की आवश्यकता को दर्शाती है, बल्कि यह भी सिखाती है कि विभिन्नता को सम्मानित करना और दूसरों के साथ मिलकर शांति और सद्‌भाव बनाना कितना आवश्यक है।

सनातन धर्म की विशेषताएँ :

1. नारियों को भगवान का दर्जा।
2. माता को भगवान, पिता को भगवान, अतिथि को भगवान का दर्जा।
3. दया।
4. प्रकृति की पूजा करना।

Vasudhaiva Kutumbakam and Geography: A Global Perspective

Mohd Wahid
Assistant Professor, Department of Geography
H.O.D. Faculty of Arts ■ Chief Proctor, Gyan Mahavidyalaya

"Vasudhaiva Kutumbakam," a phrase in Sanskrit from ancient Indian scriptures, translates to "the world is one family." Rooted in the philosophy of unity, interconnectedness, and inclusivity, this concept aligns deeply with the principles of geography, a discipline that explores the physical and human dimensions of the Earth.

Geographical Context of Vasudhaiva Kutumbakam:

Geography studies the Earth as an integrated whole, analyzing the relationships between physical landscapes, climate, human activities, and global interactions. The philosophy of "Vasudhaiva Kutumbakam" complements this perspective by emphasizing interconnectedness and interdependence across borders, cultures, and ecosystems.

1. **Earth as a Shared Space**
The concept underscores that Earth belongs to all its inhabitants, transcending national boundaries. Geography helps us to understand the distribution of natural resources, climatic zones, and ecosystems, which are shared among nations. For instance, the Amazon rainforest, often referred to as the "lungs of the Earth," benefits the global community by regulating carbon and oxygen cycles, illustrating the interconnectedness of ecosystems.

2. **Global Climate Change and Collective Responsibility**
Climate change is a critical issue that transcends geographical boundaries, affecting the entire world. Rising sea levels, melting glaciers, and extreme weather events highlight the necessity of global cooperation. Initiatives like the Paris Agreement reflect the spirit of "Vasudhaiva Kutumbakam," where nations work together to combat climate change for the shared future of humanity.

3. **Cultural and Economic Integration**
Geography not only studies physical features but also human interactions, trade, and cultural exchanges. The philosophy of "Vasudhaiva Kutumbakam" is evident in globalization, where goods, services, and ideas flow freely across continents. For example, the Silk Road in ancient times and modern trade routes like the Belt and Road Initiative symbolize the interconnectedness of human societies.

4. **Disaster Management and Solidarity**
Natural disasters, such as earthquakes, tsunamis, and hurricanes, affect multiple regions and require collective global responses. Geographic studies enable us to predict, prepare for, and mitigate such disasters. Humanitarian aid extended across borders reflects the idea of a united world family working together during crises.

Geographical Challenges and Vasudhaiva Kutumbakam:

Despite the philosophy's relevance, geographical inequalities pose challenges to achieving this vision. Disparities in resource distribution, economic development, and access to technology hinder global unity. However, addressing these issues through cooperation, sustainable development, and equitable resource sharing can bring the world closer to this ideal.

Conclusion:

"Vasudhaiva Kutumbakam" and geography converge in their emphasis on interconnectedness and shared responsibility. By adopting this philosophy in our geographical understanding and practices, humanity can move towards a more harmonious coexistence, ensuring sustainable development and a secure future for all. In an era of global challenges, this ancient wisdom serves as a timeless reminder of our collective duty to the Earth and its diverse inhabitants.

सचिव, प्रबन्धक व प्राचार्य के साथ समस्त प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाएँ

सचिव, प्रबन्धक व प्राचार्य के साथ शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्ति एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

राष्ट्रीय पर्व

पूरा विश्व एक परिवार है

मुख्य अतिथि श्री वार्ष्णेय कॉलेज के पूर्व प्राचार्य प्रो. पंकज कुमार वार्ष्णेय, प्रबन्धक श्री मनोज यादव, प्राचार्य व अन्य

सांस्कृतिक प्रस्तुति

गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए

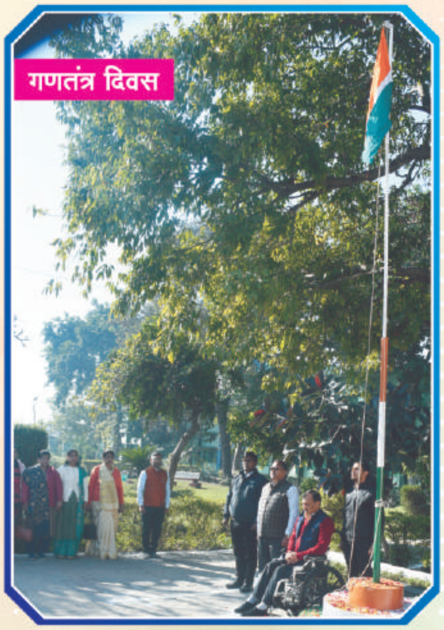

महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री मनोज यादव, प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता एवं शिक्षकगण

गणतंत्र दिवस पर उपस्थित प्रबन्धक, प्राचार्य, अपर प्राचार्या एवं शिक्षकगण

राष्ट्रीय सेवा योजना

स्वामी विवेकानंद जयंती (राष्ट्रीय युवा दिवस)

राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर

संविधान दिवस पर शपथ ग्रहण

स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा रैली

पुरातन छात्र एवं एन.एस.एस. स्वयंसेवक सब इंस्पेक्टर नरेश कुमार का स्वागत व सम्मान

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

वार्षिकोत्सव

मुख्य अतिथि आई.जी. श्री शलभ माथुर (आई.पी.एस.) का संबोधन

मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान

मेधावी छात्रा को प्रशस्ति पत्र देते हुए मुख्य अतिथि श्री शलभ माथुर एवं विशिष्ट अतिथि अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

इंजी. इन्द्रेश कौशिक का स्वागत करते डॉ. जी.जी. वार्ष्णेय

मुख्य अतिथि एवं अतिथियों द्वारा अर्द्धवार्षिक पत्रक 'ज्ञान दर्शन' का विमोचन

मुख्य अतिथि एवं अतिथियों द्वारा वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' के 15वें अंक का विमोचन

संस्थापक दिवस

संस्थापक दिवस के अवसर पर निदेशक डॉ. (इंजी.) गौतम गोयल संस्थापक स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए

संस्थापक दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक प्रस्तुति

मुख्य अतिथि प्रोफेसर जे.पी. सिंह को बुके भेंट करते उप-प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल।

श्रीमती रितिका गोयल, निदेशिका ज्ञानदीप आई.टी.आई. रूहेरी हाथरस को बुके भेंट करतीं डॉ. बीना अग्रवाल।

श्री नरेन्द्र गौतम मुख्य, अधिशासी अधिकारी को पटि्टका पहनाकर स्वागत करते डॉ. दुर्गेश शर्मा।

डॉ. एल.सी. गौड़ मैमोरियल पुरस्कार

डॉ. बी.डी. गुप्ता मैमोरियल पुरस्कार

श्री राजपाल मैमोरियल पुरस्कार

श्री महावीर सिंह मैमोरियल पुरस्कार

संस्थापक दिवस पर उत्कृष्ट सेवाओं के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित श्री रवि कुमार, श्रीमती मेघा अरोरा, श्री शुभम् गुप्ता व श्री महेन्द्र सिंह

संस्थापक दिवस के अवसर पर 'ज्ञान दर्शन' पत्रक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि एवं प्रबन्ध समिति के सदस्यगण

संस्थापक दिवस के अवसर पर 'ज्ञान भव' जर्नल का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि एवं प्रबन्ध समिति के सदस्यगण

"Everyone's First Duty is to Protect our Environment"

Dr. Priyanka Singh
Assistant Professor, Zoology

The philosophy of "Vasudhaiva Kutumbakam" is also Complementary to the core Indian Civilization principal of Truth /Satya. The principle that equate god with soul.

So we can protect the earth and all the living being found in It because we cannot change nature. If we are causing any imbalance to nature or environment. We or our future generation will have to pay for it.

The global safety net is the first comprehensive globle-scale analysis to teristrial area for saving critical ecosystem and stabilizing the earth's climate.

1. Reduce, reuse and Recycle- Cut down on what you through away follow the three "R" to save and conserve nature resources and landfill space.

2. Conserve water- The less water in the earth we used an waste more water to daily need for us, we can help other understand the important and value of our natural resources but we are not use this importance.

3. Use long lasting light bulbs- Energy efficient light bulb are more green house gas emission. So also flip the light. Switch off When you leave the room.

4. Plant a tree and there are importance for us- Tree provide food and oxygen. They help to save energy and environment. clean the air quality help combat climate change.

5. Reusable Plastic- We can buy the resuable and bring for the shopping bag only the paper bag.

India Sprit of Unity

Parveen Kumar
Asstt. Prof. Management

In Land of Peace and skies of blue,
India's heart beats strong and true.
With open arms ad wisdom deep,
Promise of Unity, we seek to keep.
Through ancient songs and tale of old,
Our culture's warmth, in stories told .
from yoga's calm to Gandhi's peace,
India's sprit seeks to case,
The world's divides, the pain, the fight,
In bond of love, we find the light.
With neighbors close and friends afar,
We stand for peace, a guiding star.
For every land, each kin and creed,
India's step forth, in word and deed.
from fields of green to skies above,
We spread the light, we share the love.
Vasudhaiva kutumbakam-our guidig call,
The world is one, a family for all.

Sanatan Dharma

Mahak
B. Com Vth Sem.

Hinduism is the word given by Britishers to the most ancient religion called Sanatan Dharma Which is also most pristigious one . Many scholars belief that it started 4000 Years ago. The major text of Hinduism are Ramayan, Mahabharat, Geeta, Ved, Upnishad etc. The followers of Hinduism visit temple to worship god. There are about 33 crore dieties in sanatan. Hinduism even worship animals, birds, trees, Mountain, Earth, our Sun, Land and all the object that we can see and we can't.

In Festivals : It is said that in Hinduism, there are more festivals that the number of days in a year. The Festivals that number of days in a year. The important festivals of Hinduism are Deepawali, Holi, Raksha-Bandhan, Shri Krishna Janmastami etc These are just few but all the festivals in Hinduism are equally important. The best thing about them is that they are celebrated by the people of other religions with the same enthusiasm and charm.

That's Why I love Sanatan Dharma and I Proud to be a Sanatani.

Sustainable Development in India

Dr. Amir Khan
Assistant Professor, Botany

India has played an important role in shaping the sustainable development goals. While targeting economic growth, infrastructure development and industrialisation, the country's war against poverty has become fundamentally focussed on social inclusion and empowerment of the poor. Sustainable development is the key for overall prosperity of the world. The development that meets the needs of present without compromising the ability of future generations to meet their own needs is known as Sustainable Development.

Sustainable Development is an important issue in current time. Sustainable development in India encompasses a variety of development schemes in social, clean tech and human resources segments, having caught the attention of both Central and State governments and also public and private sectors. India and the world have a long and challenging way to go in dealing with environmental problems and learning to live together in sustainable communities. We need people-oriented policies to achieve human development goals of poverty reduction, attaining food security, good health, gender equality, decent livelihood, clean water and sanitation and eco-friendly policies to achieve environment protection goals. India has launched several programs to achieve the sustainable development goals viz., Swachch Bharat mission, Namami Gange Program, and National Mission for Green India. The concept of sustainable development must be included in the education system so that students get aware of it and start practicing a sustainable lifestyle. With the help of empowered youth and local communities, many educational institutions should be opened to educate people about sustainable development. Thus, adapting to a sustainable lifestyle will help to save our Earth for future generations. Moreover, the Government of India has taken a number of initiatives on both mitigation and adaptation strategies with an emphasis on clean and efficient energy systems; resilient urban infrastructure; water conservation & preservation; safe, smart & sustainable green transportation networks; planned afforestation etc. Another important aspect of sustainable development is promoting social equity and inclusivity.

This means ensuring that everyone, regardless of their background or socioeconomic status, has equal access to education, healthcare, and basic human rights. By investing in education, we can empower young people with the knowledge and skills they need to contribute to their communities and develop innovative solutions to environmental and social challenges. Additionally, sustainable development emphasizes the need for responsible consumption and production. This involves reducing waste, reusing and recycling materials, and implementing sustainable farming practices to protect ecosystems and support local communities.

महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेशु कदाचनः

ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना 1998 में चिकित्सक, शिक्षाविद् एवं लेखक स्व. डॉ0 ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वाणिज्य संकाय के साथ की गई थी। वर्ष 2002 में उनके अन्तिम श्वाँस लेने के उपरान्त महाविद्यालय की बागडोर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक गोयल जी द्वारा सँभाली गयी। आज यह अलीगढ़ में प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध है। वर्तमान में महाविद्यालय के रूप में पाँच संकायों में स्नातक स्तर पर बी0एड0, डी0एल0एड0 (पूर्व नाम बी0टी0सी0), बी0एस-सी0, बी0कॉम0, बी0ए0, बी0बी0ए0, बी0सी0ए0 (गणित व रसायन विज्ञान) के कोर्स सफलतापूर्वक चल रहे है। डॉ0 गौतम गोयल के निर्देशन में ज्ञान निजी आई0टी0आई0 तथा ज्ञान दीप आई0टी0आई0 रूहेरी, हाथरस सफलतापूर्वक चल रहे हैं, जिनमें दो ट्रेड (इलैक्ट्रीशियन व फिटर) के हैं, ज्ञान निजी आई0टी0आई0 केयर रेटिंग 4 स्टार से नवाजा गया है।

सचिव महोदय के प्रयासों द्वारा अलीगढ़ जिले में सर्वप्रथम बी0टी0सी0 कोर्स की मान्यता प्राप्त हुई। महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षा विभाग (बी0एड0) में वर्तमान में 200 सीट हैं। यह बहुत ही गौरव की बात है कि बी0एड0 विभाग को वर्ष 2012 में UGC द्वारा "A" ग्रेड से नवाजा गया था। यह डॉ0 बी0आर0 आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा का प्रथम कॉलेज था, जिसने सबसे अधिक अंकों के साथ "A" ग्रेड प्राप्त किया। ज्ञान महाविद्यालय डॉ0 बी0आर0 आम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा का प्रथम स्व-वित्त पोषित कॉलेज था, जिसे वर्ष 2014 में UGC द्वारा विज्ञान, वाणिज्य, कला एवं प्रबन्धन संकायों को "B" ग्रेड प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय में तीन भवन डॉ0 रघुनन्दन प्रसाद प्रशासनिक भवन, सरस्वती भवन तथा ज्ञान भवन हैं। स्वराज्य भवन में ज्ञान निजी आई0टी0आई0 है। सरस्वती भवन में जो जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान व गृहविज्ञान की प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है, वहीं पर ज्ञान भवन में मनोविज्ञान, भाषा, कला व शिल्प, शारीरिक शिक्षा व स्वास्थ्य, विज्ञान एवं संगीत आदि के रिसोर्स सेंटर हैं तथा सुसज्जित आई0सी0टी0 प्रयोगशाला है, जहाँ पर सभी कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय हैं, जहाँ पर लगभग 27000 Text Books हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में जर्नल, न्यूज लैटर, पत्रिकाएँ तथा समाचार पत्रों की भी सुविधा है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पूरा कैम्पस सी0सी0टी0बी0 कैमरों से सुसज्जित है।

महाविद्यालय द्वारा ग्राम बढ़ौली फतेहखाँ को सत्र 2012-13 में शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु गोद लिया गया था, इसके अन्तर्गत 12 लड़कियों महाविद्यालय में निःशुल्क शिक्षण सुविधा दी गई थी। सत्र 2014-15 इस योजना के अन्तर्गत एक गाँव के स्थान पर कुल 14 गाँव गोद लिए गए। 'स्वराज्य स्वाबलम्बी योजना' के अंन्तर्गत अब तक 49 सिलाई मशीनों का विवरण गाँव की कन्याओं (महाविद्यालय की पूर्व या वर्तमान छात्रा) की शादी के शुभ अवसर पर प्रबन्धतंत्र द्वारा किया जा चुका है। विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं। स्वराज्य स्वाबलम्बी योजना के अन्तर्गत ग्राम बढौली फतेह खाँ को गोद लिया गया है।

महाविद्यालय में अनुशासन समिति के साथ-साथ विभिन्न समितियाँ हैं, जिनके अन्तर्गत वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। ज्ञान महाविद्यालय में शिक्षक, शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्ति तथा छात्र-छात्राओं की उपस्थिति का प्रलेख करने के लिए Biometric Machine भी लगी हुई है ताकि वे समय के प्रति जागरूक व सचेत रहें।

वर्तमान में महाविद्यालय में लगभग 1500 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत् हैं तथा 60 टीचिंग स्टाफ व 40 नॉन टीचिंग स्टाफ है। अत: महाविद्यालय में शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात काफी अच्छा है। इसके अतिरिक्त प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को तथा द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिये एक-एक यूनिफार्म उपहार स्वरूप दी जाती है, जिससे विद्यार्थियों में एकरूपता की भावना उत्पन्न हो।

महाविद्यालय में सेवायोजना प्रकोष्ठ व पुरातन छात्र समिति भी है। सेवायोजना प्रकोष्ठ के अंतर्गत छात्र-छात्राओं

को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। कई छात्र-छात्राएँ सरकारी सेवाओं में चयनित हो चुके हैं। विगत सत्र में बी0टी0सी0 (डी0एल0एड0) के अनेक प्रशिक्षुओं का चयन प्राथमिक विद्यालय में हुआ। इसके साथ-साथ अन्य विभागों में विभिन्न विद्यार्थियों का सरकारी नौकरियों में चयन होना एक गौरव की बात है। पुराने विद्यार्थियों को जोड़े रखने हेतु एक ज्ञान पुरातन छात्र समिति भी है, जिसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष 16 दिसम्बर को पुरातन छात्र-छात्राओं को आमंत्रित कर सांस्कृतिक कार्यक्रम कराए जाते हैं और ज्ञान दीप पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। कॉलेज के स्थापना वर्ष से अब तक महाविद्यालय में अध्ययन कर चुके पुरातन छात्र-छात्राओं का सम्मान 'ज्ञानोदय' कार्यक्रम के अन्तर्गत हर वर्ष 16 दिसम्बर को किया जाता है।

महाविद्यालय 'Vision-to be a Center of Excellence' है। इस श्रृंखला में शिक्षण गुणवत्ता बनाये रखने हेतु Internal Quality Assurance Cell (IQAC) भी कार्यरत है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को सेमिनार, कार्यशालाओं व Orientation Programme में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय के इससे संबंधित विषय के विद्यार्थी भी लाभान्वित होते हैं प्राध्यापकों के Refresher Course के लिये अतिथि व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय 'ज्ञान पुष्प' के नाम से वार्षिक पत्रिका व अर्द्धवार्षिक पत्रक 'ज्ञान दर्शन' का भी सफल प्रकाशन कर रहा है। Gyan Bhav नामक जर्नल के 20 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। शिक्षक शिक्षा का जर्नल ज्ञान भव (ISSN 2319-8419) वर्तमान में PEER REVIEWED जर्नल है। विज्ञान संकाय से Gyan Vigyan व वाणिज्य संकाय से Gyan Arth नामक जर्नल भी वर्ष 2014 से प्रकाशित किये गये।

कमजोर विद्यार्थियों हेतु अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की जाती है। विद्यार्थियों को अकादमिक एवं व्यावसायिक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु सत्रीय परीक्षाओं को ओ. एम.आर. शीट के माध्यम से कराया जाता है।

विद्यार्थियों के लिए खेल में प्रोत्साहन हेतु सभी प्रकार के खेलों का आयोजन 'खेल सप्ताह' के अन्तर्गत होता है तथा प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को 'ज्ञान गौरव' व 'ज्ञान केसरी' पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं। छात्र-छात्राओं के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी सभी विभागों में कराया जाता है।

युवा वर्ग के रूझान के अनुरूप फेसबुक पर भ 'ज्ञान परिवार' नामक ग्रुप के साथ व्हाट्सएप पर छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों को जोड़ा है।

महाविद्यालय को स्वायत्त (Autonomous) संस्था बनाना। एम0एड0 एवं एम0एस-सी0 के अन्य विषयों तथा एम0ए0 की मान्यता प्राप्त करना। ज्ञान महाविद्यालय उँचाइयों की तरफ अग्रसर है तथा परिवार के सदस्य मिलकर इसकी उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

सन् 2022 से यह महाविद्यालय अलीगढ़ में नवनिर्मित राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से सम्बद्ध हो गया है।

-डॉ. वाई.के. गुप्ता
प्राचार्य

व्यवसाय विकास : कुटुम्बकम् का आधार

भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत अनादिकाल से प्रचलित है, जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानता है। इसी भावना को व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में लागू किया जाए तो आर्थिक और सामाजिक समृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। महाकुंभ के मंच पर व्यवसाय विकास को एक कुटुंबीय भावना से जोड़कर देखने की आवश्यकता है।

आज के वैश्विक युग में प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत लाभ की मानसिकता बढ़ती जा रही है, लेकिन यदि हम पारिवारिक मूल्यों और सहयोग की भावना को व्यापार में अपनाएं, तो दीर्घकालिक सफलता संभव है। व्यवसाय विकास केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की प्रगति, नैतिकता और सामूहिक हित से भी जुड़ा हुआ है।

महाकुंभ एक ऐसा मंच है, जहाँ विचारक, उद्यमी और नीति-निर्माता एकत्र होकर आर्थिक और व्यावसायिक संभावनाओं पर चर्चा करते हैं। इस महाकुंभ में व्यवसाय विकास को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से देखा जा सकता है।

महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के प्रगति प्रतिवेदन

वाणिज्य संकाय :

वाणिज्य संकाय इस महाविद्यालय का एक आधारभूत एवं प्रतिष्ठित संकाय है। महाविद्यालय का शुभारम्भ सत्र 1998 में बी0कॉम0 कक्षाओं से हुआ और यह गौरव की बात है कि पिछले 26 वर्षों से संकाय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। महाविद्यालय प्रबंधन ने परास्नातक स्तर पर सत्र 2009-10 से दो समूहों (व्यवसाय प्रशासन व लेखा एवं विधि) में एम0कॉम0 की कक्षाएँ प्रारम्भ की। सत्र 2021-22 से बी0कॉम0 की कक्षाएँ व एम0कॉम0 की कक्षाएँ सत्र 2022-23 से सेमेस्टर प्रणाली से चल रही हैं। वर्तमान में इस संकाय में डॉ0 योगेश कुमार गुप्ता (प्राचार्य) डॉ0 हीरेश गोयल (उप प्राचार्य) डॉ0 दुर्गेश शर्मा (प्रभारी) व डॉ0 चेतन सैनी (असिस्टेंट प्रोफेसर) अध्यापनरत हैं। लगभग 320 विद्यार्थी बी0कॉम0 एवं एम0कॉम0 में अध्ययनरत हैं।

संकाय का पिछले वर्ष का परीक्षाफल शत-प्रतिशत रहा है। सभी प्राध्यापक अपने आपको अद्यतन करने के लिए सेमिनार तथा कार्यशालाओं में भाग लेने के साथ-साथ राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अपने शोधपत्र प्रकाशित कराते हैं। संकाय के अधिकतर प्राध्यापक यू0जी0सी0 एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज (मानव संसाधन विकास केन्द्र) ए0एम0यू0 द्वारा प्रशिक्षित हैं। संकाय के सभी प्राध्यापक यू0जी0सी0 नॉर्मस के अनुसार क्वालीफाइड हैं। महाविद्यालय राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। प्रत्येक प्राध्यापक आदर्श मेंटर की भूमिका के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी कर उनके समाधान करने का भी प्रयास करते हैं।

संकाय के विद्यार्थियों द्वारा समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, विविध प्रतियोगिताएँ जैसे - खेलकूंद, निबन्ध, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, वृक्षारोपण, शैक्षिक भ्रमण एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.) आदि में भी प्रतिभाग किया जा रहा है। संकाय के विद्यार्थियों के लिए O.M.R. Based परीक्षा का भी आयोजन किया गया, जिससे विश्वविद्यालयी परीक्षा में विद्यार्थियों को O.M.R. Based परीक्षा देने में कोई असुविधा न हो। संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ. दुर्गेश शर्मा महाविद्यालय द्वारा गठित विभिन्न समितियों में अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं। संकाय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. चेतन सैनी ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति के प्रभारी व खेल समिति के उपप्रभारी के दायित्त्व के साथ-साथ विभिन्न समितियों में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। संकाय महाविद्यालय के सभी कार्यक्रमों में प्रतिभाग करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

विशेष उपलब्धि

वाणिज्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 योगेश कुमार गुप्ता प्राचार्य द्वारा अर्जित उल्लेखनीय उपलब्धियाँ-

A Paper Published in Edited Book (MHRDC-20224) "Multidisciplinary Higher Education Research Dynamic & Concepts:- sustainable approaches for developed India" entitled that "Impact of India's neighbourhood policy on neighbour countries in recent times' combined publication by NGO-AHSAS & RMPSU, Aligarh. ISBN No-978-93-6559-976-3

वाणिज्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 दुर्गेश शर्मा द्वारा अर्जित उल्लेखनीय उपलब्धियाँ-

Participated two days workshop on "Test Construction in students evaluation system organised by Gyan Mahavidyalaya, Agra Road Aligarh on 5th on 6 th April, 2024.

Participated one day workshop for NAAC Accreditation of affiliated Colleges of Raja Mahendra Pratap Singh, State University, Aligarh. Organised by IIMT College, Aligarh on 24 Feb, 2024.

वाणिज्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 चेतन सैनी द्वारा अर्जित उल्लेखनीय उपलब्धियाँ-

Participated two days workshop on "Test Construction in students evaluation system" Organised by Gyan Mahavidyalaya, Agra Road Aligarh On 5 th and 6 th April, 2024.

A Paper Published in Edited Book on (MHRDC-20224) "Multidisciplinary Higher Education Research Dynamics & Concepts :- sustainable approaches for developed India entitled that "Impact of India's neighborhood Policy on neighbour countries in Recent times" Combined publication by NGO-AHSAS & RMPSU Aligarh. ISBN No-978-93-6559-976-3.

इस वर्ष (2024) अंतिम वर्ष के छात्र अंश ने विश्वविद्यालय परीक्षा (2024) में 9.62 CGPA प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रथम स्थान प्राप्त करने पर वि0वि0 द्वारा आयोजित प्रथम दीक्षांत समारोह में कुलाधिपति श्रीमती आनंदी बेन पटेल व कुलपति प्रो0 चंद्रशेखर द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया गया, जो कि ज्ञान महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के लिए स्वर्णिम पल थे।

विज्ञान संकाय :

महाविद्यालय में विज्ञान संकाय को राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय अलीगढ़ सत्र 2023-24 में स्नातक स्तर पर जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान व गणित विषयों में कक्षाएँ सुचारु रूप से चलायी जा रही है, जिसमें जीव विज्ञान में 180 सीट पर डॉ0 प्रियंका सिंह तथा डॉ0 आमिर खान के नेतृत्त्व में और गणित समूह में 180 सीट पर डॉ0 जी0जी0 वार्ष्णेय एवं श्री धरमपाल सिंह के नेतृत्त्व में सुचारु रूप से चलाई जा रही हैं। महाविद्यालय प्रबंधन के निरन्तर प्रयासों से महाविद्यालय में M.Sc (स्नातकोत्तर) में (गणित) विषय में 60 सीटों पर डॉ0 जी0जी0 वार्ष्णेय तथा M.Sc (रसायन विज्ञान) विषय में 30 सीटों पर डॉ0 प्रशान्त शर्मा के कुशल नेतृत्त्व में चल रही हैं। संकाय प्रभारी डॉ0 प्रशान्त शर्मा के कुशल नेतृत्त्व में लगातार प्रगति पर है। समय-समय पर संकाय के प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाओं द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में उनके पेपर प्रकाशित हो रहे हैं। विज्ञान संकाय में समस्त प्रयोगशालाएँ (जन्तु विज्ञान, भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान व रसायन विज्ञान) नवीन उपकरणों में सुसज्जित हैं। सभी विभागों का परीक्षाफल उत्साहवर्धक रहा है। विज्ञान संकाय में बी0एस-सी0 प्रथम सेमेस्टर की छात्रा निधि सोलंकी वाद-विवाद प्रतियोगिता "सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर प्रभाव" में तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा इसी प्रकार प्रियाकांत, वैष्णवी श्रीवास्तव ने विवेकानन्द कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट में "क्या भारत में महिलाओं को आरक्षण देने से वास्तविक समानता हासिल की जा सकती है?" नामक प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। डी0एस0 कॉलेज में हुयी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता "डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम जी" की जयंती के अवसर पर भौतिक विज्ञान संकाय के प्रभारी जी की उपस्थिति में छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। इसी प्रकार कॉलेजों में होने वाली प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ उत्साहित होकर भाग लेकर महाविद्यालय को अधिक ऊँचाईयों पर पहुँचा रहे हैं। महाविद्यालय के विज्ञान संकाय में प्रत्येक सेमेस्टर में Mid Term परीक्षाएँ तथा प्रत्येक महीने में समय-समय पर बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए महाविद्यालय में कक्षा स्तर पर यूनिट टेस्ट आयोजित किये जाते हैं और विद्यार्थियों की समस्याओं का निराकरण सभी मेन्टर्रस (Mentors) द्वारा किया जाता है।

1. जन्तु विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का जन्तु विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ0 प्रियंका सिंह के कुशल मार्गदर्शन में प्रगति पर अग्रसर है, जिन्होंने हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस Roll of AI and Biotechnology Controlling Disaters of Food Adulteration, Agriculture and Climate Resilience: Challenges and Future Prospects [AONCDFAC-2024] में पेपर प्रस्तुत किया। विभाग में प्रयोगात्मक कक्षाओं पर विशेष ध्यान तथा इस वर्ष झींगा मछली का डिस्सेक्शन तथा कई प्रकार के जीव-जन्तुओं की माउंटिग करके परमानेंट स्लाइड बनवायी गयी हैं। समय-समय पर विद्यार्थियों द्वारा साइंस के असाइनमेंट तथा मॉडल बनाये जाते है।

2. वनस्पति विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का वनस्पति विज्ञान विभाग का कार्य प्रगति के पथ पर अग्रसर है विभागाध्यक्षा डॉ0 आमीर खान के 50 से भी ज्यादा शोधपत्र राष्ट्रीय- अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा समय-समय पर कक्षा स्तर पर बहुविकल्पी प्रश्नों को परीक्षाओं को करवाते रहते हैं, जिससे छात्र-छात्राओं का कॉन्सेप्ट बहुत अधिक अच्छे होते जा रहे हैं।

3. रसायन विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायन विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ0 प्रशांत कुमार शर्मा व ममता गौतम के नेतृत्त्व में प्रगति कर रहा है तथा समस्त छात्र-छात्राएँ उत्साहित रूप से रसायन विज्ञान के प्रयोगात्मक प्रयोगों को सुचारु रूप से प्रतिदिन प्रयोगशाला में करते हैं। समस्त प्राध्यापक-उच्च शिक्षा के मानकों को पूर्ण कर रहे हैं।

4. भौतिक विज्ञान विभाग :

भौतिक विज्ञान विभाग महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के अन्तर्गत आता है। विभागाध्यक्ष डॉ0 मुहम्मद ओबैदर्रहमान के नेतृत्त्व में विभाग प्रगति पर अग्रसर है। विभाग की ओर से विद्यार्थियों को समय-समय पर परीक्षाओं में अच्छे अंक कैसे लाये जाए, इसके बारे में भी बताया जाता है विभाग की ओर से मासिक परीक्षाओं का आयोजन भी समय पर कराया जाता है।

5. गणित विभाग :

महाविद्यालय में गणित विभाग विज्ञान संकाय के अन्तर्गत आता है, जिसके प्रभारी डॉ0 जी0जी0 वार्ष्णेय तथा श्री धर्मपाल सिंह के कुशल नेतृत्त्व में विभाग लगातार प्रगति पर है एवं संकाय के समस्त प्राध्यापकों के द्वारा उच्च शिक्षा के मानकों को पूर्ण किया जा रहा है और (संकाय प्रभारी) तथा अकेडमिक इंचार्ज डॉ0 जी0जी0 वार्ष्णेय जी के द्वारा समस्त विद्यार्थियों की समस्याओं का निवारण किया जाता है तथा वह समस्त प्राध्यापकों की भी समस्याओं का निवारण समय से करने का प्रयास करते हैं।

कला संकाय

महाविद्यालय में कला संकाय को डॉ0 भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा सत्र 2010–11 में स्नातक स्तर पर 540 सीट की मान्यता प्रदान की गई। कला संकाय में नौ विषयों– हिन्दी, अंग्रेजी, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान और शिक्षा शास्त्र में अध्यापन कार्य किया जा रहा है।

कला संकाय में श्री मोहम्मद वाहिद प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं, संकाय के प्रत्येक प्राध्यापक मेंटर की भूमिका निभा रहे हैं, जिसमें प्राध्यापक विद्यार्थियों से उनकी समस्याएँ आदि के बारे में जानने का प्रयास कर उनका समाधान करने का प्रयत्न करते हैं, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होने में सहायता मिलती है।

गत वर्ष बी0ए0 अंतिम वर्ष की छात्रा श्वेता यादव व बी0ए0 तृतीय, चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा भूमिका वार्ष्णेय व बी0ए0 प्रथम, द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा प्राचीन कुमारी ने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। कला संकाय के विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण, पहल के अन्तर्गत जरूरतमंदों को वस्त्र वितरण में सहयोग, पतंग उड़ान प्रतियोगिता के साथ–साथ राष्ट्रीय पर्वों में सहभागिता की। विद्यार्थियों द्वारा अन्य पाठ्यसहगामी गतिविधियों जैसे–खेल प्रतियोगिता व सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में प्रतिभाग किया गया।

वर्तमान में भूगोल विभाग तथा कला संकाय के प्रभारी श्री मोहम्मद वाहिद मुख्य अनुशासन अधिकारी एवं इंटैक प्रभारी व पुरातन छात्र समिति के प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं। समाज शास्त्र विभाग के डॉ0 ललित उपाध्याय अधिशासी अधिकारी तथा कार्यक्रम अधिकारी (राष्ट्रीय सेवा योजना) का कार्यभार संभाल रहे हैं। कला संकाय की डॉ0 किरन लता मनोविज्ञान, विभाग डॉ0 डी0एन0 गुप्ता अर्थशास्त्र विभाग, डॉ0 सोमदत्त शर्मा अंग्रेजी विभाग तथा श्रीमती इन्दू सिंह गृहविज्ञान विभाग में कार्यरत हैं।

Department of Computer Science :

In the year 2010, Gyan Mahavidyalaya started Bachelor of Computer Application (BCA) in Department of Computer Science with the capacity of 60 seats with affiliation to Dr. B. R. Ambedkar University, Agra and approved by AICTE. BCA is currently affiliated to Raja Mahendra Pratap Singh State University, Aligarh (Uttar Pradesh).

Department of Management is headed by Dr. Shivani Peppal with Professionally qualified Mr. Dharmendra Pratap Singh and Mr. Parveen Kumar.

Computer science Department is dedicated to provide a quality of education by including latest Technology, by which the student can learn and meet the demand of present Information Technology Industry.

A well-equipped Computer Lab with all required software is there, where students learn and performed programming based on their courses. A Library and Reading Room facility is also there for students to enhance their knowledge in dynamic environment.

Communication and soft skills program is conducted to improve the language, communication and presentation skills of students, in which various activities e.i. 'Drawing Relay game', 'Chinese whisper game' and 'Blind fold Activity' were organized by the department, which teach them the importance of Facial Expression, Gestures and effective Communication.

A Personality Development Program is also run by the department in which some activities i.e. 'Introduction', 'Resume Building', 'Extempore', were organized by the department, department also conducted various Team Building activities such as 'Human Knot Challenge', 'Octopus Race', 'One Two Three game' e.tc., by which students learn to work in team and also learn the importance of presence of mind.

During the year Students also actively participated in various extracurricular activities such as Debate, Essay Writing etc.

Department of Management :

In the year 2010, Gyan Mahavidyalaya started Bachelor of Business Administration (BBA) in Department of Management with the capacity of 60 seats with affiliation to Dr. B. R. Ambedkar University, Agra. BBA is currently affiliated to Raja Mahendra Pratap Singh State University, Aligarh (Uttar Pradesh).

Department of Management is headed by Dr. Shivani Peppal with Professionally qualified Mr. Parveen Kumar and Mr. Dharmendra Pratap Singh.

A well-equipped Computer Lab, Library and Reading Room facility is there for students to enhance their knowledge in dynamic environment.

Communication and soft skills program is conducted to improve the language and communication skills of students. In this various activities were organized by the department i.e. 'Extempore', 'Drawing Relay game', 'Chinese whisper game' and 'Blind fold Activity', which teach them the importance of Facial Expression, Gestures and Effective communication.

Department also conducted various Team Building activities such as 'Human Knot Challenge', 'Octopus Race', 'One Two Three game' e.tc., by which students learn to work in team and also learn the importance of presence of mind. Some Case study sessions were also organized for students based on real life situations, by which they learn the process of brain storming and problem solving techniques.

Students also actively participated in various extracurricular activities during the year such as Debate, Essay Writing and dancing.

शिक्षक–शिक्षा विभाग (बी.एड.)

शिक्षक–शिक्षा विभाग में पाठ्यक्रम के साथ–साथ अनेक प्रकार की पाठ्यसहगामी गतिविधियों का आयोजन समय–समय पर कराया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार की शैक्षिक प्रतियोगिताएँ, अतिथि व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन का प्रयास किया जाता है एवं उनकी सक्रिय भागीदारी के माध्यम से उनमें छिपी हुई प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है। यह विभाग वरिष्ठ प्राध्यापक श्री गिर्राज किशोर के नेतृत्त्व में प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इनके अतिरिक्त श्री के.डी. सिंह, श्रीमती मेघा अरोरा, श्रीमती ममता गौतम, डॉ. बीना अग्रवाल, श्रीमती माधुरी सिंह एवं श्री सोनू कुमार सिंह प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। वर्तमान में इस विभाग को एन.सी.टी.ई. से 200 सीटों की मान्यता प्राप्त है। सभी प्राध्यापकों के सहयोग से विभाग निरन्तर उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। विभाग के प्राध्यापक स्वयं को अद्यतन करने हेतु राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं तथा जर्नल्स में अपने शोधपत्र प्रकाशित कराते रहते हैं और सेमीनार एवं कार्यशालाओं आदि में प्रतिभाग करते हैं। श्री गिर्राज किशोर (विभागाध्यक्ष) पी–एच0डी0 कर रहे हैं। शिक्षक शिक्षा विभाग महाविद्यालय के ज्ञान भवन परिसर में स्थित है, जहाँ इसके अतिरिक्त पुस्तकालय, वाचनालय, भाषा संसाधन केन्द्र, आर्ट एण्ड क्राफ्ट संसाधन केन्द्र, मनोविज्ञान संसाधन केन्द्र, विज्ञान एवं गणित संसाधन केन्द्र, आई0सी0टी0 संसाधन केन्द्र तथा शारीरिक शिक्षा संसाधन केन्द्र एवं संगीत संसाधन केन्द्र स्थित है।

विभागीय गतिविधियाँ निम्नांकित हैं–

अतिथि व्याख्यान–

विभाग ने समय–समय पर विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों के ज्ञार्नाजन हेतु अतिथि व्याख्यान आयोजित कराये जाते हैं।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ–

'शिक्षक सम्मान' कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के संस्थापक दिवस के आयोजन पर महाविद्यालय द्वारा दिया जाने वाला डॉ0 बी0डी0 गुप्ता स्मारक पुरस्कार के रूप में विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती मेघा अरोरा को दिया गया, इस पुरस्कार में उन्हें पाँच हजार एक सौ रुपये का चैक दिया गया।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का उद्देश्य प्रशिक्षुओं की अर्न्तनिहित शक्तियों को उजागर करने का अवसर प्रदान करना है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वर्तमान सत्र में योग शिविर आन्तरिक सत्रीय परीक्षाएँ, शैक्षिक सेमीनार तथा गांधी जयंती की पूर्व संध्या पर साहित्य समिति द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। इसके पश्चात वाद–विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन कराया गया। इसके अतिरिक्त हरियाली तीज, महापुरुषों की जयन्ती आदि कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर कराया गया। विभाग में मैंटोर (विश्वसनीय सलाहकार) व्यवस्था भी लागू है, जिसमें शिक्षक समय–समय पर अपने प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन करते रहते हैं।

शिक्षक–शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित Biannual & Bilingual International Journal "Gyan Bhav" प्रकाशित होता है, यह पीयर रिव्यूट जर्नल है और यू0जी0सी0 के सूचीबद्ध जर्नल के समकक्ष है, जिसकी मुख्य सम्पादिका का निर्वहन श्रीमती मेघा अरोरा (प्राध्यापिका शिक्षक शिक्षा संकाय) कर रही हैं एवं श्री गिर्राज किशोर, डॉ. बीना अग्रवाल सदस्य के रूप में सहयोग प्रदान करते हैं।

बी0एड0 प्रशिक्षकों का सत्र 2022–24 द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर) के परीक्षा परिणाम में प्रथम स्थान सुभागी सोनी एवं

द्वितीय स्थान पर उदय प्रताप सिंह रहे। बी0एड0 सत्र 2023–25 के द्वितीय सेमेस्टर के परिणाम में प्रथम स्थान पर अभिषेक साह एवं द्वितीय स्थान पर सोनम वार्ष्णेय रहीं।

डी.एल.एड. विभाग (बी.टी.सी.)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उत्तर प्रदेश, लखनऊ से डी0एल0एड0 (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजूकेशन) जिसका पूर्व में नाम बी0टी0सी0 (बेसिक ट्रेनिंग सर्टिफिकेट) था, महाविद्यालय में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित है। यह 6–6 महीने के चार सेमेस्टर में विभाजित है। पूरे अलीगढ़ मण्डल के निजी संस्थानों में केवल ज्ञान महाविद्यालय को ही सर्वप्रथम 24 जनवरी, 2010 से बी0टी0सी0 पाठ्यक्रम संचालित करने की मान्यता प्राप्त हुई। सचिव, परीक्षा नियामक प्राधिकारी, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा आयोजित बी0टी0सी0 की सेमेस्टर परीक्षाओं का केन्द्र होने का गौरव भी सर्वप्रथम हमारे महाविद्यालय को प्राप्त हुआ है।

शिक्षा सभ्य समाज की जननी है, शिक्षा ही व्यक्ति के विकास की प्रथम सीढ़ी है। शिक्षा के बिना सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, यह वास्तविकता भी है, कि बच्चे का सर्वांगीण विकास शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा ही हमें मानव से महामानव बनाती है। विभाग में पाठ्यक्रम के साथ-साथ अनेक स्मरणीय कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है। जिसमें विविध प्रकार की प्रतियोगिताएँ अतिथि व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिता काव्य गोष्ठी, निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, मेंहदी, रंगोली, थाल-सज्जा, राखी बनाओ प्रतियोगिता, शैक्षिक भ्रमण, निःशुल्क प्याऊ, वृक्षारोपण, शैक्षिक प्रदर्शनी, प्रत्येक सेमेस्टर में सत्रीय परीक्षाएँ, कला एवं हस्तशिल्प द्वारा प्रशिक्षुओं का ज्ञानवर्धन किया जाता है। उनकी भागीदारी के माध्यम से छिपी प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है, ताकि प्रशिक्षुओं के कौशल एवं व्यक्तित्त्व में सकारात्मक परिवर्तन हो सके। विभाग में प्रत्येक प्राध्यापक आदर्श मेंटर की भूमिका के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी कर उनका समाधान करने का भी प्रयास करते हैं।

विभाग श्री आर0के0 शर्मा के नेतृत्त्व में सभी प्राध्यापकों के सहयोग से निरन्तर उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। इस समय महाविद्यालय में डी0एल0एड0 बैच 2023 का तृतीय सेमेस्टर चल रहा है।

05 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रशिक्षुओं ने प्रतिभाग किया।

05 जून, 2024 को ग्राम मंदिर के नगला में ''विश्व पर्यावरण दिवस" के उपलक्ष्य में ''पर्यावरण जन जागरूकता रैली" निकाली गई, जिसमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुक किया।

दिनांक 08 अगस्त से 10 अगस्त, 2024 तक डी0एल0एड0 बैच 2023 की प्रथम सेमेस्टर की लिखित परीक्षाएँ सम्पन्न हुई।

दिनांक 12 अगस्त, 2024 से 14 अगस्त, 2024 तक डी0एल0एड0 बैच 2022 की तृतीय सेमेस्टर की लिखित परीक्षाएँ सम्पन्न हुई।

दिनांक 23 दिसंबर, 2024 को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती मनाई गई, जिसमें समस्त प्राध्यापक व प्रशिक्षुओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

जनवरी 2025 में डी0एल0एड0 बैच 2023 की द्वितीय सेमेस्टर व डी0एल0एड0 बैच 2022 को चतुर्थ सेमेस्टर की मुख्य परीक्षाएँ जनवरी में होना प्रस्तावित हैं।

पुस्तकालय विभाग :

वर्तमान समय में शिक्षा के लिए पुस्तकालय का विशेष महत्त्व है, शिक्षा ही राष्ट्र की नींव है। नींव जितनी मजबूत होगी उतना ही सुदृढ़शाली राष्ट्ररूपी महल का निर्माण होगा। पुस्तकालय एक सार्वजनिक संस्था होती है, सन् 1930 में भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ0 एस0आर0 रंगायन जी ने पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियमों को बनाया था रगांनाथन जी ने Five Laws of library Science प्रकाशित की, उस पुस्तक में श्री रगांनाथन जी ने अपने पाँच सूत्र बतलाये, वह निम्न लिखित है।

पुस्तकें सभी के उपयोग के लिये हैं,

प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले।

प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।

पाठ्य के समय की बचत हो।

पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।

महाविद्यालय में पुस्तकालय का संक्षिप्त विवरण-

महाविद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना सन् 1998 में लघु रूप में हुयी थी जो आज पूर्णतया समृद्ध एवं आधुनिकतम तकनीक से युक्त है। पुस्तकालय पूर्णरूपेण Computerised है तथा Library Management Software Datamane Erpuked नवीनतम् प्रोगाम से संचालित है, वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग 27000 से अधिक पुस्तकें हैं।

महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या विश्वविद्यालय एवं शासन के अनुरूप है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विभिन्न कोर्स एवं

अलग-अलग विषयों से सम्बंधित नवीनतम् संस्करण, अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त लेखकों की पुस्तकें महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं प्रबंधनतन्त्र द्वारा तैयार की गयी सभी सूची तथा नयी शिक्षा नीति (NEP) के अनुसार का क्रय किया जाता है। महाविद्यालय में Library Advisory Committee की समय-समय पर मीटिंग करायी जाती है, जिससे पुस्तकालय से सम्बंधित आवश्यकताओं एवं समस्याओं पर विचार-विमर्श किया जाता है।

महाविद्यालय के तीन भवन हैं, सरस्वती भवन, ज्ञान भवन एवं स्वराज भवन में अलग-अलग पुस्तकालय स्थापित हैं।

माँ सरस्वती पुस्तकालय-

इस पुस्तकालय में बी0कॉम, बी0एस-सी0, बी0ए0, एम0एस-सी0 (Chemistry or Maths) एम0कॉम विषयों के नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार प्रसिद्ध एवं विख्याता लेखकों की पुस्तकें शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को उपलब्ध करायी जाती है। यह पुस्तकालय आधुनिक फर्नीचर से सुसज्जित तथा पूर्णतः कम्प्यूटराइज्ड है।

पुस्तकालय में पुस्तकें Glass Door Almiran में सुव्यवस्थित तरीके से सुसज्जित हैं ताकि विद्यार्थी अपनी जरूरत की पुस्तकों को आसानी से खोज सकें अथवा अपने इच्छित विषय से सम्बंधित श्रेष्ठ पुस्तकों तक आसानी से पहुँच सकें। इस पुस्तकालय में विभिन्न विषय से सम्बन्धित लगभग 12,000 Text Book हैं। इस पुस्तकालय में शोध सम्बंधित Material भी उपलब्ध है।

ज्ञान भवन पुस्तकालय-

इस पुस्तकालय से बी0एड0, डी0एल0एड0, बी0बी0ए0, बी0सी0ए0 विषय की पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं। इस पुस्तकालय में Teacher"s Guide के नाम से अलग से विशाल संग्रह है, जिसमें NCER से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध हैं। Gyanendra Collection के नाम से अलग संग्रह है, Education से सम्बंधित जनरल एवं मैगजीन क्रमबद्ध तरीके से मँगायी जाती है। इस पुस्तकालय में Reference Book, General Book, Dictionaries, Encyclopaedias, Year Book, Religious Novel Book आदि उपलब्ध हैं तथा Daily News Paper एवं रोजगार समाचार पत्र नियमित रूप से आते हैं। इसके अलावा पुस्तकालय में E-resource Station के नाम से अलग विभाग है, पुस्तकालय में तीन प्रकार से विद्यार्थियों के बैठने की सुविधा है जिसमें विद्यार्थी अपनी आवश्यकतानुसार अध्ययन कर सकते हैं। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित जनरल ज्ञान अर्थ, ज्ञान भव व ज्ञान विज्ञान हर समय उपलब्ध कराये जाते हैं। इसके अलावा महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित ज्ञान दर्शन, ज्ञान दीप, न्यूज बुलेटिन भी उपलब्ध कराये जाते है। इस पुस्तकालय से UPTE एवं CTE तथा अन्य प्रतियोगी परिक्षाओं के लिए पाठ्य सामगी उपलब्ध करायी जाती है। यह पुस्तकालय CCTV कैमरे की निगरानी में रहता है, इस पुस्तकालय से पुस्तकों का लेन-देन (Circulation) सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जाता है। इस पुस्तकालय के प्रभारी श्री डी0के0 रावत है।

स्वराज्य पुस्तकालय-

यह स्वराज्य भवन में स्थित स्वराज्य पुस्तकालय है, इस पुस्तकालय से ITI के विद्यार्थियों को पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती है। इस पुस्तकालय द्वारा नि:शुल्क बुक बैंक सेवा प्रदान की जाती है। पुस्तकालय खुलने का समय प्रात: 09 बजे से शाम 05 बजे तक का है।

राष्ट्रीय सेवा योजना :

ज्ञान महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ 2007-08 में हुआ। विश्वविद्यालय के नियमानुसार 100 छात्र-छात्राओं की एक यूनिट गठित की गई। इस यूनिट में बी0ए0, बी0एस-सी0, बी0कॉम0 के छात्र-छात्राओं को पंजीकृत किया जाता है। सत्र 2020-21 से स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं को भी राष्ट्रीय सेवा योजना में पंजीकृत होने की स्वीकृति मिल गई है। राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय में वर्ष 2023-24 में कार्यक्रम अधिकारी के पद डॉ0 सोमवीर सिंह का अनुमोदन किया गया। नए कार्यक्रम अधिकारी के अनुमोदन की प्रक्रिया प्रस्तावित है। इससे पूर्व डॉ0 बी0डी0 उपाध्याय, डॉ अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, डॉ0 ललित उपाध्याय तथा डॉ0 नरेन्द्र सिंह ने इस पद पर अपने दायित्त्वों को बखूबी निभाया।

राष्ट्रीय सेवा योजनाका मुख्य उद्देश्य :-

समाज सेवा के माध्यम से स्वयंसेवियों के व्यक्तित्त्व का विकास करना, राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- जिस समाज में रहकर कार्य करते हैं, उसे भली-भाँति समझना।
- अपने समाज की आवश्यकता और कठिनाइयों को पहचानकर उनके समधान में यथाशक्ति अपनी भूमिका निभाना।
- स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक दायित्त्वों की भावना को विकसित करना।
- व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं के समाधान खोजने में अपनी शिक्षा का उपयोग करना।

- नेतृत्त्व के गुण व प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण को ग्रहण करना।
- संकटकालीन एकता एवं सामाजिक समरूपता को क्रियात्मक रूप देना।
- दूसरों के प्रति सम्मान एवं वैज्ञानिक सोच की भावना विकसित करना और लोगों को कुरीति, भ्रष्टाचार, कट्टरता, जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता के विरूद्ध संघर्ष के लिए प्रोत्साहित करना।
- अनुशासन की भावना जाग्रत करते हुए सृजानात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम :-

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित दो प्रकार के कार्यक्रम होते है:

नियमित कार्यक्रम : इस प्रकार के कार्यक्रमों में स्वेच्छासेवी अपने पंजीकरण वर्ष के कार्यकाल में 240 घण्टे विविध गतिविधियों में भाग लेते हैं। गोद लिए गये ग्राम में एक दिवसीय शिविरों के आयोजन के साथ-साथ महाविद्यालयों तथा नगर के अनेक सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

विशेष कार्यक्रमों में किसी ग्राम में एक सात दिवसीय आवासीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया है। इसका समय-समय पर निरीक्षण विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के दूरगामी लाभ बहुत हैं।

विविध चयन प्रक्रियाओं में इसके अतिरिक्त अंक निधारित हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संचालन के लिए महाविद्यालय के चेयरमैन महोदय लगातार प्रोत्साहित कर रहे हैं। प्रबंधक महोदय व प्राचार्य महोदय समय-समय पर शिविर में निरीक्षण के समय स्वेच्छासेवियों को समाज सेवा के लिए प्रेरित करते हैं।

इसका लाभ आने वाले वर्षों में स्वेच्छासेवियों को सार्वजनिक जीवन में प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना समिति का आंतरिक समन्वयक के साथ महाविद्यालय स्तर पर गठन किया गया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रमुख गविविधियाँ :

ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवायोजना इकाई द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस विश्व वानिकी दिवस, 'बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ' अभियान, जल संरक्षण, पौधारोपण श्रमदान व साफ-सफाई, SVEEP कार्यक्रम के अन्तर्गत मतदाता पंजीकरण, मतदाता जागरुकता अभियान, मतदाता हस्ताक्षर अभियान, सहभोज कार्यक्रम, मानवाधिकार दिवस, मतदाता जागरुकता रैली एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम, सुभाषचन्द्र बोस जयंती, सड़क सुरक्षा अभियान के तहत रैली एवं शपथ ग्रहण, वस्त्र वितरण, पहल कार्यक्रम, राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस, विश्व युवा दिवस, स्वामी विवेकानन्द जयंती, सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती व राष्ट्रीय एकता दिवस पर शपथ, निर्वाचन साक्षरता क्लब (E.I.C) का गठन, एन0एन0एस0 द्वारा संविधान दिवस पर उद्देशिका वाचन के साथ दिलाई, मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम, बेजुबान जीव जन्तुओं हेतु दाना पानी पात्र कार्यक्रम आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है।

ग्राम पड़ियावली के पंचायत घर में राष्ट्रीय सेवा योजना के चार एक दिवसीय शिविरों में ग्राम पड़ियावली का सामाजिक, शैक्षिक व आर्थिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण किया गया। शिविर में बौद्धिक सत्रों के साथ-साथ परियोजना कार्य, श्रमदान आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये।

सात दिवसीय आवासीय विशेष शिविर का आयोजन ग्राम पड़ियावली के पंचायत घर में दिनांक 16 मार्च, 2024 तक आयोजित किया गया।

सात दिवसीय विशेष शिविर में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया। बाल अधिकार व महिला सशक्तीकरण पर बल, महिला संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ भारत अभियान के तहत श्रमदान, टी0बी0 मरीजों के लिए पोषण सामग्री वितरण कार्यक्रम, मतदाता जागरुकता रैली, सड़क सुरक्षा अभियान के तहत रैली, बाल शोषण के विरुद्ध अभियान, जल रेल के माध्यम से विश्व जल दिवस पर ग्रामवासियों को जागरुकता का संदेश, नुक्कड़ नाटक द्वारा साक्षरता का संदेश, जीव जन्तु की रक्षा रैली का आयोजन विभिन्न विषयों के प्राध्यापक तथा प्राध्यापिकाओं द्वारा शैक्षिक व्याख्यानों का आयोजन, चार्ट, निबंध, रंगोली, पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सात दिवसीय विशेष शिविर के समापन में मुख्य अतिथि डॉ0 विपिन कुमार वार्ष्णेय, प्रधानाचार्य, डी0ए0वी0 बालक इंटर कॉलेज, विशिष्ट अतिथि सब इंस्पेक्टर पुलिस व एन0एस0एस0 के पुरातन स्वेच्छासेवी श्री नरेश कुमार, प्रबंधक श्री मनोज यादव, प्राचार्य डॉ0 वाई0 के0 गुप्ता, अधिशासी अधिकारी डॉ0 ललित उपाध्याय व पूर्व प्रधान शामिल रहे।

प्राथमिक चिकित्सा समिति

प्राथमिक चिकित्सा समिति महाविद्यालय में एक प्राथमिक उपचार केन्द्र का संचालन कर रही है। समिति के प्रभारी श्री के0डी0 सिंह (प्राध्यापक, शिक्षक-शिक्षा संकाय) प्राथमिक

उपचार के लिए सुप्रशिक्षित है। प्राथमिक उपचार केन्द्र में आपात्कालीन उपचार के लिए बैड, ड्रिप, स्टैण्ड एवं दो प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स उपलब्ध हैं। महाविद्यालय के ज्ञान भवन में प्रभारी श्रीमती ममता गौतम, (शिक्षक-शिक्षा संकाय) हैं जबकि महाविद्यालय के सरस्वती भवन में प्रभारी डॉ0 दुर्गेश शर्मा, वाणिज्य संकाय हैं। प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स में प्राथमिक चिकित्सा की सभी दवाइयाँ मौजूद रहती हैं, इस केन्द्र द्वारा शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारी आदि को आवश्यकता पढ़ने पर प्राथमिक उपचार एवं स्वास्थ्य संबंधी परामर्श भी दिया जाता है। प्राथमिक उपचार के अतिरिक्त समिति द्वारा रोगों के बचाव के लिए अनेक प्रकार की बीमारी, रोग रोधक दवाइयों का छिड़काव भी परिसर में कराया जाता है।

वर्तमान शैक्षिक सत्र (2024-25) के दौरान लगभग 40 व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों जैसे बुखार, सिरदर्द, साधारण चोट एवं महाविद्यालय आते समय विद्यालय के प्रवेश पर सड़क दुर्घटना में चोटिल हुए छात्र-छात्राओं का उपचार प्राइवेट अस्पतालों में समिति के खर्चे पर प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की गई।

इस समिति के प्रभारी श्री के0डी0 सिंह व उप प्रभारी श्री ललित उपाध्याय एवं अन्य सदस्य डॉ0 दुर्गेश शर्मा, श्रीमती ममता गौतम, डॉ0 बीना अग्रवाल, श्रीमती शोभा सारस्तव, श्री रवि कुमार तथा श्रीमती प्रियंका सिंह हैं। यह समिति अपने दायित्वों के निर्वहन हेतु कृतसंकल्पित है।

छात्र कल्याण समिति :

महाविद्यालय में विद्यार्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए छात्र कल्याण सीमिति का गठन किया गया है। इस समिति के प्रभारी डॉ0 दुर्गेश शर्मा हैं। श्रीमती शोभा सारस्तव, मौ0 वाहिद व श्री ललित कुमार समिति के सदस्य है। इस समिति द्वारा महाविद्यालय प्रबन्धन के सहयोग से विद्यार्थियों के कल्याण हेतु समय-समय पर उनको विभिन्न सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। सत्र 2024-25 में विद्यार्थियों को निम्न सुविधाएँ प्रदान की गयी है।

- महाविद्याय में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों को महाविद्यालय की विवरणिका प्रदान की गयी।
- महाविद्यालय में प्रवेशित प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष व तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों को महाविद्यालय की ओर से एक-एक यूनीफार्म नि:शुल्क प्रदान की गई।
- बी0ए0 एवं डी0एल0एड0 प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को महाविद्यालय की ओर से विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की गई।
- ज्ञान आई0टी0आई0 से उत्तीर्ण विद्यार्थियों एवं अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जो ज्ञान महाविद्यालय से बी0ए0, बी0एस-सी0 व बी0कॉम कर रहे हैं, उन्हें शिक्षण शुल्क में 50 प्रतिशत छात्रवृत्ति दी गयी।
- महाविद्यालय के पुरातन छात्र-छात्राओं को परास्नातक में प्रवेश लेने पर 4000/- तक की छात्रवृत्ति दी गई।
- महाविद्यालय में अध्ययनरत/पुरातन विद्यार्थी के सगे भाई/बहिन द्वारा प्रवेश लेने पर शिक्षण शुल्क में 50 प्रतिशत छात्रवृत्ति दी गयी।
- महाविद्यालय में स्नातक व परास्नातक में प्रवेश लेने वाली छात्राओं को शिक्षण शुल्क में 50 प्रतिशत छात्रवृत्ति दी गयी।
- छात्रवृत्ति फार्म भरते समय समिति विशेष ध्यान रखती हैं कि सभी पात्र विद्यार्थियों के फार्म ठीक प्रकार से भरे जायें ताकि उन्हें समाज कल्याण विभाग से मिलने वाली छात्रवृत्ति प्राप्त हो सके।
- नव वर्ष के आगमन पर सहभोज व स्मार्टफोन/टेबलेट वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा मकर संक्रांति के अवसर पर महाविद्यालय में खिचड़ी भोज का भी आयोजन किया गया।
- विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु विभिन्न विषयों के अतिथि व्याख्यान महाविद्यालय द्वारा आयोजित किए जाते हैं।
- महाविद्यालय में खेल को बढ़ावा दे के लिए प्रतिवर्ष खेल सप्ताह का आयोजन कराया जाता है।
- हिन्दी दिवस पर कवि सम्मेलन का आयोजन कराया गया।

शोध एवं प्रकाशन समिति

इस समिति में महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के अनुभवी प्राध्यापक सदस्य हैं। शोध सम्बन्धी नवीनतम् प्रकाशित सामग्री महाविद्यालय में उपलब्ध है, विद्यार्थी एवं प्राध्यापक वर्ग उपलब्ध शोध सामग्री से लाभान्वित हो रहे हैं। वर्तमान में अनेक प्राध्यापक पी-एच0डी0 कर रहे हैं, जिनका समिति सहयोग कर रही है।

महाविद्यालय के निम्नांकित प्रकाशन हैं-

1. ज्ञान भव- यह शिक्षक शिक्षा संकाय का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल का ISSN 2319-8419 है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। अब तक इस जर्नल के 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। वर्तमान में यह Peer Reviewed जर्नल है।

2. ज्ञान अर्थ- यह वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र विभाग का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल का ISSN 2349-1310 है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय

विशेषज्ञों द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। अब तक इस जर्नल के 05 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

3. ज्ञान विज्ञान– यह विज्ञान संकाय का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल का ISSN 2349-2732 है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। अब तक इस जर्नल के 05 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

4. ज्ञान दीप– यह महाविद्यालय की पुरातन विद्यार्थी समिति व सेवा योजन प्रकोष्ठ की संयुक्त वार्षिक पत्रिका है। अब तक इस पत्रिका के 12 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

5. ज्ञान दर्शन– वर्तमान में यह हमारे महाविद्यालय का अर्द्धवार्षिक समाचार बुलेटिन है, इसका वितरण ज्ञान परिवार में किया जाता है। महाविद्यालय तथा ज्ञान निजी आई0टी0आई0 की प्राय: सभी गतिविधियों का समावेश इस समाचार बुलेटिन में किया जाता है। अब तक इसके 36 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

6. ज्ञान पुष्प– यह महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका है। इसे महाविद्यालय का दर्पण भी कहा जाता है, इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करना है। अब तक इस पत्रिका के 15 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

अनुशासन समिति

ज्ञान महाविद्यालय की अनुशासन समिति नियम और विधियों का पालन करते हुए महाविद्यालय में अनुशासन को बनाए रखने में लिए प्रयासरत है। समिति के सभी सदस्यों ने अपनी जिम्मेदारी निभाकर महाविद्यालय में विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए संकल्प किया है।

समिति ने महाविद्यालय में अनुशासन और नियमों का पालन करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। यह समिति अनुशासन संबंधी मामलों की सुनवाई करती है और उचित कार्यवाही करती है।

प्रभारी व मुख्य अनुशासन अधिकारी श्री मोहम्मद वाहिद ने समिति का अच्छी तरह से नेतृत्त्व किया है तथा समिति में सदस्यों के रूप में डॉ0 चेतन सैनी, डॉ0 दुर्गेश शर्मा, श्रीमती मेघा अरोरा, डॉ0 किरन लता, श्री रवि कुमार का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है और उनकी सक्रिय भागीदारी से महाविद्यालय में अनुशासन और सद्भावना को बढ़ावा मिला है।

महाविद्यालय में आयोजित सभी कार्यक्रम और समारोहों में अनुशासन बनाये रखने में अनुशासन समिति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समिति ने छात्रों को शिक्षा के उद्देश्य से स्मार्ट फोन और टेबलेट वितरित करने में भी सहायता की।

अनुशासन समिति ने महाविद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों की सुरक्षा और अनुशासन को सुनिश्चित करने के लिए नए कदम उठाने का संकल्प लिया।

अनुशासन समिति का यह प्रयास महाविद्यालय के अनुशासन में सुधार और उच्च स्तरीय महाविद्यालय वातावरण को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति

महाविद्यालय की सबसे प्रतिष्ठित ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति 2012 से निरंतर सामाजिक दायित्त्वों का निर्वहन कर रही है। समिति हर वर्ष विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष भर करती रहती है जिससे सामाजिक पृष्ठभूमि पर अधिक से अधिक जरूरतमंद लोगों को लाभ पहुँचाया जा सके। समिति अपने कार्यक्रमों के माध्यम से महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं, छात्र-छात्राओं और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को सामाजिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती रहती है। ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति के तत्त्वावधान में स्वराज स्वावलंबी योजना और स्वराज ज्ञान योजना का संचालन किया जा रहा है। वर्ष 2022 से समिति के प्रभारी के रूप में डॉ0 चेतन सैनी अपने दायित्त्व का निर्वहन कर रहे हैं।

स्वराज्य स्वावलम्बी योजना : इस योजना का शुभारम्भ महाविद्यालय के संस्थापक डॉ0 ज्ञानेन्द्र गोयल जी की धर्मपत्नी एवं चेयरमैन श्री दीपक गोयल जी की माता श्रीमती स्वराज्य लता गोयल की स्मृति में सामाजिक दायित्त्वों के अन्तर्गत सन् 2012 में किया गया। इस योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय के निकटवर्ती ग्राम बढ़ौली फतेह खाँ को गोद लिया गया। इस ग्राम की जो लड़की हमारे महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है या शिक्षा प्राप्त कर चुकी है, उन्हें उनके विवाह के शुभ अवसर पर एक सिलाई मशीन उपहार के रूप में दी जाती है। इस योजना के अंतर्गत इस वर्ष 21 नवंबर, 2024 को मुख्य अतिथि सचिव श्री दीपक गोयल, निदेशक डॉ0 गौतम गोयल और प्राचार्य डॉ0 वाई0 के गुप्ता ने बी0ए0 की पुरातन छात्रा कुमारी संध्या को उसके विवाह के अवसर पर एक सिलाई मशीन भेंट की गई। इस अवसर पर समिति प्रभारी डॉ0 चेतन सैनी के साथ समिति के सदस्य मौजूद रहे। इस योजना के अन्तर्गत अब तक 49 सिलाई मशीनें दी जा चुकी हैं।

स्वराज्य ज्ञान योजना– इस योजना का शुभारम्भ सत्र 2013 में महाविद्यालय द्वारा किया गया। इस योजना के अन्तर्गत विकास खण्ड लोधा एवं धनीपुर के 14 ग्रामों को गोद लिया गया जो निम्नांकित हैं– मुकन्दपुर, मईनाथ, न्हौटी, टाउनएरिया मडराक के

भाग हैं, सराय हरनारायन, सराय बुर्ज, ग्राम मंदिर का नगला, ग्राम हाजीपुर चौहट्टा, ग्राम हाजीपुर फतेह खाँ, ग्राम चिरौलिया दाउद खाँ, ग्राम ईशनपुर, ग्राम कमालपुर, बढ़ौली फतेहखाँ तथा पड़ियावली इन चौदह ग्रामों के ग्राम वासियों के साथ उनके ग्राम में बैठक करके सामाजिक सरोकार समिति के सदस्यों द्वारा महाविद्यालय की योजनाओं और सरकार द्वारा चलाई जा रही है विभिन्न योजनाओं की जानकारी समय-समय पर दी जाती है और जागरूकता अभियान चलाए जाते है। उच्च शिक्षा की ओर प्रेरित करने के लिए चौदह ग्रामों के लड़के एवं लड़कियों को महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर में प्रवेश लेने पर छात्रवृत्ति के रूप में छूट दी जाती है। समिति चौदह ग्रामों के प्रधानों को महाविद्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में अतिथि के रूप में आमंत्रित करती है और उनका ज्ञान पट्टिका पहनाकर एवं ज्ञान पुष्प देकर सम्मानित करती है तथा उनसे महाविद्यालय में पढ़ने वाले ग्रामों के छात्र व छात्राओं के सहयोग की अपेक्षा करती है।

अन्य सामाजिक गतिविधियाँ-

जीव जन्तु रक्षा अभियान-इस वर्ष ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति ने भीषण गर्मी को देखते हुए जीव जंतु रक्षा अभियान कार्यक्रम किया जिसके अन्तर्गत जीव-जंतु व पक्षियों के लिए मिट्टी के पात्रों में पानी और दाना भरकर महाविद्याय के विभिन्न स्थानों पर रखा। इसमें सभी ने सक्रिय भूमिका अदा की।

पौधारोपण-पौधारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्ष दिनांक 05.07.2024 को महाविद्यालय के प्रबंधक श्री मनोज यादव व प्राचार्य डॉ0 वाई0के0 गुप्ता ने पौधे लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम प्रारम्भ किया। विद्यार्थियों ने पाम, क्रोटोन आदि के पौधों को घरों पर गमलों में लगाया। महाविद्यालय परिसर में सभी सभी संकाय के विद्यार्थियों के द्वारा पौधारोपण किया गया। पौधारोपण अलग-अलग चरणों में किया गया। इस पुनीत कार्य में महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने भी सहयोग किया।

ज्ञान ज्योति कार्यक्रम- दीपावली के अवसर पर दिनांक 25 अक्टूबर, 2024 को महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे 14 ग्रामों के छात्र-छात्राओं को मुख्य अतिथि प्रबंधक श्री मनोज यादव व प्राचार्य डॉ0 वाई0के0 गुप्ता और उपप्राचार्य डॉ0 हीरेश गोयल द्वारा प्रति गाँव 300 दीये, तेल तथा बाती ज्ञान ज्योति कार्यक्रम के अन्तर्गत दिये गये। ग्राम के छात्र-छात्राएँ दीवाली की रात प्राथमिक, जूनियर स्कूल, पंचायत घर, आँगनबाड़ी केन्द्र एवं जरूरतमंद ग्रामीणों के घर पर दीयों को जलाते हैं, ताकि इस प्रकाश पर्व पर किसी के घर अँधेरा न रहे। कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से छात्र व छात्राओं को सामाजिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर समिति प्रभारी डॉ0 चेतन सैनी व समिति सदस्य मौजूद रहे।

पहल-ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति द्वारा हर वर्ष पहल कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। पहल कार्यक्रम के अंतर्गत पुराने वस्त्र एकत्रित करके जरूरतमंद लोगों को दिए जाते हैं। इस वर्ष 03 दिसंबर, 2024 को समिति के सदस्य, महाविद्यालय के शिक्षक, शिक्षणेत्तर वर्ग तथा विद्यार्थियों के सहयोग से गर्म कपड़े एकत्र किये गये और इन कपड़ों को विद्यार्थियों के सहयोग से समिति द्वारा गोद लिए मडराक में स्थित ईंट भट्टों पर कार्य करने वाले मजदूरों को वितरित किया गया और बच्चों को जूते व कपड़े वितरित किए गये।

खिचड़ी भोज- मकर संक्रान्ति पर दिनांक 13.01.2024 को महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा दिये गये चावल तथा दाल, 40 किलो चावल और 20 किलो दाल को मथुरा रोड स्थित आदिवासी बच्चों के छात्रावास केशवधाम में जाकर वहाँ के प्रबंधन को देते हैं।

विगत वर्ष में आयोजित अन्य सामाजिक गतिविधियाँ-

कम्बल वितरण कार्यक्रम-महाविद्यालय द्वारा गोद लिए चौदह ग्रामों के जरूरतमन्द ग्रामीणों को शीतऋतु के दौरान एक-एक कम्बल इस योजना के अन्तर्गत दिया जाता है। जरूरतमंद ग्रामीणों का चयन ग्राम के विद्यार्थी एवं सम्बन्धित ग्राम प्रधानों द्वारा किया जाता है।

प्रधानमंत्री राहतकोष में दान-विगत वर्ष में कोरोना काल में कोरोना से पीड़ित व्यक्तियों की मदद हेतु दो लाख रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं प्रबंधन के सहयोग से प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा किया गया।

स्वच्छता कार्यक्रम- महात्मा गांधीजी की जयंती पर महाविद्यालय के छात्र व छात्राओं द्वारा महाविद्यालय परिसर में झाड़ूलगाकर सफाई अभियान चलाया गया तथा कूड़े को एक स्थान पर एकत्र करके नष्ट किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं सामाजिक सरोकार समिति के सदस्य उपस्थित रहते हैं।

इस योजना के कार्यान्वयन में सामाजिक सरोकार समिति के प्रभारी डॉ0 चेतन सैनी के साथ समिति सदस्य श्री ललित कुमार, मौ0 वाहिद, श्री रामबाबू लाल, श्री सोनू कुमार, श्रीमती माधुरी सिंह, पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

अनुसूचित जाति अनुसूचित-जनजाति कल्याण समिति

अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारे महाविद्यालय में अनुसूचित जाति,

अनुसूचित-जनजाति कल्याण समिति कार्यरत है। इस समिति में श्री सोनू कुमार सिंह एवं श्रीमती शोभा सारस्वत (शिक्षक शिक्षा विभाग), डॉ0 चेतन सैनी (वाणिज्य संकाय), डॉ0 किरनलता, (कला संकाय), श्रीमती प्रियंका सिंह (विज्ञान संकाय) व श्री प्रवीन कुमार (मैनेजमेंट एण्ड कम्प्यूटर साइंस विभाग) हैं। हमारे महाविद्यालय में लगभग 48 प्रतिशत विद्यार्थी इस समुदाय से आते हैं। महाविद्यालय में मेंटोर व्यवस्था है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक प्राध्यापक द्वारा उनके संकाय के निश्चित संख्या में छात्र-छात्राओं पर वर्षभर विशेष ध्यान दिया जाता है। ये प्राध्यापक समिति के उद्देश्य के विषय से सम्बंधित छात्र-छात्राओं का विशेष ध्यान रखते हैं और समय-समय पर आवश्यक दिशा-निर्देश/परामर्श देते हैं तथा समिति समय-समय पर छात्र-छात्राओं को समाज कल्याण विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली शुल्क प्रतिपूर्ति व छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु प्रेरित कर सहयोग करती है, साथ ही इन छात्र-छात्राओं को जातिगत हीनता से ऊपर लाकर उनको उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करना, समिति द्वारा छात्र-छात्राओं को आशान्वित बनाने एवं उनके भविष्य की प्रगति हेतु उत्तरोत्तर प्रयास करना, जिससे महाविद्यालय में समानता एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाया जा सके तथा छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके।

साहित्यिक समिति

महाविद्यालय में एक साहित्यिक समिति भी छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रही है। समिति के द्वारा विद्यार्थियों को वर्तमान विषय के आधार पर निबंध, काव्य पाठ, भाषण प्रतियोगिता, स्लोगन आदि के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस समिति का गठन डॉ0 वाई0के0 गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें सर्व सम्मति से बी0एड0 विभाग की प्राध्यापिका डॉ0 बीना अग्रवाल को नियुक्त किया गया, साथ ही समिति के द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

2 अक्टूबर, 2024 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के द्वारा स्वदेशी व पर्यावरण संरक्षण में ''गांधी जी के विचारों की उपयोगिता'' को प्रस्तुत किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी संकाय के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। साथ ही 24 अक्टूबर, 2024 को सोशल मीडिया के प्रभाव पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों के अन्तर्मन में सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं को उजागर करना था।

साहित्यिक समिति के अन्तर्गत जो भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं उनमें समिति के सदस्यों की अग्रणी भूमिका रहती है, जिसमें डॉ0 दुर्गेश शर्मा, श्रीमती शोभा सारस्वत, श्री सोनू कुमार, श्रीमती प्रियंका सिंह, डॉ0 शिवानी पिप्पल, डॉ0 सोमदत्त शर्मा, डॉ0 आमिर खान हैं।

सांस्कृतिक समिति

महाविद्यालय में सांस्कृतिक समिति की अहम भूमिका है। प्रत्येक सत्र में अनेकानेक कार्यक्रमों द्वारा भारतीय संस्कृति को सँजोये रखने के उद्देश्य से प्रत्येक विभाग की प्राध्यापिकाएँ समिति की अभिन्न अंग हैं।

बी0एड0 विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती माधुरी सिंह प्रभारी व डॉ0 बीना अग्रवाल, डी0एल0एड0 विभाग से श्रीमती शोभा सारस्वत, श्री ललित कुमार, विज्ञान संकाय से डॉ0 प्रियंका, बी0बी0ए0, बी0सी0ए से डॉ0 शिवानी पिप्पल समिति के सदस्य के रूप में सदैव सक्रिय रहती हैं।

भारतीय संस्कृति में पर्व व त्योहार हमें विरासत में मिले हैं, प्रत्येक त्योहार किसी न किसी संस्कृति से जुड़ा हुआ है। हमारी सांस्कृतिक समिति का मुख्य उद्देश्य है कि अपने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति से अवगत कराना एवं उनसे जोड़े रखना।

इन त्योहारों को हर्षोल्लास से मनाना ज्ञान महाविद्यालय की परम्परा रही है, इसी परम्परा के अन्तर्गत समिति द्वारा नवरात्रि के त्योहार पर महाविद्यालय के प्रबन्धन के सहयोग से भजन एवं गरवा का आयोजन किया गया।

'स्वतंत्रता दिवस' के राष्ट्रीय पर्व पर ध्वजारोहण के उपरान्त हमारे विद्यार्थियों ने सरस्वती भवन स्वराज्य सभागार में देशभक्ति गीत एवं सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति दी।

11 सितम्बर, 2024 को संस्थापक दिवस समारोह में विद्यार्थियों के द्वारा विविध प्रान्तों की सामूहिक नृत्य प्रस्तुतियों का समागम हुआ।

16 दिसम्बर, 2024 को पुरातन छात्र दिवस पर सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी।

इन सभी कार्यक्रमों के अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष महाविद्यालय में गणतन्त्र दिवस, वार्षिकोत्सव तथा महाविद्यालय के अन्य कार्यक्रमों में छात्र-छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना, स्वागत गान व सामूहिक नृत्यों की प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं। प्रत्येग वर्ष सम्पूर्ण कार्यक्रमों की सफलता में समिति प्रभारी के साथ-साथ अन्य समिति सदस्यों का सहयोग होता है।

आन्तरिक गुणवत्ता मूल्यांकन समिति

महाविद्यालय में कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की गुणवत्ता में वृद्धि करने हेतु परामर्श तथा समय-समय पर उनके

कार्यों का मूल्यांकन करने हेतु आन्तरिक गुणवत्ता मूल्यांकन प्रकोष्ठ कार्यरत् है, जिसके प्रभारी श्री गिर्राज किशोर, सदस्य डॉ0 गौतम गोयल (प्रबन्धक समिति), डॉ0 जी0जी0 वार्ष्णेय (विज्ञान संकाय), डॉ0 किरन लता (कला संकाय), श्रीमती मेघा अरोरा (बी0एड0 विभाग), डॉ0 प्रशान्त शर्मा (विज्ञान संकाय) डॉ0 दुर्गेश शर्मा (वाणिज्य संकाय) श्री आर0के शर्मा (डी0एल0एड0 विभाग) मि0 असलूब अहमद (प्रबन्ध समिति) तथा मार्गदर्शक व विशेष सलाहकार श्री दीपक गोयल (सचिव) श्री मनोज यादव(प्रबन्धक) डॉ0 वाई0के0 गुप्ता (प्राचार्य) हैं।

सर्वप्रथम सत्र के प्रारम्भ में नवागन्तुक शिक्षक साथियों से मूल्यांकन प्रपत्र पूर्ण कराया जाता है, जिसमें वे अपनी शैक्षिक योग्यता का उल्लेख करते हुए शैक्षिक उपलब्धियों का वर्णन करते है। समिति की पहली बैठक में प्रभारी एवं सदस्यों के विचार-विमर्श के आधार पर कार्यक्रम की रूपरेखा की तैयारी की जाती है, जिसके आधार पर समिति अपने कार्यों को गति प्रदान करती है। समिति के सुझाव के आधार पर विभिन्न संकाय में अतिथि व्याख्यान कराकर छात्रों को शिक्षण कार्य से संलग्न करने का प्रयास किया जाता है।

पुरातन छात्र समिति एवं रोजगार सलाहकार समिति

पुरातन छात्र समिति का शुभारम्भ ज्ञान महाविद्यालय में 2009 में हुआ और तब से यह समिति निरन्तर रूप से कार्य कर रही है। वर्तमान में समिति के प्रभारी श्री मोहम्मद वाहिद के नेतृत्त्व में यह समिति कार्य कर रही हैं।

कला संकाय से डॉ0 ललित उपाध्याय व डॉ0 किरन लता, बी0कॉम0 से डॉ0 दुर्गेश शर्मा व डॉ0 चेतन सैनी, विज्ञान संकाय से डॉ0 प्रियंका सिंह व श्री धर्मपाल सिंह, बी0एड0 विभाग से श्री गिर्राज किशोर व श्रीमती मेघा अरोरा तथा डी0एल0एड0 विभाग से श्री आर0के0 शर्मा व श्रीमती शोभा सारस्वत सदस्य हैं।

पुरातन छात्र समिति हर वर्ष अपना कार्यक्रम 16 दिसम्बर को आयोजित कराती है, जिसमें महविद्यालय के पुरातन छात्रों को बुलाया जाता है तथा उनका सम्मान किया जाता है। पुरातन छात्र समिति का प्रयास है कि पुराने विद्यार्थी महाविद्यालय से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहें। इसी एक प्रयास के साथ गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनाँक 16 दिसम्बर 2024 को पुरातन छात्र समारोह का आयोजन किया गया। इसमें महाविद्यालय के 62 पुरातन विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी पुरातन विद्यार्थियों का ज्ञान पट्टिका पहनाकर स्वागत किया गया तथा ज्ञान दीप पत्रिका (जो पुरातन विद्यार्थी समिति की वार्षिक पत्रिका है, इसमें पुरातन विद्यार्थियों का जो सर्विस पर लगे हैं, उनका फोटो तथा पद प्रकाशित होता है) भेंट की गई।

सभी पुरातन विद्यार्थियों ने अपने अध्ययन के दौरान अपनी-अपनी पुरानी यादों को ताजा किया तथा महाविद्यालय के बारे में भी अपने अनुभवों को साझा किया। वर्तमान विद्यार्थियों के द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

सरकार की योजना

स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तीकरण योजना के अन्तर्गत स्मार्टफोन एवं टेबलेट वितरण कार्यक्रम।

इस योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय में दिनांक 1 जनवरी, 2025 को एम0कॉम, तृतीय सेमेस्टर एवं एम0एस-सी0 तृतीय सेमेस्टर के 13 छात्र-छात्राओं को टैबलेट व बी0ए0 पंचम सेमेस्टर की 5 छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किये गये।

योजना लाभार्थी विद्यार्थी वितरण :-

क्रम	कक्षा	टेबलेट/स्मार्टफोन की संख्या	छात्र संख्या	छात्रा संख्या	दिनांक	मुख्य अतिथि
1.	M.Com III Sem	04	01	03	01.01.2025	अनिल पाराशर, विधायक कोल अलीगढ़
2.	M.Sc III Sem	09	03	06	"	"
3.	B.A. V Sem	05	03	02	"	"

सामाजिक सरोकार

मकर संक्रांति के अवसर पर खिचड़ी दान कार्यक्रम

स्वराज्य स्वावलंबी योजना के अंतर्गत, छात्रा को विवाह के अवसर पर सिलाई मशीन भेंट करते हुए सचिव, प्राचार्य व अन्य

पौधरोपण करते हुए अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) श्री अखिलेश यादव।

पौधरोपण करते हुए प्रबन्धक श्री मनोज यादव प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता व अन्य।

सामाजिक सरोकार समिति द्वारा दीवाली के अवसर पर 'ज्ञान ज्योति' कार्यक्रम में दीया-बाती व तेल वितरण करते हुए प्रबन्धक, प्राचार्य एवं अन्य

'पहल कार्यक्रम' के अन्तर्गत वस्त्र एकत्र कर जरूरतमंदों को वितरित करते हुए सामाजिक सरोकार समिति के सदस्य।

विविधा

हिंदी दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन की मुख्य अतिथि शहर विधायक श्रीमती मुक्ता संजीव राजा का स्वागत करते हुए

आई.जी.एस.आई. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री योगेन्द्र नारायण (से.नि., आई.ए.एस.) को प्रतीक चिह्न देते हुए चेयरमैन श्री दीपक गोयल

नयी दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में आई.जी.एस.आई. अलीगढ़ चैप्टर व ज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापकगण

बसंतोत्सव में उपस्थित अपर प्राचार्या, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएँ

पुरातन छात्र संवाद व सम्मान के ज्ञानोदय कार्यक्रम के अन्तर्गत उपस्थित पुरातन विद्यार्थियों का सम्मान

दो दिवसीय शैक्षिक कार्यशाला में उपस्थित अतिथिगण व प्रतिभागी

बी.एड. एवं डी.एल.एड. विभाग द्वारा आयोजित स्काउट एवं गाइड शिविर में उपस्थित शिविरार्थी, प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाएँ

प्रतिभा परिचय समारोह में उपस्थित नव प्रवेशित छात्राएँ

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़

वसुधैव कुटुम्बकम्
पूरा विश्व एक परिवार है

विविधा

शिष्टाचार भेंट एवं स्वागत

नवागत जिलाधिकारी श्री संजीव रंजन (आई.ए.एस.) का स्वागत करते हुए श्री के.डी. सिंह एवं आचार्य जयप्रकाश शर्मा

आर.एम.पी.एस.यू. के नवागत कुलपति प्रो. नरेन्द्र बहादुर सिंह का बुके देकर स्वागत करते हुए प्राचार्य अपर प्राचार्या व अन्य

राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में ओज कवि श्री गौरव चौहान कविता पाठ करते हुए

साहित्यिक समिति द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ समिति के सदस्य

बी.एड व डी.एल.एड विभाग द्वारा आयोजित स्काउट एवं गाइड शिविर का निरीक्षण करती हुईं मुख्य अतिथि प्रो. शार्मिला शर्मा

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर शपथ लेते हुए प्राचार्य, अपर प्राचार्या एवं एन.एस.एस. स्वयंसेवक

आर.एम.पी.एस. विश्वविद्यालय की महिला क्रिकेट टीम में चयनित महाविद्यालय की छात्राएँ मुस्कान एवं नेहा जादौन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग शिविर में प्राचार्य के साथ योग गुरु एवं छात्र-छात्राएँ

विविधा

बी.एड. विभाग के छात्र-छात्राओं के साथ शैक्षिक भ्रमण

विश्व पर्यावरण दिवस पर डी.एल.एड. विभाग द्वारा आयोजित जन चेतना रैली

नवरात्रि में डांडिया उत्सव

देश के प्रकृति परीक्षण अभियान के अन्तर्गत श्री सांई आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज के इंटनर्स के साथ ज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापकगण

आई.आई.एम. लखनऊ के एसोसिएट प्रोफेसर प्रकाश सिंह को ज्ञान पुष्प प्रदान करते हुए सी.ई.ओ. श्री नरेन्द्र कुमार गौतम

बीपीसीएल द्वारा गैस सुरक्षा अभियान में सहभागी छात्राएँ

ज्ञान पुष्प

Visitor's View

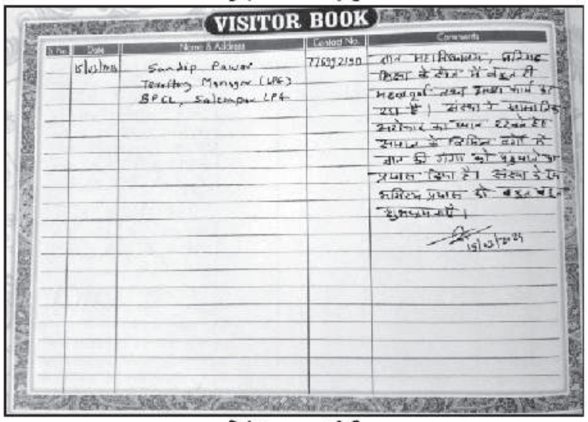

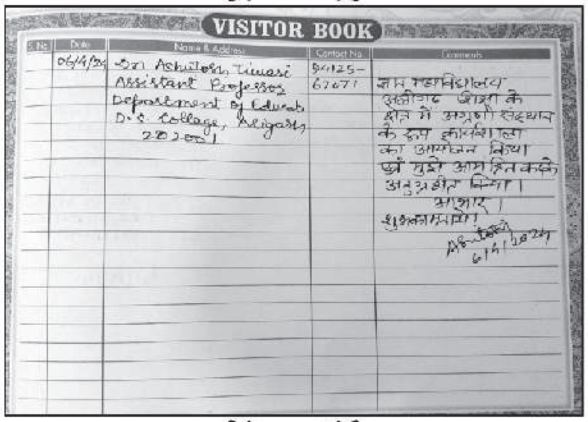

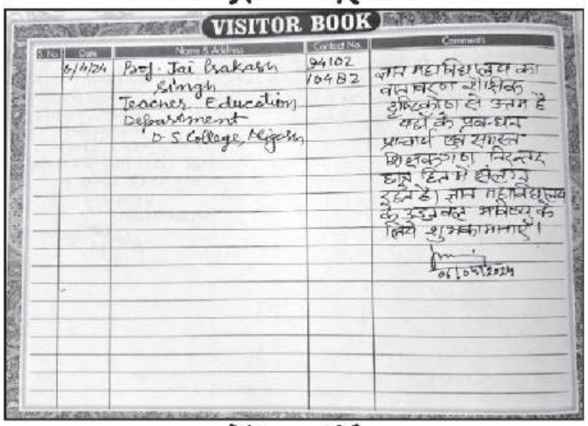

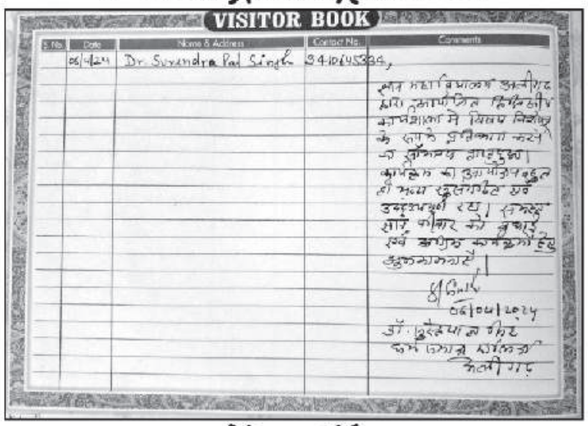

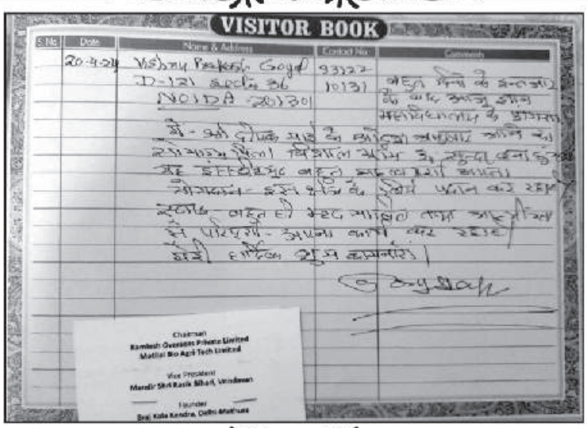

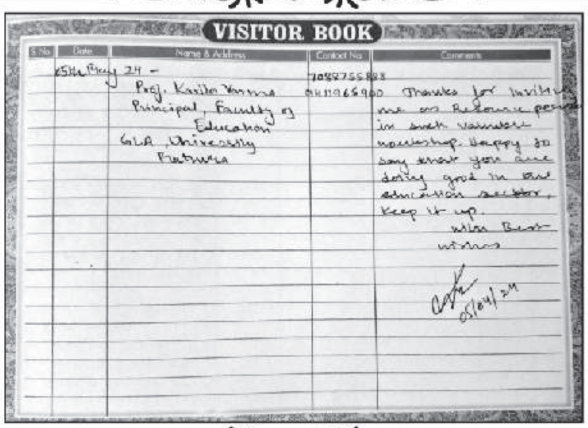

मीडिया की नजर में ज्ञान की खबरें

दैनिक जागरण | अमर उजाला हर सवेरे नया जोश नया उजाला | हिन्दुस्तान | स्वदेश | ANI NEWS | राजपथ

ज्ञान महाविद्यालय में पूजा

ज्ञान महाविद्यालय में बुधवार को वसंत पंचमी के अवसर पर मां सरस्वती की प्रतिमा पर पीले पुष्पों से माल्यार्पण किया गया। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने बताया कि मां सरस्वती का इस अवसर पर पूजन करने से मां प्रसन्न होकर बुद्धि, विवेक और ज्ञान का आशीर्वाद देती हैं। अधिशासी अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय ने कहा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पीला रंग दिमाग को सक्रिय रखता है। इस अवसर पर डॉ. दुर्गेश शर्मा, डॉ. पवन अग्रवाल, डॉ. विवेक मिश्रा, ओमवती आदि मौजूद रहे।

www.jagran.com

ज्ञान महाविद्यालय ने गगन कालेज को 60 रन से हराया

जासं, अलीगढ़ : स्पोर्ट्स स्टेडियम में चल रहे डा. डीएस महलवार मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट में मंगलवार को ज्ञान महाविद्यालय व आइआइएमटी ने अपने-अपने मैच जीतकर बढ़त ली।

पहला मैच गगन कालेज आफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलाजी और ज्ञान महाविद्यालय के बीच खेला गया। गगन कालेज ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी का निर्णय लिया। ज्ञान महाविद्यालय ने 28 ओवर में 174 रन की पारी खेली। गगन कालेज की टीम 15 ओवर में 114 रन पर आलआउट हो गई। ज्ञान महाविद्यालय ने 60 रन से मैच जीत लिया। मैन आफ द मैच हृदेश चुने गए। दूसरा मैच आइआइएमटी और एसएसएलडी के बीच खेला गया। आइआइएमटी ने पहले बल्लेबाजी कर निर्धारित 20 ओवर में 173 की पारी खेली। एसएसएलडी की पूरी टीम 9.6ओवर में मात्र 63 रन पर हो गई। आइआइएमटी ने 116 रनों से जीत हासिल की। मैन आफ द मैच अजय कुमार रहे, जिन्होंने 39 देकर चार विकेट झटके।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.

आगरा रोड स्थित ज्ञान आईटीआई में शुक्रवार को मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना की वर्कशॉप को संबोधित करते संयुक्त आयुक्त वीरेंद्र कुमार व संस्थान अधिकारी। • हिन्दुस्तान

दैनिक जागरण

ज्ञान महाविद्यालय में 'ज्ञान भव जर्नल' का विमोचन करते हुए मध्य में प्रो. जेपी सिंह, डा.

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित वार्षिकोत्सव में मौजूद अतिथि।

ज्ञान महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव का शुभारंभ शलभ माथुर पुलिस महानिरीक्षक ने किया। मुख्य अतिथि शलभ माथुर ने कहा कि व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण एवं अनुशासन रखकर जरूरतमंदों की सेवा करें। उन्होंने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि अच्छे कार्य और मेहनत का फल व्यक्ति को अवश्य मिलता है। वार्षिक पत्रिका ज्ञान पुष्प और अर्धवार्षिक समाचार बुलेटिन ज्ञान दर्शन का विमोचन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने महाविद्यालय की अब तक की प्रगति का प्रतिवेदन प्रस्तुत की।

जरूरतमंदों को गर्म कपड़े वितरित करते ज्ञान महाविद्यालय के छात्र।

ज्ञान महाविद्यालय के छात्रों ने वितरित किए वस्त्र

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की सामाजिक सरोकार समिति, एनएसएस व विभिन्न विभागों के सहयोग से पहल कार्यक्रम के तहत छात्र- छात्राओं द्वारा एकत्र किए गए वस्त्रों व जूतों का वितरण मंगलवार मलिन बस्तियों में किया गया। प्राचार्य डॉ वाईके गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों व शिक्षकों द्वारा इस तरह के सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। इस अवसर पर प्रभारी डॉ. चेतन सैनी, उप प्राचार्य डॉ हीरेश गोयल, अकादमिक प्रभारी डॉ. जीजी वार्ष्णेय, अधिशासी अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ दुर्गेश शर्मा, मो. वाहिद आदि रहे।

वाद विवाद में चैतन्य हरि को मिला प्रथम स्थान

स्वयंसेवकों ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

पड़ियावली में मतदाता जागरूकता रैली निकालते ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवक • सौ. आयोजक

जासं, अलीगढ़: ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के ग्राम पड़ियावली में चल रहे सात दिवसीय आवासीय शिविर के तीसरे दिन स्वयंसेवकों ने सड़क सुरक्षा अभियान के तहत जागरूकता रैली निकाली गई। मतदाता जागरूकता अभियान के तहत पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। द्वितीय बौद्धिक सत्र में अधिशासी अधिकारी डा. ललित उपाध्याय ने युवाओं को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया। डा. विवेक मिश्रा ने जीवन में अनुशासन के महत्व पर व्यापक चर्चा की। इस अवसर पर शीनू, शालू, मोहित, दीपक, कुलदीप, आशीष, विकास, अखिलेश, कुलदीप, रंजीत, अनुराग आदि उपस्थित रहे।

शिक्षकों को बताई प्रश्नपत्र तैयार करने की बारीकियां

जरूरतमंद परिवारों के घरों को रोशन करेंगे छात्र और छात्राएं

ज्ञान महाविद्यालय की छात्रा के विवाह पर दी सिलाई मशीन

ज्ञान महाविद्यालय के छात्रों ने जरूरतमंदों को बांटे कपड़े

जासं, अलीगढ़: ज्ञान महाविद्यालय के एनएसएस के स्वयंसेवकों ने मंगलवार को ठंड से बचाव के लिए मडराक के आसपास के ईंट भट्ठों व मलिन बस्तियों में जरूरतमंदों को कपड़े व जूते वितरित किए। प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता ने कहा कि इस तरह के सामाजिक कार्य में छात्र-छात्राओं को बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। डा. चेतन सैनी ने कहा कि जरूरतमंदों के मदद का कार्य आगे भी जारी रहेगा। डा. हीरेश गोयल, डा. जीजी वार्ष्णेय, डा.ललित उपाध्याय, डा. दुर्गेश शर्मा, मोहम्मद वाहिद उपस्थित रहे।

अलीगढ़ (वि)। ज्ञान महाविद्यालय में हर्षोल्लास से स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। प्रबंधक मनोज यादव, प्राचार्य डॉ.वाईके गुप्ता, ज्ञान निजी आईटीआई के प्रधानाचार्य गौरव यादव व प्रो.पंकज वार्ष्णेय ने ध्वजारोहण किया।

ज्ञान महाविद्यालय में गुरुवार को शिक्षक दिवस के अवसर पर गुरुजनों को साथ नमन करते हुए छात्र व प्रधानाचार्य। • हिन्दुस्तान

ज्ञान महाविद्यालय में योग करतीं छात्राएं, साथ में प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता (मध्य) व अन्य • सौ. आयोजक

छात्र जीवन की यादें हुईं ताजा, गुरुओं को देख भावुक

ज्ञान महाविद्यालय में शोक संवेदना व्यक्त करते प्राचार्य डा. वाइके गुप्ता (मध्य) व अन्य शिक्षक • सौ. आयोजक

शिक्षकों ने दी श्रद्धांजलि

जासं, अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय व ज्ञान आइटीआइ ... शिक्षकों ने मृतकों को दो मिनट का मौन धारण कर ... डा. वाइके गुप्ता, उप प्राचार्य डा. हीरेश गोयल, अ... कुमार, अधिशासी अधिकारी डा. ललित उपाध्या... मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI)

आगरा रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)

ज्ञान दीप निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI)

रूहेरी, अलीगढ़ रोड, हाथरस (हाथरस)

वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा

राम बाबू लाल
अनुदेशक, ज्ञान आई.टी.आई., अलीगढ़

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है और इस विचार की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। वसुधैव कुटुम्बकम् का वास्तविक अर्थ सार्वभौमिक भाईचारे और सभी प्राणियों के परस्पर जुड़ाव के सार को समाहित करता है। वसुधैव कुटुम्बकम् का प्राचीन भारतीय दर्शन इस विचार पर प्रकाश डालता है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति सदस्य है, चाहे वे किसी भी जाति के हों, किसी भी धर्म से हों या उनकी राष्ट्रीयता कुछ भी हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् अवधारणा हमें सभी के साथ दया, करुणा और सम्मान के साथ व्यवहार करना सिखाता है एवं शांति और सद्भाव से रहने का प्रयास करने की प्रेरणा देता है। वसुधैव कुटुम्बकम् हमें सिखाता है कि कैसे हमें सभी के साथ दया, करुणा और सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए एवं शांति और सद्भाव से रहना चाहिये। भाग–दौड़ से भरे और इस विकासशील विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की महत्त्वपूर्णता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। वसुधैव कुटुम्बकम् सन्देश को आज विश्व स्तर पर माना जा रहा है। हम जिस समाज में रहते हैं, वहाँ बहुत ही तेजी से राष्ट्र, जात–पात, संस्कृति की बाधाएँ खत्म होती नजर आ रही हैं। आज हमारा समाज वसुधैव कुटुम्बकम् सन्देश का पालन करके एक ऐसी दुनियां का निर्माण करने को तैयार है, जहाँ सभी के साथ समान रूप से और गरिमापूर्ण व्यवहार किया जाता हो।

वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रभाव से एक बेहतर भविष्य का निमार्ण हो सकता है। भाई–चारा, एकता और एक दूसरे के प्रति सम्मान को बढ़ावा देकर हम असमानताओं को कम कर सकते हैं, तथा मानवता के मूल्य को समझ सकते हैं। विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना शांतिपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और समावेशी से भरे विश्व का निर्माण करेगी। वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव हमें बेहतर विश्व के निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका को याद दिलाता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् : एकता और सामाजिक समरसता का संदेश

खगेश सैनी, फिटर, प्रथम वर्ष
ज्ञान आई.टी.टाई., अलीगढ़

भूमिका:–

वसुधैव कुटुम्बकम् एक प्राचीन भारतीय अवधारणा है, जिसका अर्थ है ''सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है।" यह विचार हमें एकता, सामाजिक समरता और वैश्विक भाईचारे की महत्ता को समझने के लिए प्रेरित करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ :–

वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, जहाँ सभी जीव दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह विचार हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरों के साथ मिलकर रहने की प्रेरणा देता है। यह अवधारणा हमें बताती है कि हम सभी एक परमात्मा की संतान हैं और हमें एक दूसरे के साथ प्रेम और सहयोग से रहना चाहिए।

वसुधैव कुटुम्बकम् का महत्त्व:–

■ वसुधैव कुटुम्बकम् का महत्त्व आज भी बना हुआ है। यह विचार हमें एकता और सामाजिक समरसता की महत्ता को समझने में मदद करता है।

■ वैश्विक भाईचारा को बढ़ावा देता है।

■ हमें अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ मिलकर रहने की प्रेरणा देता है।

■ यह विचार हमें पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ओर ले जाता है।

■ यह विचार हमें सामाजिक न्याय और समानता की ओर ले जाता है।

उदाहरण:–

■ वसुधैव कुटुम्बकम् के उदाहरण हमें इतिहास और संस्कृति में मिलते हैं।

■ प्राचीन भारतीय समाज में परिवार और समाज के बीच गहरा संबंध था।

■ महात्मा गांधी ने वसुधैव कुटुम्बकम् के विचार को अपने आंदोलन में शामिल किया।

■ आधुनिक समय में भी वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश हमें एकता और सामाजिक समरता की ओर ले जाता है।

माता-पिता

लक्ष्मी, इलैक्ट्रीशियन, प्रथम वर्ष
ज्ञान आई.टी.आई. अलीगढ़

हर मुश्किल तब तक हमारी आसान है,
जब तक घर में माता-पिता का सम्मान है।
माँ की दुआ हमेशा मुसीबत से बचाती है,
पिता की सलाह हमेशा तरक्की दिलाती है।
माँ हमारी सबसे बड़ी हमदर्द है,
पिता हमारे जीवनभर के हमसफर हैं।
मुश्किलों के समय जब,
ठोकर लगी तब समझ आया।
कितना जरूरी होता है,
सिर पर माँ-बाप का साया।

हमारे पूर्वज

मो० साहिल, फिटर, द्वितीय वर्ष
ज्ञान आई.टी.आई., अलीगढ़

छोटू के पिताजी ने उसे बताया था, पहले उनके पूर्वज जमीन के ऊपर ही रहा करते थे। उनका जीवन वहाँ सामान्य था। बिना किसी प्रकार के यंत्र की सहायता के वे वहाँ रहा करते थे। इतना ही नहीं वहाँ पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और जीव भी रहा करते थे।

छोटू के पिता की इन बातों से लगता है कि मंगल ग्रह पर धरती के ऊपर का जीवन जैसा सामान्य रहा होगा। ठीक वैसे ही जैसे हम पृथ्वी पर रहते हैं। परंतु वातावरण में परिवर्तन आने के बाद से सब कुछ बदल गया। पेड़-पौधे और पशु-पक्षी नष्ट हो गए। ठंड इतनी ज्यादा बढ़ गई कि आम लोगों का वहाँ रहना मुश्किल हो गया। लोगों ने यंत्रों की सहायता से जमीन के नीचे घर बना लिए।

माँ

राघव यादव, इलैक्ट्रीशियन, प्रथम वर्ष
ज्ञान आई.टी.आई., अलीगढ़

1
जिसमें माँ का प्यार ना हो,
वो कोई शोहरत नहीं है,
दुनिया में माँ से बड़ी कोई
दौलत नहीं है।

2
जिसके होने से मैं खुद को
मुक्कमल मानता हूँ।
मेरे रब के बाद मैं बस
अपनी माँ को जानता हूँ।।

3
माँग लूँ ये दुआ कि फिर यही यहाँ मिले,
फिर वही गोद और वही माँ मिले।

4
हर रिश्ते में मिलावट देख,
कच्चे रंगों की सजावट देखी।
लेकिन माँ के चेहरे पे ना कभी,
थकावट देखी, ना ममता में कभी मिलावट देखी।

5
माँ जब से मेरी, तेरे संग से यह पूरी गई,
जिंदगी जीना जैसे एक मजबूरी हो गई।
आज पूरी तो हो गई ख्वाहिश मेरी,
मगर तेरे बिना जिन्दगी अधूरी हो गई।।

6
हजारों गम हो फिर भी मैं खुशी से फूल जाता हूँ।
जब हँसती है मेरी माँ, तो मैं हर गम भूल जाता हूँ।

शिक्षा का महत्त्व

प्रशान्त, (इलैक्ट्रीशियन) द्वितीय वर्ष
ज्ञानदीप आई.टी.आई., रूहेरी

पढ़ाई में लगा लो लगन,
ध्यान में हो जाओ मगन मेरे यारा।।
ऐ समय जीवन में, मिलने वाला न दोबारा।।
तुम पढ़ने लगे, तुम लिखने लगे मेरे यारा।।
ऐ विद्यार्थी जीवन है, महत्त्वपूर्ण तुम्हारा।।
करो नैतिक शिक्षा का श्रवण,
करो संस्कृतिक शिक्षा का सृजन मेरे यारा।।
जिसमें समाज का होगा, निर्माण सबसे प्यारा।।
तुम धैर्य रखो, तुम विनय करो मेरे यारा।।
जिससे जीवन बनेगा, सफल तुम्हारा।।
करो अनुशासन में रहकर, कार्य मेरे यारा।।
जिसमें हिन्दुस्तान बनेगा, सबसे न्यारा।।
तुम हँसते हो, तुम हँसाते रहो, मेरे यारा।।
हम एक नए भारत का, विकास करेंगे सबसे प्यारा।।

छात्र शक्ति का महत्त्व

जीतू, फिटर, द्वितीय वर्ष
ज्ञानदीप आई.टी.आई., रूहेरी

जीवन का मुख्य आधार है,
ज्ञान से सिंचित होता संसार है,
जय का, अभय का प्रत्यक्ष प्रमाण है,
छात्र शक्ति से होता राष्ट्र का निर्माण है।
यह शक्ति ही वह शक्ति है,
जो युवाओं को जगाती है,
यह शक्ति ही वह शक्ति है,
जो जीवन को सफल बनाती है।
इस शक्ति के बल पर ही,
कई कहानियाँ रची जाती हैं,
इस शक्ति की अविरल धारा में,
वीर गाथाएँ गोते लगाती हैं।
छात्र शक्ति परिभाषा है परिवर्तन की,
छात्र शक्ति गाथा होती अभिनंदन की,
जब-जब उठ इस शक्ति ने प्रतिकार किया,
तब-तब इस शक्ति ने संसार का उद्धार किया।
छात्र शक्ति का चोला है संघर्षों का,
बलिदानी है, बना हुआ है वचनों का,
छात्र शक्ति ही आधार सिंहासन का।

परीक्षा

देवेश, (इलैक्ट्रीशियन) द्वितीय वर्ष
ज्ञानदीप आई.टी.आई., रूहेरी

इम्तहान का चढ़ा हुआ है, कैसा हाय बुखार,
पढ़ना पड़ता रैन दिवस ही, राहत किसी न बार।
मम्मी पापा इस चिंता में, नम्बर आये और,
पढ़लो-पढ़लो का ही घर में रोज मचाते शोर।
फेल नहीं हो जाये मुन्नी, हरदम करें विचार,
पढ़ना पढ़ता है रेन दिवस ही, राहत किसी न बार।
सर का दर्द बनी मम्मी ही, लेकर झंडू बाम,
आगे पीछे मेरे दौड़े, पल भर नहीं आराम।
राई, मिर्च से नजर उतारे, पेपर में हर बार,
पढ़ना पड़ता रैन दिवस ही, राहत किसी न बार।
पूजा अब पहले से ज्यादा, मम्मी करती रोज,
नए-नए पकवान खिलाती, प्रभु की हर दिन मौज।
भारी भीड़ बढ़ी मंदिर में, बिना किसी त्योहार,
पढ़ना पड़ता रैन दिवस ही, राहत किसी न बार।।
इम्तिहान का काश कोई, कर दे काम तमाम,
चैन छीनकर हम बच्चों का, कर दी नींद हराम।
जी करता जोगी बन जाऊँ, छोड़ चलूँ घर-बार,
पढ़ना पड़ता रैन दिवस ही, राहत किसी न बार।

अतिथि देवो भवः

वर्धन पटसारिया
इलैक्ट्रीशियन, द्वितीय वर्ष, ज्ञानदीप आई.टी.आई., रूहेरी

भूमिका– 'अतिथि देवो भवः' एक बहुत ही प्राचीन प्रचलित कहावत है, जिसका अर्थ है कि अतिथि यानि कि मेहमान देवता के समान होते हैं। प्राचीनकाल से ही भारत देश में अतिथियों को भगवान की तरह सम्मान दिया जाता है और उनका आदर सत्कार किया जाता है। अतिथि के हम खान-पान का ध्यान रखते हैं और उनके रहने की उचित व्यवस्था करते हैं। भारतीय संस्कृति में अतिथि का दर्जा पूजनीय है और वह देवों के समान है।

अतिथि के प्रकार–घर पर आने वाले अतिथि कोई भी हो सकते हैं। वह हमारे कुछ रिश्तेदार भी हो सकते हैं या फिर हमारे दोस्त भी हो सकते हैं। आज के समय में परिवार के लोग भी अतिथि के रूप में ही एक दूसरे के यहाँ जाने लगे हैं। कुछ अतिथि थोड़ा समय के लिए आते हैं और कुछ अतिथि कुछ महीनों के लिए आते हैं लेकिन कोई भी हमेशा के लिए नहीं आता है और हमें इनका हर संभव सत्कार करना चाहिए।

अतिथि आगमन–अतिथि का आगमन व्यक्ति को उतनी ही खुशी देता है जितनी खुशी देवों का सत्कार करने से मिलती है। अतिथि हमारे घर में किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आते हैं। वह हमारे लिए खुशखबरी लाते हैं और तोहफे और मिठाईयों के रूप में खुशियाँ बाँट जाते हैं। अतिथि के आने-जाने से संबंधों में गहराई बनी रहती है और उनका ध्यान रखना और उनके लिए उचित व्यवस्था करना हमारा कर्तव्य है।

अपरिचित अतिथि– कई बार कुछ अजनबी हमारे घर पर अतिथि बनकर आते हैं और उनका उद्देश्य हमें लूटना होता है। हमें ऐसे अतिथियों से सावधान रहना चाहिए और यदि वह हमारे अतिथि हैं तो परिवार का कोई न कोई सदस्य उन्हें जानता ही होगा। यदि उन्हें नहीं जानते तो उन्हें सावधानीपूर्वक घर में बिठाएँ और अतिथि की तरह ही उनका सत्कार करें।

निष्कर्ष– अतिथि का हमारी संस्कृति में बहुत महत्त्व है और उन्हें देवों का दर्जा दिया गया है। हमें बच्चों को बचपन से ही अतिथि का सत्कार करना सिखाना चाहिए और अतिथि से हमेशा प्रेमपूर्वक बात करनी चाहिए। हमारे मन में अतिथि के लिए कभी भी हीनभावना नहीं आनी चाहिए और हमें कभी उनका निरादर नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति कभी भी अपने अतिथि का सत्कार नहीं करता भगवान भी उसके घर नहीं आते हैं। यदि आप अतिथि का सम्मान नहीं करते तो आपकी पढ़ाई व्यर्थ है। अतिथि पूजनीय है और उनका आगमन जीवन में खुशियाँ भर जाता है।

जीवन संघर्ष

लालू राजपूत
इलैक्ट्रीशियन, द्वितीय वर्ष
ज्ञानदीप आई.टी.आई., रूहेरी

संघर्ष ही जीवन का हिस्सा है, मंजिल ही जीवन का किस्सा है।
विद्यार्थी बन मंजिल को पाना है, राही बन मंजिल तक जाना है।
असफलता ही इनके जीवन का हिस्सा है,
सफलता ही इनके जीवन का किस्सा है।
माँ के सपनों को पूरा करना है,
पिता की उम्मीदों पर खरा उतरना है।
दूसरों से पहले इन्हें खुद को जीतना है, दूसरों से पहले इन्हें लक्ष्य को भेदना है।
रातों से इन्हें लड़ना पड़ता है, खुद को इन्हें जीतना पड़ता है।
संघर्ष ही जीवन का किस्सा है,
कलम टूट जाती है, मुश्किलें भी हार जाती हैं।
इन विद्यार्थियों के सामने, मुसीबतें भी झुक जाती हैं,
मुसीबतों को आसानी से झेल लेते हैं।
उलझनों को आसानी से सुलझा लेते हैं। विद्यार्थियों का दर्पण पुस्तक हैं।

साहस वीरता

शिवम
इलैक्ट्रीशियन, द्वितीय वर्ष
ज्ञानदीप आई.टी.आई., रूहेरी

भोर का विभोर हूँ, मैं मेरे मन का शोर हूँ,
आगमन हूँ कहीं सावन का, कहीं सपनों का वीर सिपाही हूँ।
मैंने सीखा जीवन को खुलकर जीना,
मैंने सीखा नयनों से निज का नीर पीना,
मैं करता हूँ पालन अनुशासन का,
मैं बनता हूँ आधार स्वप्न सिंहासन का।
भय से परे अभय हूँ, मैं परिवर्तन का समय हूँ,
आगमन हूँ शुभ कारज का, हूँ आशाओं का प्रतीक।
मैं वीर सिपाही हूँ, समय की सही मर्यादा हूँ,
आशाओं की अभिलाषा हूँ, मैं ज्ञान के प्रति समर्पित हूँ।
निज गुरू के चरणों में अर्पित हूँ, क्षय से अनभिज्ञ अक्षय हूँ,
नकारात्मक के लिए प्रलय हूँ, आगमन हूँ बसंत बहारों का,
मैं साहस लड़ता वीर सिपाही हूँ।

ज्ञान निजी आई0टी0आई0
ज्ञान महाविद्यालय परिसर, आगरा रोड, अलीगढ़

स्थापना एवं उपलब्धियाँ

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई0टी0आई0) का शुभारम्भ 25 सितम्बर, 2012 को हुआ। इस संस्थान में फिटर तथा इलैक्ट्रीशियन ट्रेड हैं। सन् 2012-2014 के लिए फिटर तथा इलैक्ट्रीशियन ट्रेड में 2+2 यूनिट की मान्यता प्राप्त हुई थी। इसके बाद क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इण्डिया, नयी दिल्ली की टीम ने मानकों के अनुसार संस्थान का निरीक्षण किया तथा वर्ष-2014 में इलैक्ट्रीशियन ट्रेड की प्रवेश क्षमता 2+2+4 अतिरिक्त यूनिट हो गयी। वर्ष 2015 में क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इण्डिया, नयी दिल्ली की टीम ने पुन: ज्ञान निजी आई0टी0आई0 का निरीक्षण कर फिटर ट्रेड की प्रवेश क्षमता में 2+2+4 अतिरिक्त यूनिट की वृद्धि की। इस प्रकार फिटर ट्रेड की कुल प्रवेश क्षमता 4+4+4 यूनिट हो गयी। 30 जुलाई, 2015 को क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इण्डिया द्वारा अनुबंधित संस्था केयर रेटिंग द्वारा संस्थान को 4 स्टार ग्रेडिंग से नवाजा गया। पुन: वर्ष 2016 में इलैक्ट्रीशियन ट्रेड में 2+2+2 अतिरिक्त यूनिट की वृद्धि कर प्रवेश क्षमता को 6+6+6 यूनिट किया गया। 12 सितम्बर, 2019 में पुन: इलैक्ट्रीशियन ट्रेड में 2+2+2 अतिरिक्त यूनिट की वृद्धि कर प्रवेश क्षमता को 8+8+8 यूनिट कर दिया गया।

वर्तमान में कुल अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 655 है, जिसमें फिटर प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 176 तथा इलैक्ट्रीशियन प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 479 है।

वर्ष 2024-25 में आयोजित कार्यक्रम

(अ) कैम्पस प्लेसमेन्ट का आयोजन

1. 15 मार्च, 2024 को हमारे संस्थान में अलीगढ़ स्थित ऑटोलॉक्स निर्माता कम्पनी पावना इण्डस्ट्रीज लिमिटेड ने अपने जी0टी0 रोड भाँकरी प्लांट हेतु कैम्पस प्लेसमेन्ट का आयोजन कर हमारे संस्थान के 13 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया।
2. 9 मई, 2024 को हमारे संस्थान में फरीदाबाद (हरियाणा) स्थित न्यू एलनवैरी वर्क्स लिमिटेड कम्पनी ने कैम्पस प्लेसमेन्ट का आयोजन कर हमारे संस्थान के 15 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया।
3. 11 जून, 2024 को हमारे संस्थान में श्रीराम पिस्टन एण्ड रिंग्स लिमिटेड द्वारा पथरेडी प्लांट हेतु कैम्पस प्लेसमेन्ट का आयोजन कर हमारे संस्थान के 16 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया।
4. 7 अक्टूबर, 2024 को हमारे संस्थान में गियर निर्माता कम्पनी न्यू एलनवैरी वर्क्स लिमिटेड, फरीदाबाद ने कैम्पस प्लेसमेन्ट का आयोजन कर हमारे संस्थान के 08 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया।
5. 01 दिसम्बर, 2024 को दो पहिया वाहन निर्माता कम्पनी हीरोमोटो कॉर्प लिमिटेड द्वारा नीमराना (राजस्थान) प्लांट हेतु कैम्पस प्लेसमेन्ट का आयोजन कर हमारे संस्थान के 30 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया।

(ब) अन्य कार्यक्रम

1. 19 मार्च, 2024 को हमारे संस्थान में लोधा (अलीगढ़) विकास खण्ड के 100 उत्कृष्ट चयनित छात्रों ने राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अन्तर्गत एक्पोजर विजिट की।
2. 30 मार्च, 2024 को हमारे संस्थान में गोण्डा (अलीगढ़) विकास खण्ड के चयनित छात्रों ने राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अन्तर्गत एक्सपोजर विजिट की।
3. 17 सितम्बर, 2024 को संस्थान के परिसर में विश्वकर्मा पूजन एवं हवन का आयोजन किया गया।
4. 22 अक्टूबर, 2024 को टेलीकॉम सैक्टर की 5जी सर्विस प्रदाता कम्पनी जियो लिमिटेड के प्रतिनिधियों ने अलीगढ़ क्षेत्र के लिए जिओ एअर फाइवर तकनीशियन हेतु ऑन लाइन वर्कशाप का आयोजन किया, इसमें हमारे विद्यार्थियों को जियो एअर फाइवर से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया।
5. 26 अक्टूबर, 2024 को हमारे संस्थान में कौशल दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया।
6. 16 दिसम्बर, 2024 को ज्ञान महाविद्यालय एवं हमारे संस्थान ने संयुक्त रूप से पुरातन विद्यार्थी संवाद एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया।
7. 20 दिसम्बर, 2024 को मुख्य मंत्री युवा उद्यमी योजना का आयोजन किया गया, इसमें उद्यम तथा स्वरोजगार हेतु सरकार से ऋण लेने के लिए नामांकन किये गये।
8. 01 जनवरी, 2025 को युवाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने हेतु उत्तर प्रदेश की महत्त्वाकांक्षी डी0जी0 शक्ति योजना के अन्तर्गत हमारे संस्थान के 113 प्रशिक्षणार्थियों को टेबलेट वितरित किये गये।

ज्ञान दीप निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I)

आगरा रोड, रूहेरी (हाथरस)

ज्ञान दीप निजी आई.टी.आई. भी ज्ञान निजी आई.टी.आई. की भाँति ज्ञान महाविद्यालय व ज्ञान परिवार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो हाथरस जनपद के रूहेरी कस्बे में आगरा रोड पर स्थित है। यह हाथरस जनपद के सभी प्राइवेट औद्योगिक संस्थानों में मुख्य व सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यह संस्थान विगत कुछ वर्षों से प्रशिक्षणार्थियों को तकनीकी एवं रोजगार परक प्रशिक्षण देकर महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर रहा है। यह हाथरस जनपद का निजी संस्थान है, जो लगातार विकास की ओर अग्रसर है।

वर्तमान युग तकनीकी विकास का युग है, पिछले 20 वर्षों में तकनीकी का विकास तेजी से हुआ है। आधारभूत संरचना, बिजली, सड़क आदि सुदूर गाँव तक पहुँचे हैं। इससे शहरी लोगों के साथ-साथ ग्रामीणों की आम आवश्यकताओं में वृद्धि हुई है और तकनीकी विकास व मशीनीकरण के लाभ के कारण उनके रहन सहन के स्तर में तेजी से सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। ऐसी स्थिति में देश के प्रत्येक भाग में व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित लोगों की माँग में वृद्धि हुई है।

इस समय भारत सरकार औद्योगिक विकास के लिए पूर्णतः प्रयासरत है, इसके अन्तर्गत सरकार कौशल विकास पर जोर दे रही है। ज्ञान दीप निजी आई.टी.आई., एन0सी0वी0टी0 एवं श्रम मंत्रालय, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त संस्थान है। इसका प्रमाण पत्र सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा निजी क्षेत्र के सभी प्रकार के रोजगार के लिए मान्य है। यह संस्थान आगरा रोड पर हाथरस सिटी से 4 कि0मी0 दूरी पर अलीगढ़ की तरफ स्थित है। आने जाने के लिए बस, ऑटो आदि की सुविधा उपलब्ध है।

संस्थान में वर्तमान में मुख्यतः दो व्यवसाय उपलब्ध है, जिसमें फिटर तथा इलैक्ट्रीशियन व्यवसाय सम्मिलित है। ये दोनों ही व्यवसाय एन0सी0वी0टी0 दिल्ली से मान्यता प्राप्त हैं। दोनों व्यवसायों हेतु प्रशिक्षण की अवधि दो-दो वर्ष तथा प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता मान्यता प्राप्त बोर्ड से गणित व विज्ञान विषय सहित हाईस्कूल अथवा समकक्ष योग्यता अनिवार्य है।

स्थापना व उपलब्धियाँ :-

ज्ञान दीप औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ज्ञान दीप निजी आई.टी.आई.) का शुभारम्भ 12 सितम्बर, 2016 को फिटर तथा इलैक्ट्रीशियन व्यवसाय में प्रवेश के साथ हुआ था। संस्थान के चेयरमैन माननीय श्री दीपक गोयल जी, निदेशक माननीय डॉ0 गौतम गोयल जी, प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों के अथक प्रयासों से संस्थान ने वर्ष दर वर्ष नयी ऊचाईयों को छुआ है तथा भविष्य में उपलब्धियों को हासिल करने हेतु प्रयासरत है। संस्थान में वर्ष 2016 में इलैक्ट्रीशियन तथा फिटर की प्रत्येक ट्रेड में 2+2+2 फिटर तथा 2+2+2 इलैक्ट्रीशियन की मान्यता प्राप्त हुई थी। समय-समय पर क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इण्डिया, नयी दिल्ली की टीम ने ज्ञान दीप आई.टी.आई. का निरीक्षण किया तथा टीम द्वारा मानक के अनुसार सभी मूलभूत सुविधाएँ मिलने पर सीटों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। वर्ष 2020 में इलैक्ट्रीशियन ट्रेड की प्रवेश समता में 4+4+2 अतिरिक्त यूनिट वृद्धि की गयी। इस प्रकार इलैक्ट्रीशियन की प्रवेश क्षमता 6+6+2 हो गयी। इस प्रकार वर्तमान में संस्थान में कुल प्रशिक्षणार्थियों की संख्या इलैक्ट्रीशियन में 280 तथा फिटर में 120 है।

सुविधाएँ:-

ज्ञान दीप आई.टी.आई. का परिसर स्वच्छ, शान्त, प्रदूषण मुक्त, मनोरम प्राकृतिक वातावरण में स्थित है। इसके अतिरिक्त संस्थान में उपयुक्त आकार के हवादार एवं सुसज्जित पर्याप्त अध्यापन कक्ष, पुस्तकालय, आई.टी.आई. प्रयोगशाला, फिटर वर्कशाप, इलैक्ट्रीशियन वर्कशाप, इंजीनियरिंग ड्राइंग हॉल आदि का पूर्ण प्रबन्ध है। साथ ही दवाखाना, शुद्ध पेयजल, खेलकूद हेतु उपयुक्त मैदान आदि की भी समुचित व्यवस्था है। संस्थान परिसर में अग्निशमन जैसे सुरक्षा उपकरण भी उपयुक्त स्थानों पर लगे हुए है।

1. टेबलेट वितरण- 29 नबंम्वर, 2024

रूहेरी स्थित ज्ञानदीप आई0टी0आई0 में सारथी एवं ज्ञान परिवार के द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा टेबलेट वितरण किये गये, जिसमें मुख्य अतिथि नगरपालिका अध्यक्षा-श्वेता चौधरी थीं। इस मौके पर श्री दीपक गोयल, डॉ0 गौतम गोयल, ओमपाल गौतम, सन्तोष सागर, मुकेश साहित्य, वेद पस्तौर, मीनू शर्मा, कुलदीप शुक्ला आदि मौजूद रहे।

2. पौधारोपण 8 जुलाई, 2024

उपस्थित सी0ई0ओ0 नरेंन्द्र गौतम, मफललाल जी, सबरस मुरसानी, प्राधानाचार्य ओमपाल गौतम, बृजेश कुमार, श्री कृष्णा, साहब दयाल, सुनील कुमार, सुरेश चन्द्र आदि।

3. विश्वकर्मा पूजा का आयोजन 17 सितम्बर, 2024

उपस्थित- प्राधानाचार्य ओमपाल गौतम, गाम प्रधान रूहेरी, तालेवर सिंह, श्री कृष्ण, बृजेश कुमार, साहब दयाल, सुरेश चन्द्र व सभी छात्र।

4. दीक्षान्त समारोह 26 अक्टूबर, 2024

मुख्य अतिथि-ग्राम प्रधान तालेवर सिंह, प्राधानाचार्य श्री ओमपाल गौतम, बृजेश कुमार, श्री कृष्णा, साहब दयाल, सुरेश चन्द्र, सुनील कुमार आदि।

5. कैम्पस प्लेसमेंट 8 अक्टूबर, 2024

40 विद्यार्थी ने भाग लिया, 20 विद्यार्थी चयनित हुए। कम्पनी-श्री राम पिस्टन एण्ड रिंग्स।

उपस्थित- HR अजय कुमार, सहायक सुनील कुमार, प्रधानाचार्य श्री ओमपाल गौतम, श्री कृष्णा, बृजेश कुमार, साहब दयाल, सुरेश चन्द्र, सुनील कुमार आदि।

6. कैम्पस प्लेसमेंट 12 नबम्वर, 2024

70 विद्यार्थी ने भाग लिया, 24 विद्यार्थी चयनित हुए।

उपस्थित- HR अतुल कुमार, प्रोडक्सन मैनेजर कपिल पाण्डे, प्रधानाचार्य श्री ओमपाल गौतम, बृजेश कुमार, श्री कृष्णा, साहब दयाल, सुरेश चन्द्र, आदि।

सत्र : 2024-25

ज्ञान महाविद्यालय एवं ज्ञान निजी आई.टी.आई. द्वारा आयोजित तथा प्रतिभागित (Participated) कार्यक्रम : एक नजर में

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
1.	महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव	13.02.24	**मुख्य अतिथिः-** श्री शलभ माथुर, पुलिस महानिरीक्षक, अलीगढ़ परिक्षेत्र	महाविद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी, चेयरमैन श्री दीपक गोयल, सदस्य सर्वश्री अनिल खण्डेलवाल तथा इंजीनियर इन्द्रेश कौशिक, श्रीमती सुधा कौशिक, डॉ0 गौतम गोयल, श्रीमती रितिका गोयल, मास्टर विवान गोयल, श्री सुरेश गौड़ (सेवा निवृत्त पुलिस उपाधीक्षक) श्री अशोक सिंघल, इं0 गंगा सिंह तथा श्री राजेन्द्र पाल सिंह (राष्ट्रपति पदक प्राप्त सेवानिवृत्त पुलिस निरीक्षक) आदि उपस्थित थे।
2.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में यूनिलीवर इण्डिया एक्सपोर्ट्स लिमिटेड के लिए कैम्पस प्लेसमेंट	16.02.2024	1. श्री रविकान्त वर्मा, कम्पनी के यूनिट एच.आर. मैनेजर। 2. श्री आदित्य शर्मा प्रोडक्शन मैनेजर 3. श्री प्रेमसिंह धांकर यूनिट मेन्टेनेंस एग्जीक्यूटिव 4. श्री हितेश सिंह एच.आर. एग्जीक्यूटिव	लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार में ज्ञान निजी आई.टी.आई. तथा अन्य संस्थाओं के 70 से अधिक छात्रों ने प्रतिभाग किया।
3.	शिक्षक–शिक्षा विभाग द्वारा पाँच दिवसीय स्काउट-गाइड शिविर का आयोजन	20.02.24 से 24.02.24 तक	1. श्री प्रेमपाल सिंह मास्टर ट्रेनर 2. श्रीमती ज्योतिभार्गव, जिला प्रशिक्षण आयुक्त गाइड 3. श्री गौतम सैनी, ट्रेनिंग काउंसलर 4. डॉ0 (श्रीमती) अंजना कुमारी, प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ एवं भारत स्काउट-गाइड की रावर्स/ रेन्जर्स समन्वयक मुख्य अतिथि : (समापन समारोह) प्रोफेसर (डा0) शर्मीला शर्मा , प्राचार्या, टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़	इस शिविर में हमारे महाविद्यालय में बी.एड. तथा डी.एल.एड. में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। शिविर प्रभारी डॉ0 भावना सारस्वत तथा उप-प्रभारी श्री रवि कुमार रहे। महाविद्यालय के चेयरमैन श्री दीपक गोयल समापन समारोह में उपस्थित रहे।

	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
4.	बी.एड. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	27.02.24	–	शैक्षिक भ्रमण हेतु 47 विद्यार्थी तथा 4 प्राध्यापक आगरा गये।
5.	पावना इंडस्ट्रीज अलीगढ़ ने ज्ञान निजी आई.टी.आई. के 12 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया	15.03.24	1. श्री पवन कुमार चतुर्वेदी एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर, पावना ग्रुप 2. श्री विजय चौहान, एच.आर. प्रतिनिधि	कम्पनी के प्रतिनिधियों ने ज्ञान निजी आई.टी.आई. तथा अन्य संस्थानों के 20 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों का साक्षात्कार किया तथा ज्ञान निजी आई.टी.आई. के 12 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया।
6.	तेल व गैस के संरक्षण एवं सुरक्षा पर विचार गोष्ठी का आयोजन	15.03.24	**मुख्य अतिथि** – श्री संदीप पवार, क्षेत्रीय प्रबंधक, भारत पैट्रोलियम लिमिटेड, सलेमपुर **विशिष्ट अतिथि**– श्री सुनिल कुमार मीना प्रबंधक व सुरक्षा अधिकारी **अतिथि** – 1. श्री रविकुमार वरिष्ठ विक्रय अधिकारी 2. श्री आशीष कुलश्रेष्ठ, निदेशक, कृष्णा गायत्री भारत गैस ऐजेन्सी	उपभोक्ता अधिकार दिवस इस गोष्ठी का आयोजन हमारे महाविद्यालय तथा ज्ञान निजी आई.टी.आई. ने किया। महाविद्यालय के चेयरमैन श्री दीपक गोयल पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे। महाविद्यालय तथा ज्ञान निजी आई.टी. आई. के शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने विचार गोष्ठी में प्रतिभाग किया।
7.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में लोधा ब्लाक के 100 विद्यार्थियों ने एक्सपोजर विजिट की	19.03.24	1. श्री दयाल शर्मा ए.आर.पी., अंग्रेजी 2. सुरेश चन्द्र , ए.आर.पी. विज्ञान 3. श्री ब्रज भूषण, ए.आर.पी. गणित	–
8.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में गोंडा ब्लाक के 100 विद्यार्थियों ने एक्सपोजर विजिट की	30.03.24	1. श्री लाल बाबू द्विवेदी खण्ड शिक्षा अधिकारी ब्लॉक–गोंडा 2. श्री सुरेश राकेश नोडल ए.आर.पी. 3. श्री लक्ष्मी राज सिंह 4. श्री दिनेश भाटिया, ए.आर.पी.	–
9.	बी.ए. छठवें सेमेस्टर (अर्थशास्त्र) के विद्यार्थियों को नित्या क्रियेशन इण्डिया, ताला नगरी, अलीगढ़ की विजिट करायी।	01.04.24	1. श्री अब्दुल आसिफ प्रबंधक, नित्या क्रियेशन	विद्यार्थियों ने अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में निर्देशित शोध पत्र में लिखने के लिए जानकारी एकत्र की।

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
10.	दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन	05.04.24 से 06.04.24	1. प्रोफेसर (डॉ0) जयप्रकाश सिंह, डॉ0 आशुतोष तिवारी एवं डॉ. सुरेन्द्र पाल सिंह धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ 2. डॉ0 कविता वर्मा, प्राचार्या, शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय जी.एल.ए. वि.वि., मथुरा	हमारे महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षा विभाग ने "Test Construction in students evaluation system" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। अलीगढ़ के अनेक महाविद्यालयों के शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।
11.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में आयोजित कैम्पस प्लेसमेंट में 14 छात्रों का चयन	09.05.24	श्री संजय रावत न्यू एलन बैरी वर्क्स लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा) प्लांट हेतु कैम्पस प्लेसमेंट सर्विस प्रदाता कम्पनी दी प्लेसर के एच.आर. प्रतिनिधि	कैम्पस प्लेसमेंट के साक्षात्कार में अनेक संस्थानों के 40 से अधिक अभ्यर्थियों ने भाग लिया, इनमें से 14 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। चयनित अभ्यर्थियों में ज्ञान निजी आई.टी.आई. के 04 तथा ज्ञानदीप आई.टी.आई. रूहेरी हाथरस का 01 अभ्यर्थी है।
12.	श्री राम पिस्टन एण्ड रिंग्स लिमिटेड द्वारा ज्ञान निजी आई.टी.आई. में कैम्पस प्लेसमेंट का आयोजन	11.06.24	1. श्री शिवम कुमार, एच.आर. एग्जीक्यूटिव, श्री राम पिस्टन एण्ड रिंग्स लिमिटेड 2. श्री देवेन्द्र पाल, एग्जीक्यूटिव मैनेजर, प्रोडक्शन श्री राम पिस्टन एण्ड रिंग्स लिमिटेड	इस आयोजन में कम्पनी प्रतिनिधियों ने ज्ञान निजी आई.टी.आई. के 07 तथा ज्ञानदीप आई.टी.आई. के 01 प्रशिक्षणार्थी का चयन किया।
13.	विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन	05.06.24	–	हमारे महाविद्यालय के डी.एल.एड. के प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों ने मंदिर का नगला और पड़ियावली में विश्व पर्यावरण दिवस पर जन चेतना रैली का आयोजन किया।
14.	"एक पौधा माँ के नाम" पौधारोपण अभियान का शुभारंभ	06.07.24	–	महाविद्यालय के प्रबंधक श्री मनोज यादव तथा प्राचार्य डॉ0 वाई.के. गुप्ता ने परिसर में पौधारोपण कर अभियान का श्री गणेश किया।
15.	विद्यार्थियों को टेबलेट दी गयीं	18.07.24	**मुख्य अतिथि–** श्री अखिलेश कुमार यादव अपर जिला अधिकारी, (न्यायिक) अलीगढ़	महाविद्यालय के एम.कॉम. तथा एम.एस-सी. के विद्यार्थियों को उ.प्र. की महत्त्वाकांक्षी स्वामी विवेकानन्द डी.जी. शक्ति योजना के अन्तर्गत टेबलेट दी गयीं।

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
			विशिष्ट अतिथि- श्री सतीश शर्मा नगर शिक्षा अधिकारी, अलीगढ़	महाविद्यालय के चेयरमैन श्री दीपक गोयल तथा प्रबंधक मनोज यादव भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
16.	कारगिल 'विजय दिवस' पर शहीदों को श्रद्धांजलि	26.07.24	-	विजय दिवस की 25वीं बरसी पर महाविद्यालय परिसर में शहीदों को श्रद्धांजलि दी गयी।
17.	स्वतंत्रता दिवस समारोह	15.08.24	**मुख्य अतिथि** डॉ0 पंकज कुमार पूर्व प्राचार्य, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़	मुख्य अतिथि ने महाविद्यालय के प्रबंधक, शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया। ज्ञान निजी आई.टी.आई. के प्रधानाचार्य तथा अनुदेशक आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
18.	नवप्रवेशित विद्यार्थियों हेतु इंडक्शन कार्यक्रम का आयोजन	03.09.24	**मुख्य अतिथि-** श्रीमती रितिका गोयल, निदेशिका ज्ञान महाविद्यालय **विशिष्ट अतिथि-** डॉ0 गौतम गोयल, निदेशक ज्ञान ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स	विद्यार्थियों को उनके पाठ्यक्रम तथा महाविद्यालय के बारे में पूरी जानकारी दी गयी।
19.	शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन	05.09.24	-	महाविद्यालय के प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।
20.	संस्थापक दिवस समारोह	11.09.24	**मुख्य अतिथि-** प्रोफेसर (डॉ.) जय प्रकाश सिंह पूर्व डीन एवं संयोजक शिक्षा संकाय राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़	डॉ. गौतम गोयल, श्रीमती रितिका गोयल, मास्टर नेवान गोयल, महाविद्यालय के कोषाध्यक्ष असलूब अहमद, प्रबंधक श्री मनोज यादव, मुख्य अधिशासी अधिकारी श्री नरेन्द्र गौतम, पूर्व उप-प्राचार्य एवं राष्ट्रपति पदक से सम्मानित उ.प्र. पुलिस के पूर्व निरीक्षक, श्री राजेन्द्र पाल सिंह, ज्ञान निजी आई.टी.आई. तथा ज्ञान दीप आई.टी.आई. के प्रधानाचार्य क्रमश: श्री गौरव यादव तथा ओमपाल गौतम, शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्ति समारोह में उपस्थित रहे।

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
21.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में विश्वकर्मा पूजन	17.09.24	–	महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता, ज्ञान निजी आई.टी.आई. के प्रधानाचार्य, अनुदेशक तथा विद्यार्थी आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
22.	गांधीजी के स्वदेशी व पर्यावरण संदेश पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन	01.10.24	–	इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के 164 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।
23.	नवरात्रि के उपलक्ष्य में डांडिया का आयोजन	10.10.24	–	महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति ने कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में आध्यात्मिकता का विकास करना तथा उन्हें भारतीय संस्कृति से अवगत कराना था।
24.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में जियो कम्पनी द्वारा JCFT ऑनलाइन वर्कशॉप का आयोजन	22.10.24	1. श्री मोहित शर्मा (एच.आर.) जियो इंडिया लिमिटेड 2. श्री जितेन्द्र कुमार (डी.आर.एस.) जियो इंडिया लिमिटेड	इस कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन अलीगढ़ क्षेत्र के लिए जियो एअर फाइवर तकनीशियन हेतु किया गया।
25.	वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन	23.10.24	1. श्री दीपक गोयल, चेयरमैन ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ 2. डॉ. (इं) गौतम गोयल, निदेशक ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़	प्रतियोगिता का आयोजन हमारे महाविद्यालय की साहित्यिक समिति ने किया।
26.	राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन	14.09.24	**उपस्थित कविगण–** 1. श्री के.के. अग्निहोत्री 2. श्री मोहन मुन्तजिर 3. श्री गौरव चौहान 4. डॉ0 अरुण उपाध्याय 5. डॉ0 लक्ष्मण नेपाली 6. डॉ0 विजेन्द्र ठाकुर 7. डॉ0 ईशान देव 8. श्रीमती नेहा शर्मा 9. डॉ0 प्रतिभामाही	महाविद्यालय के चेयरमैन श्री दीपक गोयल, सारथी परिवार के श्री मफतलाल, स्थानीय धर्म समाज महाविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर जय प्रकाश सिंह तथा हमारे महाविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक डॉ0 सुरेन्द्र सिंह यादव, डॉ0 अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, श्री राजेन्द्र पाल सिंह एवं डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार अस्थाना भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
27.	ज्ञान ज्योति कार्यक्रम	25.10.24	**मुख्य अतिथि** श्री मनोज यादव, प्रबंधक ज्ञान महाविद्यालय	महाविद्यालय द्वारा गोद लिए 14 गाँवों के विद्यार्थियों को उनके गाँव के जरूरतमंद व्यक्तियों के घर तथा सरकारी भवनों पर

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
				दीवाली के अवसर पर रोशनी करने हेतु तेल, बाती तथा मिट्टी के दिये दिये गये।
28.	ज्ञान निजी आई.टी.आई. में कौशल दीक्षान्त समारोह	26.10.24	**मुख्य अतिथि–** डॉ0 वाई.के. गुप्ता, प्राचार्य ज्ञान महविद्यालय	इस समारोह में ज्ञान निजी आई.टी.आई. के सत्र 2022–24 के इलैक्ट्रीशियन व फिटर व्यवसाय से उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र दिये गये।
29.	छात्रा को सिलाई मशीन भेंट की	21.11.24	**मुख्य अतिथि–** श्री दीपक गोयल, चेयरमैन ज्ञान महाविद्यालय **विशिष्ट अतिथि** डॉ0 (इं0) गौतम गोयल, निदेशक ज्ञान ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स	स्वराज्य स्वावलम्बी योजना के अन्तर्गत बढ़ौली फतेहखाँ की छात्रा को सिलाई मशीन भेंट की।
30.	आई.जी.एस.आई. का कार्यक्रम	22.11.24	**मुख्य अतिथि** डॉ0 मनिन्दर कौर द्विवेदी अपर सचिव कृषि और किसान कल्याण, भारत सरकार	कार्यक्रम का आयोजन सिविल सर्विसेज आफीसर्स इंस्टीट्यूट, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली में किया गया। आई.जी.एस. आई. के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 योगेन्द्र नारायण ने भी सभा को संबोधित किया।
31.	संविधान दिवस पर उद्देशिका वाचन के साथ शपथ दिलाई	26.11.24	–	महाविद्यालय परिसर में विद्यार्थी तथा शिक्षकों को शपथ दिलायी।
32.	ज्ञानदीप आई.टी.आई. में टेबलेट वितरण तथा कवि सम्मेलन	29.11.24	**मुख्य अतिथि** श्रीमती श्वेता चौधरी, अध्यक्षा नगर पालिका परिषद्, हाथरस	दीप आई.टी.आई., रुहेरी, हाथरस के विद्यार्थियों को टेबलेट दी गयी।
33.	पहल कार्यक्रम में जरूरतमंदों को कपड़े बाँटे गये	03.12.24	–	महाविद्यालय के निकटवर्ती ईंट, भट्टों पर काम करने बाले मजदूरों के परिवारों को शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों द्वारा एकत्र कपड़े बाँटे गये।
34.	अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस तथा रोजगार परामर्श पर संगोष्ठी	10.12.24	**मुख्य अतिथि** डॉ0 गिर्राज किशोर, पूर्व डीन, शिक्षा संकाय, बी.आर. आम्बेडकर वि.वि., आगरा। **विशिष्ट अतिथि–** श्री देव प्रकाश गुप्ता, पूर्व जिला सेवायोजन अधिकारी	महाविद्यालय तथा ज्ञान निजी आई.टी. आई. के विद्यार्थियों ने संगोष्ठी में प्रतिभाग किया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभाग करने वाले अतिथि	विशेष विवरण
35.	पुरातन विद्यार्थी संवाद एवं सम्मान समारोह	16.12.24	**मुख्य अतिथि** डॉ0 इंदू सिंह, प्रधानाचार्या टीकाराम कन्या इण्टर कॉलेज, अलीगढ़	ज्ञान ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के निदेशक डॉ0 (इं.) गौतम गोयल, ज्ञान महाविद्यालय की निदेशिका श्रीमती रितिका गोयल पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। 62 पुरातन विद्यार्थी भी उपस्थित थे।
36.	प्रकृति परीक्षण शिविर का आयोजन	19.12.24	**मुख्य अतिथि** डॉ0 संजय यादव, संकाय सदस्य साईं आयुर्वेदिक मैडीकल कॉलेज, अलीगढ़	हमारे महाविद्यालय के 100 से अधिक विद्यार्थियों का प्रकृति परीक्षण साई आयुर्वेदिक मैडीकल कॉलेज के विद्यार्थियों ने किया।
37.	मुख्यमंत्री युवा उद्यमी मण्डलीय कार्यशाला का आयोजन	20.12.24	**मुख्य अतिथि** श्री वीरेन्द्र कुमार संयुक्त आयुक्त उद्योग, अलीगढ़ मण्डल **विशिष्ट अतिथि** 1. श्री ब्रजेश यादव जिला उद्योग केन्द्र, अलीगढ़ 2. श्री अजलेश कुमार उपायुक्त उद्योग, हाथरस श्री अनिल कुमार शर्मा सहायक आयुक्त उद्योग, एटा 4. श्री जे.वी. थामस एल.डी.एम., हाथरस 5. श्री पीतम सिंह, एल.डी.एम., एटा 6. श्री मनीष, एल.डी.एम., अलीगढ़ 7. श्री अशोक सिंह मण्डलीय ग्रामोद्योग, अधिकारी 8. जिला ग्रामोद्योग अधिकारी, एटा	ज्ञान निजी आई.टी.आई. के निदेशक डॉ0 (इं0) गौतम गोयल पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे। हमारे महाविद्यालय तथा ज्ञान निजी आई.टी.आई. के प्राध्यापक और विद्यार्थी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। तीन सौ से अधिक व्यक्तियों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।
38.	महाविद्यालय एवं ज्ञान निजी आई.टी.आई. के विद्यार्थियों को टेबलेट तथा स्मार्ट फोन वितरण एवं सहभोज कार्यक्रम	01.01.2025	**मुख्य अतिथि** श्री अनिल पाराशर, विधायक, कोल अलीगढ़ **विशिष्ट अतिथि** श्री दीपक गोयल, चेयरमैन, ज्ञान महाविद्यालय	ज्ञान महाविद्यालय एवं ज्ञान निजी आई.टी.आई. के विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद डी.जी. शक्ति योजना के अन्तर्गत टेबलेट तथा स्मार्ट दिए गए।
39.	एन.एन.एस. के स्वेच्छा सेवियों ने स्वामी विवेकानंद को याद किया	11.01.2025	**मुख्य अतिथि :** मनोज यादव, प्रबन्धक ज्ञान महाविद्यालय	स्वामी विवेकानंद जयंती का आयोजन किया गया।
40.	मकर संक्रांति पर महाकुम्भ अमृत स्नान के उपलक्ष्य में खिचड़ी दान का आयोजन	13.01.2025	–	अलीगढ़ जिला स्थित केशव धाम के बच्चों के लिए खिचड़ी दान की गयी।
41.	गणतंत्र दिवस समारोह	26.01.2025	–	महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री मनोज यादव ने महाविद्यालय तथा सहयोगी संस्थान ज्ञान निजी आई.टी.आई. के शिक्षक-शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्ति तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति में ध्वज फहराया।

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

वसुधैव कुटुम्बकम्
पूरा विश्व एक परिवार है

विभिन्न प्रायोगिक गतिविधियाँ

भूगोल विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

गृहविज्ञान विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

मनोविज्ञान विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

भौतिक विज्ञान विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

जन्तु विज्ञान विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

रसायन विज्ञान विभाग की प्रायोगिक गतिविधि

ज्ञान भवन में लिंग्वाफोन कक्ष

ज्ञान भवन में आई.सी.टी. कम्प्यूटर कक्ष

ज्ञान भवन में संगीत कक्ष

वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि आई.जी. श्री शलभ माथुर (आई.पी.एस.) को प्रतीक चिह्न प्रदान करतीं हुईं अध्यक्षा व सचिव

स्वराज्य स्वावलंबी योजना के अंतर्गत छात्रा को उसके विवाह के अवसर पर सिलाई मशीन भेंट करते हुए सचिव, प्राचार्य व अन्य

सांस्कृतिक प्रस्तुति

महाविद्यालय के बी.कॉम के पूर्व छात्र श्री अंश महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल एवं कुलपति प्रो. चन्द्रशेखर से स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए

श्री अनिल पाराशर, कोल विधायक (अलीगढ़) द्वारा टैबलेट/स्मार्टफोन वितरण

+91 9219419405 gyanmv@gmail.com

www.gyanmahavidhyalaya.com gyanparivar

VP&S # 9758286283